

हास्त्री रामचञ्च दीनानाथ तथा आवक कचरानाइ गोपालदास आ ग्रथ मने १७६७ मा २५ मा खानट ममाणे रजिष्टर कराज्यो हे ता १७-११-१०एण सबत १ए४७ ना कार्तिक श्रुदि ५ • युनियम्" मिटिंग मैसमा शा घलाजाइ नरास श्रा वराग्यरताकर भाग १ किम्मत् रु १ (एक रुपियो) ज्यादी प्रसिद्ध मत्त्वार

X-16-16-16-16-16-16-16-16-16-16-16-16-16-	gentlente blevet	<u></u>	إسرائد مأود مواد سأوندما إدسارة	<i>ት</i> ትሎ ትሎ ትሎ ት	~ !*****
			to ~	ਰਿ ਹ	
		कें की		ण ख	D 0
		कि वा	० य	h n	E/V
`		香香	ro ~o		D 9
= : ::		क्र स्	W V	র ন	ww
क्को.		(1)	॰ রা	# #	ゴゴ
ाती		本有		उ रा	∞ >
मूजराती	-	b/ 13	চ দ	कि उ	mr og
अने	कि कि क	इ ह	B ar	D) 10°	
ब्री	=	চি ক	ಣ ವಾ	ਰ ਹ	~ ~
श्राहि		1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1			== क्य की
标		FF #	'ন বা	tr	
॥ अथ		मि ल	协动,	क्र ज	क जी
=		क या	क्र ज	10° w	ho v
		व्य भा	त न	त व	फ स
		र्हे स	द ख	र ज	क व
		क्र क	ि क	E 1	ক কা

y + 24 1 4 4 4	*. \$ \$ \$ 5.5	A 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18 18	** ***	1 巻がかいでは
	# # % ⊞	## ## =	to to	Ko Er
	100 m	F 3	कि सुन्	is E
क इ. च	יס מו	হ হ	10 Kg	HD 臣
ल स	holov Ix	स्म ५५ ६५	ত্ম তথ তথ	म स
का हो	त्र श्र	* *	भू भू	相相
ल स	प्रश्नका कश	হ র	ত্র ত্র	
15 1-10	ज्ञम् १३४	五五	'ভা 'মা	म्र स
48 120		र्य इब	15° 15'	프
1 5 6 206	द्ध वा द्रिषा	品が	ण्च ण्हा भी ज्वा	क्त् कृतम्
₩ -m	fing (-,,	इ द	ण्या प्ल	를 의
क्ष की	क्र च	স সা ডেঅ	ধা પો અપ્વ	H F
क्ति क	ह इ	hor w	स्य ध्व	भ भ स्त ^{्र}
क्र स	हूँ ख	ಗಾ ಪ್ರ	গা গ্রা	1€ 1€.

<u>የተትድጅጅም ሊጽጽ</u>ች "ድድድ ሊያትም ለተቋች እንግ ለተቋቋ ተቋቋ ለ

| € 30

भें तार व्यं भ प्रा सभ

recent rate	ا مالاسال المالاسال المالاد والاسال المالاد والاسال المالاد المالاد المالاد والاسال المالاد والاسال المالاد وال	ta akabahayaya	ૡૢ૱ૢઌ૱ૣ૽ૺૢ૱૱૱ૢૺઌ૱ૢૺઌ૱ૺૢઌ૱ૺૺૢઌ૱ૺૺૢઌ ઌ૽૽ૢ૽ૺ૱૱ઌ૽૽૽૽ૢ૽ઌ૽૽ૹ૽ૺઌ૱ૺૺૢઌ૽૽ઌ૽ૺૺૢઌ૽૽ઌ૽ૺૺૢઌ૽૽ઌ૽ૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺૺ	<u>**********</u>
4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4		न ध	শ্ব হ্ব	न्त्र हु
ग्य	温息	च च	कि है	ल्य ल्य
五年	्य द्व	= =	कि है	巨、民
च स	可如	ेवी च्या	10< k	म्म भूम
ग्ध	क्षेत्र ।	ानं प्रा	भ्य ख	= =
मू	ूरी दर्भ	`ਜ਼ੋਂ >ਯ ਖ਼ਹ	æ =	to (te
==	_ =	स् संस	hro k	न्न ज
स्य	स छ	in the	म श्र	च = =
= = 	軍軍	न स	==	भाग
देव । कप्त	西南	चं व	₽< \£	मु ७ म
द्भ <u>य</u> नगप	मं ज	न म	फ्य	はくは
10 E	States the state of the state o	= =	==	
श्म	म द	न ज	म ह	्म म्ल ह्य २७१
- हस्त् हस्त	च ज	स्त्र स्त		जी वर्ष
n paragraphi pr	المراجع المنظمة المنظمة المنظمة	<i>{-</i> }-4444	ofortoniant incorporate.	ትሦትጕ፟ቝቝ፞፞፞፞፞ቝ፞፞፞፞፞ቝ
νr				

الاسلامين يستان المالية	253 A 31 A536-	مراجع والمراجع المراجع	Ky 2 , 2 42	Karmanda n. n. n. n. n. n.	
15 ₽	ho to	pa R	म म	म् है	
म ज	র ম	ra< \$\frac{\pi}{\pi}	= =	य स	
स्	# # #	Mer Est	नेत् ।	될 권	
-	च हो	<u>द्व</u> िस	मम	==	
i di		संब	न न	म स	
भ अ	# #	द्धिं स	में पु	ষ ঘ	
##	म छ	N F	##	ጀመ	
द्ध ज	स्र ह	न्त्र ज	न न		
म ज	म द्व	संस	ন কা	₹	
म्रंज	= = :4 x	त सम्प	==	ਰੂ ਕਰ	
ঋ মা		त्र ह दस्र दथ्र	id #	म	
3 34 1	里里	में स्थ	# #	यु ग्र	
= =	E S	tes E	ix iz	चुच स	
13	##	to 5	इ ह	世里	
the total and a service of control of a hitchest by a service service.					

			naga kang pang pang pang pang pang pang pang p	ggerig a protessar com aniquel describitation describes anique de
化心心心心心心态中的	referendent ledge	toleroter to toler	00000000	he er er er
h F	tock!	5 8	HE	pe
i i	general leader sufficient leader	हु ह	FF	tw E
gasters sound gasters gasters	际、民	। अंख	12 E	R F
to to	中国	galland garban galland garban	galleddia - sganed sgyslawa - Starles	to t
व श	I F	is e		b E
tt ţ	य द	ts E	to E	
त्त्र तत्त		•	K E	4 3
य	T F	4	IT E	世代は
西 年	五百	TE	k E	3 3
₩ ^{(°}	Species dead	- #	photologic districts districts districts	z =
18, 15.	莊	""	न ज	
न स	e d	.व ज्ञ	F F	is is
# #	î ë	त्यं भ	F 6	# #
एस ॥ इम ॥	計算		巨馬	श्य द्व
4. 4. 1. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2.	ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค.ส.ค	44.44.44.4	ng grapagang	400 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00
m				A LA CALL & A.
1				

ፉ ምጜጜጜዯኇ •	*******	en erhann	eg # 4543 44	*****
瓦區	चु ख		जोइए	
# 2	म भ		राखी हे	
म म	E E		पैसाज रा	
	म म		cto	
# 54	臣臣	14 F	फ़क्त :	
म जा	H F	he g	किम्मत् फक्त १	Ĭ
= =	正正	he g	मुम्) } *
e e	1000	म ध	ठपान्यो हे १ सेवो	
百年	म्य	he t	ਪੂਜ	
प्रा	मध्य क्र	ᆲ귦	कक्षो जूदो त्याथी मगा	1
<u>त्य</u>	स्त्र	he B	थामानो न । थमारे ख	
a a	m/ H=	= =	(제 제	
pro E	臣用	軍量	नेमछे	
<u> የ</u> ተለው የተለ	- Mary Company	afachra heafac	and - of and	W. French A.W.

प्रतिक जावमां वर्तेंडे, ने असार है. अने आ आखा ग्रंथमां पए तेज बातनो विस्तार वारंवार ज्ञान्यों है. अने आ आखा ग्रंथमां पए तेज बातनो विस्तार वारंवार ज्ञान्यों है. अने सार है कि विशेष के विशेष करना योग्य एता वेराग्य हैं विशेष हैं आ सर्व ससार असारज हे. अयोत् सार बस्तुनी अपेद्धापेज यसार नहाने हे. असार बस्न ने भी भे १ ५ मी मार बस्तुनी अपेद्धापेज यसार नहाने हे. गी है। ते बुष्टिमान पुरुपे तो अवश्य जाएावी जोहए. ते हं के, जे आत्मजावने विषे वर्तेतुं, तेज सार हे. अने जे परजाव भीवलन योडामां जाएवा योग्य तो, एटलुज ने से, ने जान्यान प्रतिनिक जानमां ज्यार तो, एटलुज ने से, ने जान्य , तेम तेम नेमी हता वथारे या सर्व गंयनो अभिमाय गंथकारे पोतेन, संसार्म असार्" सार मच्च ने भी छे ?

जेम आत्मस्यानी समीरे

जरुष्, तेम तेम वथारे मुख्यांति जलाय अने जेम जेम तेथी (आत्मगुण्यी) छेदु यवाय, ष्टले परजा-क्टते भी भी पदी या याद्यन यामाश है, एम समने हे जम मगतर, चरतल, समली, यनल पदी, यदापद तेम अनुमक्ष जीगोभी पण आत्पाना आत्पाना झानादिक गुणांत्र छे एम त्यारे ते दूरी रुद्देशु सम्यु धन मूर्यु कांड् कवण नथी? माटे जिंतामणि रत्न समान तो आत्यागुण ने आत्याणुण मकट कत्याने नाटेन सर्च किया अनुष्ठान करती पडे हे ते पण् आत्महान पूरेक तिथि सिह जाहवों कठए नथी सेमज रत्न मले, त्यारे र जेम ज पसी, पाताना यताबे जेग्ला याकावमा छडी ाक्ष्या सहाग्रान करा। पढ ड ते पए। आत्महान पूरेक गिथि ते आत्ममुणीनो छत कोइथी कही शकाय तेम नथी। जेम धने गरु पद्दी ए मर्चे पद्दी तहें गाय है, बड़ पीत पोवानी पाखना थहा ममाणे : (त्न यांद्रा मत्या नयी तेमज निंतामां तेमज हरियों मत, पेसाय, तेम तैम वयारे अशाति थाय, माटे आत्म गुण तो अवश्य मकट करना जोइप क्ठण नथी गर है, परतु हे समन पण, याकाश थपारने अपार रहे हे गुणानो पार पापी शक्तातो नथी माटे सवापारे मारक्ष त्यारे रापयो र जोडरी कजल नथी लेमज पार्श्वमिए मत्त, स्पारे कर, त्यारेत्र ज्ञात्मगुष्ण प्रतर थाप ने काशनों अत कीड़ पक्षियी पासी न्डल नथी 法大在本法证法 4年 在治在我心会在本者是,大人也不可以不会不是不不不下了一个人。

马语

तथा जपाथि तेषे करीने जा समार

तेमां मधम पगतुं बल वरोवर जोहए; केम के, पगविना चाली शकातु नथी. एडलाज माटे वैराग्यनुं वल हढ शिलाने परस्पर संवंघ रहेलों हे. एटले मोक्समां जनार पुरुषने पूर्वोक्त त्रणें पदावीं नुं सपूर्ण बल जोड़प. परंतु गनीने करे हे, एउंने मनावा पूजावादिकनी लालचे करे हे. माटे ते आत्मगुण शी रीते प्रकट थाप रे परंहु ते प्रात्मगुणो तो,क्यारे प्रकट थाप रे के,ज्यारे आ संतारने विपे देहादिक सर्व पदार्थने असारक्ष जाणे त्यारेज प्रात्मगुण प्रकट थाय हे. अथति वैराज्य पाम्या विना आत्मगुण पकट थायज नहीं. माटे मोक्त मार्गमां चा-गियप्सा ते आत्मगुष् पकट कर्यानो ज्यम विलकुल करतो नथी. ने कदापि करे छे, तो देहने पीतानुं रूप लनार पुरुषने तो, नैराज्य पगने ठेकाएँ। छ, झान बद्यने ठेकाएँ। डे,अने धर्म माथाने ठेकाएँ। डे.तीयपए ।

नोइए, ते वैराण्यने जागृत करनार एवो आ वैराग्यशतक नामनो भ्रंथ भ्रथम स्थापन करयो छे. कि वहुना.

॥ श्री रंनामंजरी नाटिका. जेनी. ॥

(श्री नयचंद्यम् रिकत.

विद्यानोंने ययक्य यांचवा योग्य हे. किम्मत मात्र ६०--६-० हे. जोइए तेमणे बाखी रांमचंद्र दीनानाथने मूल मागथी अने टीका संस्कृत नापामां डे. अने तेमां आला ग्रंथना मागथी शब्दानो कीश डे. आ ग्रंथ

चांत्री मंगाबी लंबो.

पणा छापूर्वं ययोतो नवो वालावत्रोष्पास्य करी प्रसिद्ध करवामा आवशे तेनी किम्मत् पण, झा गमने चरित्र इत्पादिकना बाताववीप महल करपानी हुने, पांतानु नाम, स्थान, जाखनु -चलीं ोा बण्डाघय मगापनारे टपाल खरचना रु ०-१-७ साये नेप्रापवामां झावहे वली झा मयना बोजा नागोमा पछ ्राररोयल वीश फारमनो प्रथम नाग,झाखर सूर्यामा पए, ग्यतक, इष्टोपवेश, सङ्गनिचित्तयहान्न, प्रशमरति यिगेरे जा मधनु पाचरों माहको थचायी सत्य थरो, माटे माहकोए ारा मयो आवशे जेवा के, वैराग्य प्रत्मता, ख्रष्पारम कप्रकास,तया त्रेशवराता प्राप्ता पण्ण यत्ती,जो याहकोनी मस्जी वीजा यथोना एडले ध से त्रेम गण्ण स्टिन्स स्टिन्स स्टिन्स स्टिन्स जन्म टीयामा ध्यावशे अने सामटी १०० ध्युने तेथी ह <चाय, ब्रह्मी स्नाग्रथनी १ थी एए नक्षत्र राखनार गीता, समक्तिस्रोमुद्गे, इष्टियपराजस्मार ययनी किम्मत् मोकली झापबी नाहे नि शास्त्री रामचञ्ज् दीनानाथ रराग्य तथा अध्यातमनीज बुधि हरन ब्रेकनी एक रापेया प्रमाणे किम्मत तो तेम पण यइ शकशे परत ते र गसनारने,शॅकडे दश नक्तल वधारे एक रुपियाथी जेग्री किम्मते नहि

વેનુ ગુવરગાની ભાષાતર અમે કશું છે તેમાં મિલસન િવાકર્મે વિક્રમશત્રનો, પાદિભાગાનના સિખ નામાનીને શાળિવાદનગળતે, ગાગનાચાર્વના ગાઇ ધનપાવે શાન્યસન્ત, ધુમાગાર્ય કુમાગ્રમાજગાનને જેની કર્યા તેમે મિલ્ગ્નર છ િલામ, તથા વનર-જ્યા માદીને વરતુપાસ તેમપાસ અમા ન્-ભાવના રાખચોની ચનુકમે ધનિવાસ તથા માં પદામ પ્ હિતને બાજગંગની આપે થયે ક્ષે ગિક મ પાદ, તથા મહા. ર્તિ કાળિકા અને મા ૧૫ કિન વિગેરેના જન્મ ચરિંગ, આખાં यामाध, गेवाना मापेना स्विभाषमा वसे छ है, भा રાજસ્પાન તમા શર્ચમ સાફેએ સમ્તમાની અમુ પણ કો ઉત્તમ અભિપામી મુલા છે ઉત્તમ અભિપામી મુલા છે ^{મા}ીલ છે. ^{તમા} મેમના માનમાં કેનીપુર કલપતામ કા ॥ औं त्रवन्धिचन्तामणिः॥ हेरा मेंग्रेन रेश्न सित-ध्यातिस् तेष्मे तेम् नीमेन मेरमाभेषा भगाति तु. ગાર્ગી. સમયત્ર દીનાનાય. માંકડીગેરી અલિનોપાલ. કરો, વાલ જ્યાંત માં માં મુત્ર કરીત ઉલ્લંગ્ કરો, વાલ જ્યાંત મુખે ખાલ થયા કરે કરવાને તથા દરેક જેન્સ્કેરીમાં મુધ્ય વચાને માટે છપાલી કિમ્મતમાં ઘણું ભાષા મુધ્ય થયાને માટે છપાલી પ્રસિલ્દ કરવાના માર્ગણ મા મથમાં ઘણ સિલાંતામાંથી, છમ વિચાર પ્રમુખ પ્રકર્ણામાંથી, અને લાંક જ (૩૨૦) પ્રથમ ધનાવવામાં આવશે. પૂર્ક પૂર્વ પાસેથી રેખ ર ૦-૦ લેવામાં આવક થતાર માને પાછત્રથી તો, મામાગું મરૂછ મુજૂન ॥ औं जैन बोलविचार संग्रह्॥ કરમાં છે. તેની કિચિત દિશામાત્ર ફેપ્પાર્^{ના} માટે, આ મથતે અતે તે ખાલ દાખલ કુર્યા છે.આં મ થ,મા નાહેર પાખર જેવા રાઈપ ગ हें कि हैं। हिंदीका कि कि कि લેવામાં આવશે, માલક થનારે નીચેના (કા. રનામે પત્ર લખવેંં શાસી, સમયદ્ધ દીના. નાય, માંકડાયેશ જાવનીષાળ,

अमहावाह.

॥ ध्रै श्री बीतरागाय नम ॥ ॥ श्री चेर्राग्यरताकर ॥

मान १ जो मान १ जो ज्यान १ जो जान १ जान भी जान भी

¥ 555 45

マヤンマン

राग्य दशानेज गुष्ट करनार प्रयोनी समानेश करनामां आवदो तेया था प्रथम जागमां श्री पूर्वा नार्यं महारा-आ थेराम रत्नाकरक मामना प्रथना यथा नाम, छचनम मलवाभी मक्ट थनाना छै तथा पाये करीने पुरीनांगी छस्तार करीने वैराग्यशतक नामनो ग्रय रच्यो हे अन तेनी रीरिंग सवत रहधछ ना वृषंग्रा खरतर

नेराग्यशतकस्यास्य १ नापा टीकानुसारिषी ॥१॥

ाडीप श्री निनग्रह्यारिना राज्यमां यष्टना श्री गुण्यिनयनामा स्ना गर्वे करी डे तेनो जावार्ष छेड़ने आ ॥तावसीप करणे डे जने प्वीज रीवना ग्रथी पण् बीजा जानोमां जावजे पटलाज माटे आ प्रथनु नाम श्री बेराग्य रत्नाकर राखरामां आब्यु ने

क्ष वैराग्यने महाविनार मधाना मधुष्ट

```
310
   ॥ आयोरनम्॥
```

जिएदेसियं थम्मं ॥ १॥ नं ि सहं वाहिवेत्रणापनरे ॥ जाएंतो इह जीवो । न कृषाइ संसार्मि असारे

अर्थ−(असार के₀) साररहित एवो, अने (वाहि के₀) व्याथि. एटले शरीर संबंधि डःख,

(वेञ्चणा के॰) वेदना, एटले मन संबंधि डि:ख. तेषो करीने (पछरे के॰) प्रचुर. एटले वहुल अथवा नरेलो एवो, (इह के॰) था (संसारीमे के॰) संसारने विषे (सुहं के॰) सुख जे ने (निध के॰) नथी. (जाणंतो के॰) ए प्रकारे जाणतो एवो (जीवो के॰) जीव जे ते (जिण-के,एटले आ असार संसारमां कांड़ पण सुख नयी. एनी रीते थ्या जीव जाणे हे, देखे हे,थने जावाय-अनेक प्रकारना आधि, ज्यापि, अने छपापि तेले करीने आ संसार नरेलो (पम्मं के) थर्मने (नक्षाइके) नयी करतो! ॥१॥ के0) जिनराजना प्ररूपेला।

श्रनुनव है; तोयपए। ज्या मूढ जीन! जिन परमारमाना कहेला धर्मने केम नथी करतो !!

आ प्रथम नाथामा एम कह्य के, आ जीव ससारतु असारपणु जाऐ हे, तोषपण श्री तिनप्रणीत धर्मने नपी करतो, एतु कह्यु परतु खानी तम्मरवाला अने तेज नवने विषे । माता पितानी आज्ञा लेइ जेणे बाल्यावस्थामा वीद्या थागीकार करी एवा श्री मतिमुक्त कुमारमु रुचात श्री खतगढदशाग खने नगवत्यादि सूजने खतुसारे नीचे प्रमाणे जाण्यु मोक्न जनारा छाने श्री वीरमगवाननी देशमा फकत् एकजवार सानतवाथी इढ वैराग्यवात् पएला, एटबुज नही पख ते ससारना झसारपणा सबयी मातापिता साथे प्रखुचर करी, ठेवटे

कथा

ते वे ज्यानो आतिमुक्क एवे नामे पुत्र हतो ⊦ते पुत्र बहु जवामे करीने महोटो पयो, ड्यनु-क्रमे करीने ठ वर्षनो घयो, ते ध्ववसरे नगरने बहार श्री वीरस्वामी समोसस्या एटले पथास्या , त्यार पठी झानवत एवा गोतम गण्यपर,श्री वीरस्वामीने प्रजीने चिद्धा होवाने झर्षे नगर मध्ये झाच्या, ते खवसरे ठोकराठनी सगापे रमतो एगे झतिमुक्तक कुमार,गोतमस्प्रामीने हेस्बीने ए प्रकारे प्रठतो हवो के, तमे कोण ठो १ झते केम फरो ठो १ एम पूठे सते गोतमस्वा-पोलासपुर नगरने विये विजय नामे राजा, तेनी श्री नामनी पहरेवी एटाते पटराणी

आवो, हुँ तमने निक्ता अपार्डे. एम कहीने ते कुमार गीतमस्वामीनी आंगलीए बलगीने पोताने घेर लाब्यो. ते अवसरे अहिंबी घली खुशी थइ सती नाकिये करीने गीतमस्वामीने जीए. एवं कहां, ते अवसरे ते कुमर बोल्यो. हे स्वामिन्! तमारी साथे श्री वीरस्वामीने वं. क्षें हन करवा माटे हुं आवं? त्यार पनी भीतमस्वामी कहेता हवा. यथासुखं देवानुश्रिय एटले हैं हे देवतानेने वहान! जेम तने सुख उपजे तेम. त्यार पनी गौतमस्वामीनी साथे आवीने. नमस्कार करीने प्रतिलानती हवी. एटले आहार पाणी आप्यो. त्यार पनी आतिमुक्तक हैं हुमार फरीने ए प्रकारे पूनतो हवो. के, तमे क्यां रहो ठो? त्यार पनी भीतमस्वामी कहेता है हवा. हे जड़! जे डबानमां अमारा धर्माचार्य थी बर्डमानस्वामी वसे हे त्यां अमे वसीए अतिमुक्तक कुमार जगवंतने वंदन करतो हवो. त्यार पठी नगवंते धर्मनो जपदेश दीधो, ते श्वम जपदेश सांजानि अतिबोध पाम्यो एवो अतिमुक्तक कुमार, दीह्या ग्रहण करवाने इन्हें सतो मातापितानी भनुङ्गा नेवाने अथे घेर आवीने माता पिताने ए प्रकारे कहेतो ह हैं अंब! है तात! में खाज शी वीरस्वामीजीनी पाते धर्म सांजल्यो. ते धर्म, मने र प्रटित ते धर्म करवानो मने अभिजाप धयो हे ते श्रवसरे ते मातापिता कहेता है वा है का पूर है युप्त ने जेपी कर्म है पूर है युप्त ने जेपी कर्म है कारपा माटे ते कर्म एवं हु धवो हु धवो ह कर्म है करापा माटे ते कर्म है वीरस्वामीजीनी समीरे धमें साजवाप, अने वाती है धवे, तने रूप्त, ते रूप्त, ते करापा माटे लार क्षित कर्म हे सात है है अप है सात है है धवे साजवापिक कर्म है सात है है सात है है अप करवाप हो है है कर्म होता है है स्पर्म साजवापिक कर्म है ते सहारता नये करीने छित्र एटले छपराठा मनवादी एवं। अने जनममरप्रजा नय करीने छित्र एटले छपराठा मनवादी एवं। अनु करामे एटले रजाए करी- कर्म ने भी वीरमस्ति। एती येपेल महण्ण महण्ण करवाने इन्सर, एवं कर्म त्यार पठी ते क्रमार प्रिय ए.र. थाने प्रथम कोई दहाढों न साप्रजेखे ए.र. ते कुमारतु बचन साप्तद्वीने तस्काल शोकना समूह प्रत्ये पामी एटजे शोकातुर पर्इ अने दीन अने बदास एवा. मने करीने, साहित ठे मुख ते जेतु एगी पर्इ सती, मूद्यों पामीने अगणततने विषे एटजे घरना आग-खामा धततों सर्गे खगोए करीने पढी ते अवसरे दासीडिए शीप्र, सोनानो कलश जावीने ने औ वीरमजुजीनी समीपे प्रजया ग्रहण करवाने इज्बुबु, पत्रु कत्यु, त्यार पठी ते कुमार नी माता श्रनिष्ट कहेता पत्नच नही एतु, अने श्रकात कहेता अएएमतु एतु, थने अ

हे अंग! तमारं कहेवुं सत्य हे. परंतु आ मनुष्यनो नव, अनेक जन्म जरा मरणरुष, तथा शरीर अने मन संबंधि आतिशे डःखनुं वेदवुं एटले नोगवबुं ते रूष, छपच्चे करीने परा-मनोक्क, धाने प्रिय कहेतां प्रियकारी एवो, अने आन्तरणना करंिनयां समान, एटले अमू-ल्य रत्न तुल्य एवो, अने हदयने आनंद उत्पन्न करनार एवो, धाने उंवराना फूलनी पेठे इलिन एवो, तुं आमारे हुं. एज कारण माटे कृण मात्र पण तारा विजोगने धुमे सहन करवाने समर्थ नथी. ते कारण माटे हे जात! ज्यां सूधी अमे जीवीए त्यां सूधी नुं घरमां रहे. पठी सुखे करीने प्रबज्या ग्रहण करजे. एटले दीक्ता क्षेजे. त्यार पठी ते कुमार कहेतो हवो. चचल एवा; ते कलश्ना मुख श्रकी, नीकबतुं एवं शीतत अने निर्मेल एवं जल तेनी थारानुए करीने एटले ते पाएति थारानुए करीने शींची, एटले नांटी, अने करयो ने ताहा बायरानो उप-वार ते जेने एवी थड़ सती चेतना पामीने विलाप करती थकी पुत्र प्रत्ये ए प्रकारे कहेती कितां हवी. हे जात! तुं अमारे एकज पुत्र तुं. अने अमने इष्ट कहेतां बझन, अने कांत ब एवो, अने अधुव कहेतां अशायत एवो, अने संध्यासमयनां जलना परपोटा सरखो एवो; ग्रुने 껆

स्वनाव ने जेनो रच्छ पर ह्य नाश पामव्,। एने धर्म खुटेते का ं अधि, ोल एवं अने ग्रने सदी जा_{3,1}पदी त्वार पत्र कारण 1

अने अगुचिना पुर्गलोए

उत्पन्न

ने नेवा

ह्य

पुरुष

पिता प्तरीने

कनक,

ग्रं

तमे शरीरनुं स्वरूप

Sio.

Z . सहरा रूप लावएयादि 部 क्य न याय, एटले खुटी न जाय एखें हे. ते कारण माटे ए प्रकारनुं रत्न, मागि, मोती, गंख प्रवालां, आदि पोताने वर्ष एवं प्रधान डब्य हे. जे मांदधुं थाने चालनारी । दीनाहिकने एटले गरिब लोकोने आपवा प्रमाण हाडे प्रकार नाम

पाताना मनना

चूधी, अतिशे

ड्रब्य सात

माड्यु पण

न्राववा

ड्रब्य ते प्रत्ये

यम आथवंकारी एदा ससार सबधि जोपसुख, जोगवीने कहेतो हवो, हे छाव। हे तात । तमे जे छ्यादिकनु र्या ह बह्यास खाने नित्यास ते जमना, एटले बचात्यास मुरुकुन पढ़रा तथा मनुष्य सवाय कामनाग पण् अठांच एटले अपवित्र एवा, अने ॥१थत एवा, अने वात, पिन, कम, गुक्त कहेता वीर्ष अने गोणित कहेता रुपिर । पुरीय कहेता बिद्या ते, पए इन्य माइ एक जाएनी पासे रहेतु तथी अने अधुव कहेता असाग्यतु है काइ निरतर रहेतु नपी खने प्रथम थायवा पठी जरूर त्यागता योग्य पत्री ख़ा, एटजे बात, पिन, कफ, गुक्र, ᆲ मुक्तवुज पदमे तथा मनुष्य सवाधि कामनोग पए। त्त्री क्षीक्षा क्षेत्र्यो स्यार पत्नी कुमार ब ाजकन्यात्र पराधीने तेमनी सापे ? प्रमनाज्ञ कहता असुष्र ए लह्प कह्य

, फल रूप हे विषाक ते जेमनों, एटले अंते डर्गतिना फलने आपनार एवा ज्ञाणवां. ते शरीर पूर्वे कहेला विशेपणोए करीने सांहेत एटले ते कामनोगोने झुर्थे कोणा पुरुष पोताना जीवितने 1 कामनोग कहेवे करीने तेना आधारनूत

एवां बहु वचनोए करीने ते कुमारने लोनाव-वां, अने संजमना जगने ने पुरुष होय ते नज करे. आ रीते कुमारे छत्तर आप्यो, त्यार पढी ते कुमार-नेमधं प्रवचनं कहेतां वीतरागनुं कहेलुं अने अनुत्तर कहेतां प्रधान

। आज्ञाना पालनार एवाज जांबो जनशासनमा निवाण माया शल्य, अने मुक्तिनो ते प्रवचनमा

कहता

गुष्ट कहेतां दोप रहित हे. अने शल्यकत्तेन

वचनोए करीने आ प्रकारे कहेतां हवां. हे पुत्र!

अनुकृत

नां माता पिता, ए प्रकारे विषयने

करे! एटले ने माह्यो

कारण माटे तेमने

एवा, अने कड्यां

विषयने प्रतिकूल

पती ।

वाने असमर्थ थयां.

ए त्रण शत्यनुं नाश करनारं हे.

कहेलुं प्रवचन हे.

करनार एवं

ड़ःखन

प्वाज

वीतरागनां

कहेतां साचुं ठे.

। शासन ते सत्य हे.

संज्ञांत अथवा

करवानु वे, श्रुषक्य ने प्टले क्षे त्रद्र ं साहत वस्तु, <u>چ</u> बसारं चाववानी र वाने न कल्पे 5 मशक कहता शांत कहंता तहाद अने ३ । सुखमा छत्पन्न थएल। सहन करवाने यम करीने रहित थाय ठे परतु था। प्रवचन जोहान। छत्रे वेलुना कीलियानी पेंठे स्वादें करीने रहित ठे गस्त करनु ए आर्षिक तु तो सदायका माद्रीम कारत ह्टते जेम खङ्गादि, द्यतिक्रमण नुत्तधन करव इत् वती जैनशासनमा क्षमा, । 20 E नना जे साधु ाना प्रकारना सर्वे कमें ब डुप्कर वे क्रे मही

संजम पालवुं कवण नथी. ते कारण माटे हुं तमारी आज्ञाए करीने हमणांज प्रवज्या ले-वाने इच्बुंबुं. त्यार पठी ते माता पिता फरीने कहेतां हवां. हे बात! आटलो हव तुं न हर. तुं शुं समजे हे? त्यारे अतिमुक्तक कुमार कहेतां हवा. हे खंब! हे तात! जे हुं जा-पूरें कहेता एवा लोकोने संजमनुं डप्करपणु लागे हे. पण खजु कहेता 市田田中 कातर पुरुषान मानी बेठेला तेवानेने, अने परलोकथी अवला मुखवाला थएंला एवा पुरुषने डप्कर नथी. प्रतिवंधवाला तने आज्ञा नही आपीए. त्यार पढी कुमार कहेती हवो. हे अंब! हे तात! लोकोने, जने बोले । त्यारे ते कुमर जरूर मरबुं हे. परंतु एटखें स्खना ज्ञजाण संसारना नययी डाह्म एटले परलोकना न्रोकमाज सुख निश्च धीरपुरुवने अने ननी डप्करता देख एवा लांकोने

| वेसीने नाना प्रकारना वाजित्रनो शब्द थए सते ज्यारे नगर मध्ये थड़ने निकलतो हवो, |सारे प्षा घ्व्यना छार्पे नहादि बोको, मनोकु वाषीए करीने था प्रकारे थाशिप हेना |हवा के, हे सजकुमार | तु घमें करीने छाने वत्ती तये करीने कमेरुगी शृजु प्रपे बीतो व-|हवा के, हे सजकुमार | तु घमें करीने छाने वत्ती तु छनम कहेता प्रयान प्या ब्रयमा किया स्थानमा मरके? ज्ञयवा केवे प्रकारे मरके ? ज्ययवा केटले काले मरके ? ए हु नथी जाएतो तथा हु नथी जाएतो के, किया कर्मोए करीने नरकादिकने विषे जीवो हाम क्रीन चारित्रोए करीने न जीतेता एगा इचियो प्रत्ये जीतो अने श्रमीकार करेतो उत्पन्न थाय हे १ पए। आटल जाणुडु के, पोताना करेला कर्मोए करीने जीव नरकाहि-करता हुवा ने ख्रयसरे थ्रतिमुक्तक कुमार स्नान कहेता नहारु, धाने रिलेपन कहेता शरीरे कोमा छत्पन्न थाप हे ए रीते कुमारे छत्तर आप्यो स्वार पठी तेना माता पिताछ ते कुम-स्तु सजमने पिपे स्थिर चित्त जाषीने महोटा आम्त्रारे करीने निरुतवानो महोटो छत्स्र चदनादिकनो लेप करवी, खने चस्त्र खानरखादिकोए करीने शानाव्यु ने शरीर ते जेखे ए गे,झने माता पितादिक बहु परिवारे करीने परिवरेलो एवो, महोटी शिंकिमा(पालसीमा,

एवो साधुनो धर्म ते प्रत्ये हुडे प्रकारे पालो. बती तुं निविध्यपणे करीने सिध्दि स्थानकने

अने नगरना रहेनार नर नारीन्छ आदर सहित जोवा मां-

तवना करवा मांडेलो एवो,

व्य

गामो. ए प्रकारे आशिष् दीथी. त्यार पठी ते खतिमुँकक कुमार ए प्रकारे जाचक

एवो, अने जाचक लोकोने वांवित दान प्रत्ये आपतो एवो, नगर थकी यहार निक-

ज्यां श्री वीरस्वामीजीनुं समवसरए हे; त्यां खावीने शिविका थकी उतरबो. ।

रुल

शब्द, रूप, ए ठे लक्षा ते जेमतुं एवा कामोंने विषे जरपन्न पयो ठे, यने गय, रस, स्पर्श ए छे लक्षा ते जेमनुं एवा नोगोंने विषे बृष्टि प्रत्ये पाम्यो ठे, पण ते काम नो-

विषे अने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबंधि एवा लोकोने

明

अतिमुक्तक

तेम आ

हवां. हे स्वामिन्! आ अतिमुक्तक कुमार अमने वहालो ठे, अने अमने मनोक्त ठे, अने

। अमारे एकज प्त्र हे. परंतु जेम कमल काइवने विषे छत्तन थाय हे, खने बनी पाणीने

ग्रिव पामे हे. पण कादव आने पाणीए करीने लेपातुं नयी;

मीजीनी समीपे आवीने वंदनादि पूर्वक एटले वंदनादि नमस्कार करीने छा प्रकारे कहेता गतिखायो हेगे उतरयो. त्यार पठी माता पिता ते कुमारने आगल करीने श्री वीरस्वा-

मताए करीने रहित हे बली आ कुमार ससारंग नये करीने छदिग थयो सतो एटजे वि-रक मनवाहो पयो सतो खापनी पासे दीका जिवाने इंडे हे के कारण माटे छमे खापने थ्रा शिष्य रूप निक्षा प्रत्ये व्यापीए ठीए ज्याप पण थ्या शिष्यरूप निक्षा प्रत्ये अगीकार करो स्वारे स्वामिए कह्नु, हे देचानुप्रियो! जेम तमने सुख ठपजे तेम, पण प्रतिवय कर

हो नहीं एटले ममता करहों। नहीं त्यार पठी खतिमुक्क कुमार भगवतमु बचन सान-नीने खुकी पगे सतो भगवत प्रते त्रण प्रवृक्षिणा करीने प्रने नमस्कार करीने ठनर त्वे हिहिने निपे एटले ईशान कृष्णमा जड़ने पोतानी मेलेल झानरणा मात्य खतकार प्र-रे मूकतो हयो ते झवसरे माता, ठज्वल वर्षे करीने झान्तराणाटिक घने ग्रम्भ नि । माता, डज्वल वर्षे करीने आनरणादिक प्रत्ये ग्रहण करीने ती पकी अतिमुक्तक कुमारने ए प्रकारे कहेती हुंधी हे म जोगोने विषे तहारे प्रयत्न करवो अने न पामेता गुत्र। पामेद्वा एवा सजम जोगोने विषे तहारे प्रयत्न करवो थाने न पामेद्वा एवा सज्ज्ञ जोगोने पामवाने ऋयें घटना एटले रचना करवी वली प्रवज्या पालवाने विषे पोताना पुरुपप्एानो खिनिमान सफ्त करवो अने प्रमाद तो करवोज नहीं प्रकारे हहीने त्यार पठी माता पितान नगवत प्रत्ये नमस्कार करीने परिवार जोगोंने । थासु मूकती पकी ग्रात्मे पकी

श्व ! तमे अतिमुक्तक कुमार अमणना लेइने बहार निकल्यो. त्यां जलनो प्रवाह बहेतो हेखीने वाल अवस्थाना वश थकी माटीए करीने पाल बांधीने जेम नावनो चलावनार नाव प्रत्ये चलावे हे, तेम आ अतिमुक्तक साधु हवो. ते अवसरे स्थविर मुनियो तेनी ते अतिशे अपटित चेटा देखीने ते साधु प्रत्ये हांशी 7 गत्राने, आ महारी नाव हे, ए प्रकारे कल्पना करीने ते पाणीमां चलावतो संतो रमतो दहाडो महोटी वृष्टि पडे सते एटले घणो बरसाद पडे सते काखने विपे पात्रु आने रजोहरण त्यार पठी अतिमुक्तक कुमार, श्री वीरस्वामी समीपे छावीने वंदनादि करीने प्रविज्ञत त्यार पठी श्री वीरस्वामीए पण पंचमहाबत यहण कराववा पूर्वक एटले पंचमहाबत करता होय ने शुं जेम! एम जगवत् समीपे आवीने जगवंतने ए प्रकारे पूछता हवा. वामिन्। आपनो अतेवासी अतिमुक्तक नामे कुमार अमण, केटला नवीए करीने ही प्रकृतिए करीने नड्क एवो, अने विनीत एवो, अतिमुक्तक नामे कुमार अमण, ग्हण करावीने किया कतापादि शीखवाने अर्थे गीताथे एवा स्थविर मुनियोने सुंप्यों विषद्ने वरशे? त्यारे नगवंते कह्यं, हे आयों! महारो अंतेवासी आतिमुक्तक वरशे. ते कारण माटे हे रूडा पुरुषों! सिञ्चित्न

मावच करो जे कारण माटे आ मुनि, नवनो आत करनारज हे एटले ससारनो छड़े क स्नारज हे थो चरम ग्रीरवादो हे एटले आ एने हेर्जा ग्रारर हे ए सीते ते ज्ञानवत एटले आ एने हेर्जु क्षरीर छे ए रीते ते ज्ञानयत त्यार पड़ों ते स्पविर मुनियों नगवतने वदन नम एवा स्थविर मुनियोने नगवते कह्यु स्थार पठो ते स्थविर मुनियो जगवतने घदन नम स्कार करीने जगवतना यचनने विनय पूर्वक छगीकार करीने छतिमुक्तक कुमार अमाण प्रसे छाखेंदे करीने ध्रमीकार करता हवा जावत् वैयावच प्रत्ये करता हवा त्यार पत्ती सजम प्रत्ये सम्यक्प्रकारे आरायन करीने थते अनकृत केवजी थड़ सिंदि प्रत्ये जता ह्या आत्याविकने उघाडवा थकी हीजना न करगो जाने तेने अचित सेवा न करवे करीने निवान करगो अने मने करीने बोकनी समस् गहाँ न करगो अने तेनी अवक्षा न कर त्रतिमुक्तक मुनि जे ते पए, ते पापस्यानने छालोबीने नाना प्रकारनी तपथर्वाविके क इति अतिमुक्तक मुनिसु छतात जाणुब् इहा अतिमुक्तक कुमारने ठ वर्षनी उम्मरमा कराने प गो यनी हे देवानुप्रियो ∣ ए द्यतिमुक्तक साधुने झखेदे करीने अगीहार करो खेदे करीने तेनी सहाय्य करो तथा नात पाएी लावी आपवारूप विनय करी

त्रवत् (कल्लं केंं) काल्य मितवे हे. === = 0 ^६ ≺ अवसंपति॥ एटले तेयी पण (क्क 50) थाज = 2 = (अध चितात 'प्राार कंण) प्रारंब. 油部 ार्ग, काल्य महा RIIK नूढ पुरुषो जे ते,। एम विचार व वंचार कर्य (# J फिड़ांति केंं) पामता एवा पाताना नायं य कंग) मनम TT. एटल आवत वप एटज़े धन तेनी अयोत् आज महार ' केo) पुरुष. 🛢 महाज्ञ. अंखं शि, अथवा परार

60)

याच केंग

(कल्ले के ०) काल्य (कायद्य के ०) करवा योग्य नावार्थ-हे नब्य जीवो ! जे धर्म सबधी काम कास्य करवानु होष, तेने छतावलधी अवरत्ह के०) ३ ॥ ५ ६ 0 अ | कायव । तश्यक्तं चिय करेंह्ं तुरमाणा ॥ डिस्केह कें) विसव न करो 1 बखते, निश्चे घषा बिग्न इ करवानु हाय अवराह एटले काल केम के, सारा काम करवानी पहोरे करवानु होय, तेने प गाबला पहोरे करीश एम (मा प (ज केंग) भिष्ट र्र बहुविग्यो हु १ अर्थ-हे प्राणियो । (대화)

पटतु होय,

गखते करतु ।

नावाथ-ही इति खेरे!! ग्रहह!!! अहो। ग्रा संसारनो रयो खनाव हे? के, जेना स्व-| जावनो विचार करतां तरतज खेद जलक यायठे!! केम के,जे परस्पर प्रेमवंथने करीने गाठा वं.। थायेला है, तेवा स्वजनाहिक प्णाजे प्रातःकाले दीवा होत्य, तेनातेज, स्वजनादिक सांजे देखा-तांनयी!! एटले स्नेहानुरागे करीने गाढपणे बंधायेलाने परस्पर विज्ञाग नषडवो जोइए, मने, (ही के॰) वाणी खेद थाय हे. केमके, (ने के॰) ने (नेहाणुरायरनावि के॰) स्नेहना अनुरागे करीने रक्त एवा पण, अर्थात् प्रेम बंधने करी बंधायेजा एवा पण, स्वजनादिक जेते | (पुनाले केए) प्रातःकालने विषे (दिना केए) दीवा, (ते के०) तेज (ग्रवराहे केए) सांजे अर्थ-(संसार सहावं चरियं के०) संसारनो जे खनाव, तेतुं जे झाचरण, तेने देखीने ते पुनएहे दिंग। ते अवरएहे न दोसंति ॥४॥ ही संसारसहावं,चिरयं नेहाणुरायरतावि॥ (न दीसंति के०) नयी देवाता!! ॥४॥

ह्णमा दीवु, ते गीजा क्ष्णमा ते गुने तेवु नथी वेजोग पए थया करे है।ध। (五帝) (जिम्म्जिषे के॰) जागवाने वेकाएं। झर्षात् धर्म रुत्यने । 돍 H रह्या ग्रे^१ के मंज्ञ केव एटजुन नहिं पण स्थूत ि ग्रर्थात् धर्म कृत्यने विषे प्रमाद न करो केंग्) तमारी नेप्रथम धर्म क्रत्यमा प्रमाद न करो श्रातनमा संसारनो एनो स्वनाव हे के, है बजाग थाय हे तार नासनानी जम्या है, तो ह अस्य कुट) जह कं०) न सुड रहा रेखात, माटे तेमनो । अर्थ-हे लोको। Ŕ ।सवानां ज्याए ज्ञास क (অ ফৈ) तामण स

7

जेनी पासे धन अने नासवानी जग्याए वेसी न रहेवुं, तेमणे लूटवानी जग्याए जागता रहेवुं, अने नासवानी जग्याए वेसी न रहे हत्यने विषे प्रमाद न करवो. अने नासवा योग्य एवो जे संसार तेमां वेसी नावार्थ-हे धर्मार्थि जीवो! जेम आ ठेकाणे जोकोक्ति एवी हे के

धूंवे निरंतर

मृत्यु ए त्रण डर्मनो तमारी

कर्णामा सावधान रहा.

(बद्दा के) बत्र में ते (दिवस निसा घाडे-000 जीवनुं (यान ायो वहे (जीत्राण के०) कालरहर जमाडात

अर्थ-(चंदाइच के०) चंच सूर्य ह्या (के०) दिवस रात्रि ह्या घडानी श्रेष्ति

(सितितं के०)

मान्यवा रूपा

चदाइचवइह्ना

गतरहटं केण) विनूषं केंं) यहण करीने

```
श्रपै–हे नन्य जी गे!(हाज सप्पेष के॰) काल रूपी सपें (सङ्गति के॰) खाया माडेली
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               हैं एसी (काया के0) देह जे ते (जेल के0) जेले करीने (धरिज्ञहके0) पारण करीए, वर्थात् हैं रहा करीए, (सा के0) ते अर्थात् हैं (महा के0) बहोतर कराा माहिली कोड़ पण करा। हैं (मिडी के0) नयी (त के0) ते अर्थात् तेरी (ससह के0) ब्योप्प (सिडी के0) नयी (त के0) ते आर्थात् तेरी (कियाल के0) विज्ञान अर्थात् वित्य वाहरी
नावार्य-चक्ट ने सूर्य ए रूप गोलो ने रातो एवा घणा बलवात्र्वे बलाद,ते दिवस ने रा-
त्रि रूप् पोला ने काला घडानी श्रेषियोवडे, जीवोसु झाछखा रूप पाणीने छलेवी नाखवाने,
                                                                                   काल रूप रहेटने फ्रेरो हे, माटे हे नन्य प्राधियों । छानु नजरे जोड़ने पए। तमने ससा-
र छपरथी छदास नाव केम नपी थती? ॥६॥
                                                                                                                                                                                                             ६ ७ ७ थ ११ १५ १५ १५ १५
सा निष्ठ फला त निष्ठ । उसह त निष्ठ किपि विश्राषा॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           豆豆
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 खडाति काटासप्पेण
                                                                                                                                                                                                                                                                                                              म
जेए। धारेज्ञइ काया।
```

कोइ पए कता नथीं. तथा काल रूपी सर्वे मशेली कावानुं फेर उतारवा समर्थ कोइ औषय नथीं तथा जगतमां अनेक प्रकारनी शिल्प चातुरी ठे, पण कोइ शिल्प चा-एवुं नथी के, जेथी काल रूपी सर्पेनुं फेर लागेज नहीं. माटे हे नन्य प्राणियों! मीट गयो हे, तो आपता (निज्ञि के०) नथी. अर्थात् पढता शरीरनी रहा करे, एवी कोइ पा। वस्तु नथी. ॥७॥ नावार्थ-काल रूपी सर्पे,या शरीरतुं नहाएा करी ले छे, ते कालरूपी सर्पेने निवारए। एटले या घली खेद कारक वानी हे. अर्थात् आ ल्यो. ॥व॥ तेने पथाताप वर्षो थाय हे. (काल नमरो के०) काल ह्यी ग्णामयरंदं पुहाविपत्तमे ॥घ॥ रांक जेवानी काची कायानो रयो नहतो ? माटे शीघपऐ धर्म कत्य करी : दिसामहदावाह्ने समये पुरुपोनां वज्न समान श्रीरने पण काल रूपी सपै गली । महित्रम्केतर् औषय नथीं तथा जगतमां अनेक प्रकारनी पीञ्चइ कालनमरो ^इ दीहरफाराद्नाले । म शिस क्रेंसे अर्थ-(न केंग)

यमस

हैं हर कमलमापी लोकरूपों तमाम रसने ज्यापि बेदनारूप करपणु यापरीने चुढ़ी हैं हैं एटने कोड़ माण्यते ते काल नद्गण करपा विना रहेतील नपी- डहा पृथ्वीरूप कमलत्त्र हैं ग्रेपनाग रूप नालगु कहा, ते लोकोक्तियी जाण्यु एटले लोकमा एवु कहें गाप है के, था हैं बनी पृथ्वीने श्रेपतामे मापा उपर उपाड़ी लीधी है बली ए पृथ्वी रूपी कमलमा पर्वतों, नावाथ-लोकमा एवी प्रसिदि हे के, नमरो कमलमायी एवी रीते रास ले के, जेथी करीने ते कमलेने लगर मात्र इजा न थाय, तेती रीते पोताने खप जेटलोज मधुरे खरे । गेलीने थोडो थोडो रस छे हे, परतु आ जग्याए तो तेनाथी तमाम छत्वटी रीते जाखवा जेनु हे माटे ते वानीनो विचार करता चच्च प्राधियोने तो दयाना अधिक प्रणामयी क गरों हुट्या विना खेंच नहीं ।। जेम के, कालरूप असतीपी एगे एक जमरों हे ते पृष्वी-तिहों के छ) विशाहर हे महोटा पत्र ते जेने विपे एतु (पुरवि पत्र में हेण) एती हप कमलने हियार केसर केण) महियर एटले पर्वत ने हत्य हे केसरा ने जेने विषे एतु, ने (विसा मह नेये(जणमयरद के०)जनरूप मकरदने खर्यात् लोक रूपी रसने (पीजड़ के०)पीए ठे ॥णा हैं (तीहर कें) दिर्ध एउने महोट (फाणिवनाले कें) ग्रेषनाण कर वे नाल हे जेन एड, ने (मिरा मह

প্র ते केसराने ठेकाले छे. ने दश दिशायो ते महोटां महोटां पांनडांने ठेकाले छे. आवा महोटा क्यार अर्थ-(गर्ज केण) ग्रजने (गर्वसंतो केण गर्वपाता करतो एवो (कालो केण) काल जे ते, (ता के०) ने हेत् सूधी पण हुत्त थयो नयो, ने यतो न अवाय, एवा आत्म स्वरूपने पामवाना साथनमां; प्रमाद ठोडीने छदाम करो !! ॥६॥ पात के था भाग (सयलजीश्राएं के॰) सकल जीबोनुं। काल रूपी जमराना गयामिसेण कांनो । सयवजीत्याणं वंतं गवेसंतो॥ रण ११ ११ १३ । ता धन्मे ज्यमं क्रणह ॥ए॥ (कहि मि क) कोइ प्रकारे पए (न मुंचइ से) नयी मूकतो. त्रव न्मलनो रस निरंतर पीतां पण कालरूप जमरो खाज पए नयी, अने यशे पए नहीं. माटे हे नन्य प्रांशियो यम्मे केंग) पर्मने विषे (जद्यमं केंग) ह अ ए ए पासं कहिति न मुंचइ। (गयामिसेष के॰) श्रीरनी जायाने मिषे (नावाथे - हे नव्य प्रााधाया

सबतमा पामे के, एने हु पकढी बेठ, एवी बांगपे निरतर वायाने मिपे पकडवाने माटे त्ववाडे पडेलो एवी जेकाल,ते कोइ प्रकारे पण पाठो हवे एवो नधी एतो जरूर छिचतो जाली तेरो ते वखते तमने पणो पश्चालाप पशे, के, छोरे !! छापणे काइ पण धर्मे साथन करी ध्यपं-(अष्णाईए के०) आदि रहित एवा (कालिम के०) कालचक्रने विषे परित्रम-विषे, ज्या सूधी कालना फपाटामा ब-(विविह्डकम्मबसगाएा के०) नाना प्रकारना कर्मने वज्ञ थएला एवा वोने (ससारे के०) ससारने विषे (ज के०) जे (सविहाण के०) श्वेपादिक नेद (न सनवड़ के०) प्राप्त ययेजो नथी सनवते विविद्यकम्मवसगाषा ॥ ससारे ज न सनवह ॥१ण॥ तबर नियी झाठ्या, त्या सुषीमा काइ पण प्रयत्न करी त्यो ाक्या नही। माटे जिनप्रधीत श्रिहिसादिक धर्मने। जीवाप सविहाएं। कालामि श्र्यणाईए

तंनवे हे.॥१

वखत न्याहिक नेद ए जीवने थएला प्ण तमे तो करता करत शकाय तं नांडी केण) ते नथी. अर्थात् सर्वे टे हे जन्य प्रा

प्रा नत्त्र शह चूक्य।

विषे की डाप ऐ

तंज तमे, आज शेव शाहकार बनीने

प्रा गया; यावत्

प्ण उपर माग्यामा

उत्पन्न थया त्यारे तो तमने न्हानां

ाधंडा पण थयां हो, कूतरा पण थया हो,

पण दाणासाटे वेचाथी द्याया,

अनेवली

हैं। डार्थ-(सों के॰) सर्व एवा (बधवा के॰) वाथव (सिहिणों के॰) सुहर एटटो मित्रों तथा (पिडामाया के॰) माता पिता (पुननारियां के॰) पुत्र तथा स्ती, ते सर्व ने ते, मर्री गयेता मनुप प्रत्ये (सिलितजाले के॰) पाणीनी अन्ततीने (वाज्य के॰) डापोने (पेडा-वणान के॰) वसवान यकी (निष्यनित के॰) पांवा पेर डावि हे पण मरेता मनुष्यनी समाये कोडपण मनुष्य जता नथी ॥ ११ ॥

नावार्थ-हे जीर। था सपता देहना साथि हे पएए कोड तहारु सबधी की में, सजन तथा मित्रो, माता, पिता, पुत्र, अने स्वी.ए कोइ माणस तहारा सगा नृषी हेमहे, जे देहनी सगाथे तेमने तथ्य हतो, ते देहने वाली कूटीने पठी पाणीनी थजजा थ्रापीने झर्थात् ते फरीपी पाठा घेर झाववाना नयी एपी झाबा मुक्रीने इम्बान पकी पोत पोताना स्वार्थने सनारता पाठा पोत पोताने घेर जायेठे पण तेमान कोड़ वहाजु सगु । जीवनी साथे जत् नथी ॥११॥

वियाग (जिणनार्तात के०) जिनपरमात्मारे विज्ञोग थाय हे. एज रेजोग थाय हे. (य केण) वली (वल्लहा व क्यारे पण (न विहडड कंग) ! (मुझा के 0) पुत्र तथा प्त्रीयों ने ते ((बंधवा केण) स्वजन वहन्त्रहा य। एटले तेनो पण विज्ञाम थाय हे. तेज रीते () एक ((इक्रों के ग) (कहविकेष) अयोत् स्वजननां पण । अर्थ-(रे जीव केण) हे अज्ञानी जीव! थाय छ, धर्म जे विहडंति सुआ

प्रयाजन

*****इहां हे एवं संवोधन न

गमतो नयो. ॥ ११ ॥

'ध्ममी के०)

मकीने तु केम क गवार्थ-हे मुग्प जीव ! तु.विचार करय के, थ्या ससारमा तहारु कोएा के 🤈 विने साच सगपण तरे गइ॥१ नसारचारए ठाइ 54 मोगट झे ॥१ शा तान नपी थतो अडकम्मपान्नक みのおされ झर्थ-रे आत्मन अने बीज़ सर्वे सगपण नों कड़ि काले पुषा ज़, स्यजन, इ ¥ 64 54 54 54 56 57

संसार रूपी बंधिरतानाना बरमां पड्यो हुं. तोपण तेमां मिथ्या सुख मानी बेठो हुं, पण तेमांथी निकलवानो उद्यम नयी करतो, पण ज्यारे त्यारे, तेमांथी निकलवानो उद्यम क-रीने ज्यारे ज्ञाठ कमें रूपी पासने तोडीश; त्यारेज तुं मोक् मंदिरमां जर्डश. पण ते वि-नातो तने अविनाशी सुख क्यारे पण मलवानुं नयी.॥१३॥ नावार्थ-हे जीव! तुं विचार करव के, ज्या जगत्मां एक पास वहे वंघायेलो मनुष्य पण मूकाइ शकतो नथी, तो, तुंतो ज्याव कर्म रूपी ज्याव पास वहे वंघायेला हुं, ने तेमां वली (जीवो केए) प्राणी जे ते (संसारवारए के०) संसार रूपी वंधिखानाने विषे (गड़ के०) प्रात्मा ने ते (सिवमंहिरे केए) मोक् मंदिरने विषे (गड़ केए) रहे हे. एटले एक समयमां हे हे. ने (अडकम्मपासमुक्तो के 0) ज्ञाव कर्म रूपी पासथी मूकाएदो एवो (ज्ञाया के 0) । विस्यमुहाइ विवासिलांले आइ॥ क्त्रने न स्पर्श करतो मोक्ते पामे हे. ॥१३॥ विह्यो सज्जणसंगो।

नांलणाद्वम्मघालिर।जललवपार्चचलं सब

ξ 90 明年出出 100

Ŕ į E वायधी व 70,00 11 Med संत् 200

जाय हे ≅≃ ارا ال विषे तु गु आसक (C) कालमा 텾 生

たなんびかん よしいがいしん

大大や女女へかっ

D

eg り

高 .खे. 900 e e **争**0 क्ष वृत्ति न 9 अर्थ-हे प्र ने कि

| अया तेने उठी करो, केमके, तमे गमे तेटलु ख्व्याविकनु खरच करीने ग्रुरीरनी साचवणी | करो, तोपण ते शरीरनी जवानी कदि काले तेवीने तेवी रहेवानी नरी माटे जेनी सेवा | निष्कत न जाय, एवा धर्मनी सेवामा तरपर थाछ ॥१५॥ (जीयो के०) जीव जे ते (जयनपर के०) ससारह्मी नगरना (चडप्पहेंसु के०) ची-विषे श्रमोत् ज्यार गति हम चीटाने विषे (विविहाड़ के०) अनेक प्रकारनी इ ख श्रपांत् च्यार गति रूप चौटाने विपे (विविहाञ के०) अनेक प्रकारनी ड ख (विम्त्राणान्ने के०) विटबताने (पावड़ के०) पामे हे प हेतु माटे (इज्ज के०) ए ससरने विषे (से के॰) ने प्राचीने (को के॰) कीण (सरपा के॰) रक्षण करनार ठे⁹ थ ट्यफै-(यणकम्मपासबदो के०) निविद कमै रुप पासाए एटले गावयोए वयायेलो म घएकम्मपासवन्ने । नवनयरचञ्पहेसु विविहाज ॥ ्र ए व १७ व । जीवों को इंग्लेसरण से ॥१६॥ क् पावइ विमवसाज ।

|| || || ||

र्थात् कोइ पए। नपी

खनो के हैं। अन्तीवार (विसित्त के ह) खेलों हैं वार्या ने डिस्तने जूली जहने फरीथी अनंती नाने केंं) गनेवासने विषे (कस्माणनावेण केए) गुजायुन कर्मना प्रजावे करोने (जाणंत के०) अस्तु मिलो प्रमे, मे (मेत्र के०) मीनात, कहेतां कपकमाट मोजो एवो (गप्त-केमां रहेला एवयने (पहायोंने) माह ने हप (जंबाल केए) काह्व ने को काने (अमुह अर्थ-(अनो-केए) जीव ने ने (ग्रेसी केए)गर एटले न्यानक एगे (कडामाज केए) है गहि रहम संसारना नोगानमां (नीटामां) अनेक प्रकारनी ग्रहीरने तथा मनने डांखदायक। मंधनाहि हम विदेननाने पाने हे. त्यां तेने रह्मण् करवा कोण समधे हे? अर्थात् ने जीव-। जावाथ-हे प्राणित्। आ जीव घणां कमे रूप पासबंधयी बंधायेजो एवो सतो ज्यार मिन अणंत्रख्तो । जीने कस्माणुनानेण ॥१ णा श्रम् गम्बासे। कलमलजंबालञ्जसुर्बाच्छे॥ ं ने रहा करनार धर्म विना बीजुं कोइ पण समधे नथी.॥१६॥

ब पणुज इ.ख पड्डा होप, ते जग्याए फ्रीफी न जाय पण आ वीवनोतो एवं अवलो स्य है जाव हे के, तेज जग्याए वारपार जवाय एवं डचपाय करता करे हे पण ते थकी विराम न- क्षेत्र को पान हो के, तेज जग्याए वारपार जवाय एवं डचपाय करा करे हे के, गर्नाजासमा पणुज कर हे के, जेनु व वर्णन पामतो होने जोश्ने हानी पुरुप डपवेश करे हे के, गर्नाजासमा पणुज कर हे के, जेनु इ वर्णन पण वर्गवर पश्च शक्तु नयी तोवपण इहां यत्तिकित् कहांप होप होप नामा तामानी होप होप पान करा का प्राचानोती होप होप होप साम स्ताज नयी ने आनेक प्रकारना सूक्ष्म अतु हे गर्नना कोमल श्रुरिय पणि वेदना है साम रस्तोज नयी ने अनेक प्रकारना सूक्ष्म अतु हे गर्नना कोमल श्रुरिय पणि वेदना है छपजाने हे ने, ते गर्नने नाशी जवानी जग्या नयी मलती, तेथी वारवार मूडालाइ तेनी है बार गर्नोबासमा छ ख मोगवडु पहे, एवु कत्य करे हे परतु फरीपी गर्नोबासमा न आवडु हैं पड़े, एवो छयम नयी करती ए घणु ध्याभये हैं। ॥१ ॥। नावार्य-हे महामुम्पप्राणिन्!! य्या सतारमा सारा माणसनी एवी रीत हे के, जे जग्याए

ते वेदना सहन करे हे वली त्यां झनेक प्रकारनी रूपण पायठे तेनी वेदना, तथा जररा-प्रियी ययेती उच्छ वेदना, इत्यादिक कपकमाट नरेली खनेक येदनाझेने सहन करतो उपे मापे नवसास सुपी टटअतो हतो माटे हे जीव। ते ड खना दिवस तें झनतीवार नोगठया भू श्रीदर्न पामवाना छपाय (অ ক০) शंब गोपणं तुं केम जूली जाय हे? अने फरीथी पाडों तेनांतेज । जावना (जोवींसं केंग) **⊕** (0)) प्रमुख पमुह कं0) (नोर केंग)

वय

उत्पन्न भयों हे.।

रं केंग)

(o (b

ग्राब्योतु ने, तेते जीवा जोतीने विषे अनेक प्रकारना हेदन नेदनना छ ख, तें आनती-**≥** तोय पण ते उत्पत्ति स्यातमांथी कटातो पामीने, धर्मरुत्य (मायक्र) (नम् भेग) रहोड़ि केंग्) ससारने।

नावार्थ—हे जीव! आ जगत्मां रहेता सर्वे जंतु कदाचित् तहारं पालण पोषण क-रवा माटे, माता, पिता तथा बंधु क्ष्पे थयां हे, ने तेमणे करीने छा। सर्वे लोक पूरेलो हे. परंतु ते सर्वेथी पण झाज सूधी तहारं रक्षण थड़ शक्युं नथी. माटे ते तहारे शरण करवा योग्य पण नथी. कारण के, संसारना महा डःखरूप प्रवाहमां खेंचाता प्राणियोने, जेमां जे ते (निद्यते कें) जत रहित प्रदेशने विषे (सफरो इव कें) माग्रतानी पेठे (तडफ्डर्ड अर्थ-(वाहि के0)ज्याधिये करीने(विलुत्तो के0) उपड्व वालो एवो (जीवो के0) जीव के0) तहफड़े हे. एटले खाकुल व्याकुल थाय हे. ते प्रकारना रोगे करीने पीडाता प्राणीने || \(\text{call} \) तारो कर्षाधार (नावनो चलावनार) हे, एवी नौका (नाव) रूप जिनधर्म जे तेज, शरण माता पितादिक श्ररण करवा योग्य नथी.। सयलो वि जणो पिन्नइ। को सको वेञ्यणाविगमे ॥ १०॥ तडप्फड़ई ॥ मिचले त सफरो इव करवा योग्य तथा महण करवा योग्य हे, पण म जीवो वाहिविल्नो

अनावपी तहारे फरीपी एवु छ ख नोगवतु पदे नहीं,माटे तेवा धर्मने कस्य ॥१०॥ ग्गानी पेवे तदफडे हे, से पखत हो मां। हा गांपां! इत्याविक सामाने खानिशे करूणा हा-सन्न थाय एवा पोकार करे हे, स्परें तेनी वेदनाने लेशमात्र होड़ी करवाने केड़ि पण समर्थ यह नयी। अतृटा तेना मनने थीजी वेदना हत्यत्र थाय, एवी रीतना करुणा नरेला शब्दो बापरीने धने खोषधादिकना एणा खरचमा नासीने खने खाखोमा खासु साबीने,इज्टा तेने (सयतो वि के॰) सकता एवी पए (जणी के॰) जन एटले लोक जेने (पिद्यह के॰) देखे है परतु ते जीवनी (वेडाणाविगमे के॰) वेदनानो नाश करवाने विषे (को के॰) कोण पुरुष नावार्य-खा औव झनेक प्रकारना ज्यापि वडे शस्त थठ्ने ज्यारे जलविनाना मा-बपारे गनरामाएमा नाखे छे खने पोते ज्यारे निराझ थाय छे, त्यारे निसासा मुकीने बेबटे । कोइपी काइ पण ड खं लड़ शकातु नपी माटे हे जीव] तको के।) समर्थ होय ? अपितु कोइ पण समर्थ न होय ॥१०॥

होड़ बंग हे. ने बंग में ते पम जाता है में, एवी महीर सुख यहो, पर्त ने की महि पा है होते गाद कीते राखवाणे नरक कि जाई पह नहीं सुल पा के, मेंने कि गाद कीत राखवाणे नरक कि जाई पह नहीं सुल पा के नात के, मेंने कि गाद कीत राखवाणे नरक कि जाई पह में हैं एको हाल मान के हैं। केन, तेमान कि का प्राक्ति प्राप को जनाए करता एवा जीवाने (एवं केए) ए एवं कलजादिक ने तेल, जनाटा (निज्ञणं को जनाए करता एवा (बंगणे केए) बंगन को थायहे. ॥११॥ केए) अतिये गढ एवा (बंगणे केए) बंगन को थायहे. ॥११॥ जावाथे-अर रे जीव! तहारी मी विपरीत मुध्य पड़ हें। के, ने डायतं कारण है, अफे-(जीय केए) हे प्राणित्। (प्रकलानाइ के०) एत तथा को इत्याहिक ने ने (मन के०) महारे (महत्तेजक०) मुखाने कारण थने. एम (तुमं केए) ने (मा जाणित के०). न जाणीया. केम के, (मंत्रारे केण) मंत्रारने थिय (संसरंताणं केण) नरक तिथेय इत्यादि म जाणात जीव तुमं। पुत्तकाजनाङ् मन्न सुहहोता। रह रूप रूप तमारे मंग्रामाने गर्मानामां गण्डा।

तात्र गड्,'वए तेमां केटली घडि में महारा नागववाना श्रवतार । झनवस्या एटजे एक जातनीं स्थिति नथी (कम्मवसा के०) कर्मना वश थकी रम विचार Ē गरवा पडे हे' अने त्या त्या झनेक प्रकारना ड त्व सहन करवा पड़े हे (जाया के०) स्त्रीरूपे छे तथा तियँच गतिने विषे गथेडा क्तराविकना नि शकपणे विषय र थारमानु साधन करधु १ एयो विचार तु केम नथी करतो १ ॥११॥ त्री, आ महारो युत्र इत्याविक ममत्वनाव करवापी नवमा तेन पालण पोपण करवामा रात्रि दिवस गमावे हे पण प (जाताखी कें) माता से ते, नवातरे (कम्मवसा है, खाज ययो दियस गयो, सथा खाज वयी १ अर्थ-(ससारे के॰) ससारने विषे (नीबोनी (झएावज्ञा के०) जष्णीं जायइ जाया अएवज्ञा ससार

(जाया के॰) स्त्री जे ते, नवांतरे (माया के॰) मातारूपे. याने (य के॰) वर्ती (पिया के॰) हैं रा॰ पिता जे ते, नवांतरे (पुत्तो के॰) पुत्ररूपे पंषा (जायह के॰) थाय हे. अर्थात् था जीवनी हैं रहेतु नथी. एज संसारनो विषम स्वन्नाव हे. कारण के, जे माता है, ते नवांतरे मातारूपेज नथी थती, परंतु तेज माता खीरूपे थायहे. अने जे स्वी एटले पोतानी नाया हे ते नवांतरे मातारूपे थायहे. पण नार्यारूपे डत्पन्न नथी थती. अने जे पिता हे, ते नवांतरे पितारू गमावे हे. पए। एम विचार नथी करतो के, एज महारां केटलीएक वखत शञ्ज थड़ने तेनुए मने हेदन, नेदन, ताडनतर्जन, घातपातादिक खत्यंत वेदना छपजावी हशे. तोपण हुं तेना उपर सरागत्रावे करीने उत्तटो रात्रि दिवस तेनीज चिंतामां रहीने महारुं धर्मध्यान मूकीने एखीने तहारो बधो जन्मारो तेनुंज जरणा पोषणा करवामां, पशुनी पेठे श्रा मनुष्यनवने एले पेज उत्पन्न नथी थतो, परंतु पुत्रक्षे पण उत्पन्न थायहे. माटे जेना उपर तुं आज प्रीति नावार्थ-हे जीव!संसारमां सवें जीव कमीने वश् हे. माटे तेमनुं स्वरूप सदाकाल एकरूपे मुं करवा खराब घउं हु ! एवो विचार हुं लेशमात्र पण करतो नथी. कारण के, हुं ै एक सरखी स्थिति नथी रहेती. इत्यादि अनवस्था जाणवी. ॥११॥

ने एक Ħ, बरया) रहती नुकानु, त न्त्रवमाज श्रनक प्रकारना संबंध १ कथा 9 팋 色 (일 जन्मारी तेमने माटे मधुरा नगरीने ज इन्स न्ह्यु परतु खाने

पीडा दूर करवान

मा, कहेती हवी. हे पुत्री

एक जाएनु कुबरदन,

पटान पहणा पूरा। पूरा। प्राप्ता स्था स्थान करवाने अयं आवेला एवा वे शेवना पुत्री हैं। उन्हें प्राप्ता होती, तरकाल लेहने एकज्ये तेनी मध्ये एक बालक आने वालिकाने हैं पंटीने आवर्ष होतो, तरकाल लेहने एक वाल कोने पत्र वालिकाने होते होता होता होता होता प्राप्ता स्था स्था के बालिका लीपी ए प्रकार हे लाइने पान पानक लोहने पान पान होता प्राप्ता का सुद्धितामा ललेला अहरने अनुसारे तेमनु नाम पान्धु स्थार पुत्री सुद्धितामा ललेला अहरने अनुसारे तेमनु नाम पान्धु स्थार पुत्री हे कुनेरका आने सुद्धितामा ललेला अहरने अनुसारे ते हाहुकारोने हेर आति उन्हों करोने महीटा प्रया पत्नी हुकारों हे बालकों ने सानक प्राप्ता पान्या रायो ते वे बालकोतु सरख कर वाणीने, ए वे शार हुकारों हे बालमों माहों माहे पाणि प्रहणाने उस्सव करता ह्वा एटले लग्ने उस्सव हुकारों हे बालको है सी अरवार, एक रहाडो सीगटा वाजी समवा वेवा ते अवसरे कुनेरक्तानी आगल पड़ी के देवना हायवती है ने वालनाने आप हा सिहिंस कोईक प्रकार निकलीने, कुनेरक्तानी आगल पड़ी है। लाकडानी पेटीमा ते वे जाएने माही मूकीने सच्या समये यमुना नदीना घवाहने विषेाते १ पेटीने बहेती मूकी दीयी त्यार पत्नी ते पेटी जालामा बहेती पकी घ्युतक्रमे करीने विवसनो

Av

22 22

Ö ko ন पूरुधुं. ते खवसरे तेमनी मातानुए ते वे जणनी आगल गमां घडेली. अने सरखा नामवाली एवी देखीने मनने विषे कुबेरदनने पोतानो जाई मर्ख व खाटुं थयुं।। खवरावान मुण्वातां तमने जाणीने तमारा सर्व पण इनांत कह्युं. त्यार ' B , तहारा सरखी कन्या थने तेना बगड्युं नयीं, जे कारण वित माताने सम ययो 🗦 एटल था श्रमने जोदले जन्मेलां हायमां घाली. ते अ नेश्व करीने तपाताना काइ वर्ष हरधुं ? त्यारे ते कहेवा लाग्यां मुल फक्त संदेह निवारवाने ववाहना स्वक्ष कर्या. कहवा पाताना न्यांहि श्रमने मत्यो पातानो म्म त विवाह करपाडन ज माह्रा त्वा ない माता

तमारु बचन महारे प्रमाण्डे परतु हुमणा तो हु व्यापार कराने माटे परहेश जवानी हु हुआ राखु हु कारण माटे मने आज्ञा आपो त्यार पढ़ी ते ते हे ते वाणीए आज्ञा आपो त्यार पढ़ी ते ते हे ते हे वाल पोतानी पहेन कहिंने, पणारु कियाणा होड़ने, टेन्योग पण्डी पी-पढ़ी होने हुत्यापा होड़ने, टेन्योग पण्डी पी-पढ़ी होने हुत्याने पढ़ी पत्राप्त नगरीये गयो त्या ते निस्तर पीताने उचिन व्यापार कियाणा है करती सती, एक इह्याड़ो कोइक मावा कमना जोगपकी अद्रचतहर्ष करीने होनायमान हुद्ध्य आपीने, पोतानी माता हुत्याने हेखीने, कामे पीडित पयो सतो, ते वेद्याने यह हुद्धा आपीने, पोतानी साता हुत्याने हुद्धा हित्या हुद्ध्य आपीने, पोतानी हो करीने निस्तर तेनी सगापे विषय सत्यी सुख नोगवतो हुये हुद्धा आपीने, पोतानी हो कराणी हुद्धा नाताना मुख्यकी हुद्धा आपीने, पोतानी सुद्धा है स्वीण पण्ड सित्य हुद्धा नाताना मुख्यकी सित्य हुद्धा हुद्धा महारा हुद्धा करीने, तह्छाज वेराग्य प्रते पामी सती आपी (सान्पी)नो हित्योग पण्ड सित्य हुद्धा महारा महारा योग हुद्धा सहीण पण्ड सित्य हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण सहीण हुद्धा सहीण सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा हुद्धा सहीण हुद्धा हुद्धा हुद्ध समापे तागेलो एवो, थने पुत्र सिहित एतो, तेने देखीने कर्मनी गतिने धिकार करती ए यक्री पोडा कानमाज, तेएीए खबाधे हान वस्पत्र करधु 'स्वार पठी ते साच्ची, खबियहा-नना बले करीने पोताना नाईनु स्वरूप जोती सती मथुरा नगरीने विषे पोतानी माता

वहाज्जुने ॥३॥ महारो नरतार ने ॥४॥ महारो पुत्र ने ॥५॥ अने महारो सत्तरो प्रष्य ने ॥६॥—तया ने तहारी माता ने, ते महारी माता ने ॥१॥अने महारा पितानी माता ने ॥२॥ महारा नाईनी स्ती है।।शा अने महारी यहु है।।शा अने महारी सास्ते े।। ।। महारी गोक्य पण है।।शा—ए रीते कहींने साध्यी ते वालकने वारवार बीलावे हे

युने महारा जाईनो पुत्र हे, माटे महारो नवीजो हे ॥४॥ खर्ने महारी मालाना प-नाई हे, माटे महारो काको लागे हे ॥५॥ खर्ने महारो शोक्यना पुत्रनो पुत्र हे, माटे ्यार पड़ी एक बहाबो कुनेरवन तेनुं यचन सानजीने, याश्रर्य पाम्यो सतो, ते साध्वीने क-हेतो हनो हे ध्यापे। वारनार याबु अनुक्तु शु बीजो ठो? त्यारे साध्यी कहेती हवी हु अ-जुक्तु नथी बीजती जे कारण माटे खा याजक एक मातापए॥ पकी नाई ठे, एटले तेनी ध्यने महारी एक माता ठे तेथी महारो नाई थाय ठे॥१॥ खने महारा नरतारनो युत्र ठे, माटे महारी घुत्र थाय ठे॥१॥ यते महारा नरतारनो नहानो नाई ठे, माटे महारो दीयर ठे झागे हे ॥६॥——ए प्रकारे वालकनी सवाथे पोताना ठ सवथ देखा पिता हे, ने महारे एक मातापणा थकी नाई हे

स्त्री थड्, माटे महारी वहु थड् ॥४॥ अने महारा नरतारनी माता थड्, तेथी महारी सासु थड् ॥५॥ छाने महारा नाईनी बीजी स्त्री थड्, माटे महारी गोक्य घड् ॥६॥ ए रीते छा बाल-कनी माता कुबेरतेना वेश्यानी साथे पोताना उ संबंध देखाङ्याः ए प्रकारे आ आहार सं-वंय कहीने ते साध्वी, ते संबंधोनी खातरी करवाने भयें, पोते बत बहण करधें ते अवसरे अने महारी एक माता हे. माटे जाड़ बायहे ॥१॥ अने महारा मातानो नरतार थयो, तेथी महारो पिता थाय हे ॥ १ ॥ अने महारा काकानो पिता थयो, तेथी महारो बडाइन थयो । ह ॥ अने प्रथम मने परएयो हे, मांटे महारो नरतार थाय हे ॥ ध॥ अने महारी उ संबंध कहीने, बली कहेती हवी. जे आ वालकनी माता हे, ते मंने पण जणनारी हे, माटे अने महारा नाईनी स्वीथड, तेथी महारी नोजाइ थाय हे ॥३॥ अने महारी शोक्यना पुत्रनी श्राय, मांटे महारो सत्तरो हे ॥६॥—ए प्रकारे बालकना पिता कुबेरदत्तनी साथे पोताना महारी पए माता हे ॥१॥ अने महारा काकानी माता हे, तेथी महारी दादी जागे हे॥१॥ राखेली गोतानी वींटी कुबेरड़नने आपती हवी. त्यार पजी कुबेरइन पण ते वींटी शोक्यनो पुत्र थायठे, माटे महारो पुत्र पाए थाय हे॥ ५॥ अने

. नाईपरो क-थागीकार करती ह्यां त्यार पठी कुनेरदना साध्यी, ए प्रकारे तेमनो द्यांतर करीने पीतानी पुरुषी पाले गड अनुप्रमें "करीने ए सर्न जीवो पोतानो पर्म सम्बद्ध प्रकार आराधन करीने सहगतिना जननार थ्या ख्य-धीत रूडी गतिमा गया ए प्रकारे खारा समय उपर कुनेरदनत द्यात कहा खा एक नामे खाशीने समय देखाख्या खनेक नवनी खपेहाता तो प्रापे कहा खा सर्ग सबयनु विरुद्धणु जाणीने, तत्काल बैराग्य पामीने, पोतानी निदा करतो हवो तथा कु मी ग्रुप्टिने छुपे, चारित्र घट्ण करतो हवो छुने वली महा तप करतो हवो तथा कु बेरतेना वेद्या पण् ते ग्रहानि सानज्ञवा थकी प्रतिबोध पामी सती शावकनो पमे हारीक जीरोने एकएक सत्यय पण अनतीवार थया है ते प्रकारे श्री जगवती सूत्रना ोने, सामान्यथर्मा श्रुपएो करीने, वैरिपषे करीने एटले श्र्युनावना ब्रुनुवय वारमा शतकमा सातमा छदेशमा कह्यु हे, तेनो अर्थ इहा लाखीए डीए हे नगवत ! झा जीव सर्वे जीवोता मातापखे करीने, पितापखे करीने बहेनपषे करीने, र

करीने, घातकपा करीने एटले मारनारपा करीने, अने ताडन करनारपा करीने, प्रत्यनी-हपछे करीने एटडे प्रतिकृजपर्षो करीने, अने कार्यना छपयातपर्धे करीने, एटडे अमित्रस-अनेकवार अथवा अनंतीवार ज्या जीव सर्व जीवोनी माता थई, पिता घयो, नाई धयो, ए ग़यीपणे करीने राजापणे करीने, जुबराजपणे करीने, यावत् सार्थवाहपणे करीने, दास-रीते उपर कह्या प्रमाणे पूर्वे सर्व संबंध करी च्क्यो हे. एज प्रकारे सर्व जीवो पण थ्या जीवना मातादिकपणे करीने, अनेकवार, तथा अनंतीवार पूर्वे उत्पन्न थया हे. ए रीते सर्व जीवोने ज्तकप्षों करीने एटले इकालादिकने विपे अन्नसाटे लियिलो तेप्षे करीने, कर्पेणादि वली कला शीखववा जोग्यपएो करीने, अने वजी हेप करवा जोग्यपएो करीने पूर्वे जत्पन्न थयों हे ! ए रीते गीतमस्वामीए नगवंतने पूठ्युं. त्यारे नगवंत कहता हवा. हे गोतम। हा! लानना नाम ग्राहकपछे करीने, अन्य पुरुपोए उपाजेंन करेला अर्थना नोगकारी नरपछे करीने. ाणे करीने, एटले घरनी दासीना युत्रपणे करीने, प्रेप्यपणे करीने एटले चाकरपणे करीने

मांहोमांहि सर्व संबंघ घड़ चूक्या हे. इति संसारनी अनवस्यां उपर कुबेरसेना गिषाकानुं हछांत तथा श्री सगवती सूत्रना पाठनो श्रथं जाएातो. ग्रर्थ –(जञ्च के०) ज्या (संवे के०) सर्व (जीवा के०) जीव जे ते (श्रावातसों के०)य नतीवार (न जाया के०) नथी ग्रंथंत थया तथा तथा संग्रा के०) नथी मध्य पान्या, एवी (सा के०) ते ब्राथीत तेवी कोड़ (जाई के०) जाति जे ते (न के०) नथी ग्राने (सा के०) ते ब्राथीत तेरी कोड़ (जीधी के०) योति जे ते (न के०) नथी ग्राने (त के०) ते ग्राथीत तेषु होई (जाधा के०) स्थान जे ते (न के०) नथी ब्राने (त के०) ते ख्यांत् तेषु बती छ। अधिकारने विशेषे जाषवानी मरजी होय तो, श्री नगवती सृत्रना वारमा म जनवम महेरामाधी बोकडान हष्टात जोड लेज्यो स्थानको अनती गर यया छे॥१ ३॥ रा ए १७ १४ १२ १३ १८ १५ १६ १०१६ १५ न सा जाईन सा जोणी। न त ठाण न ते कुल जीवा श्र्यणतसो । ्गई केंग्) था.. ! मीने चे ते (त केंग्) तथा - मे खने (त केंग्) ते खण् वोकडानु द्यात जोड् ॥ अनुषुष्ट्रम् त्र हु । १ १ न जाया न मुज्या जहा ॥ संदे ने ते(नके०)नयी एटले स शतकता सातमा उद्गामाप

II R CII याज

प्रांतनाग मात्र पए, अथीत् सिचित् मात्र पए (वाएं के०)स्यान) बालमा अय (मह डक्त परंपरं के। (गंभंग) (बालाम केंग (जीवा के०) जीव जे ते ((बहुसी केंग) पर्णावार (न पना केंग) लोको (जर्म भेग) ने स्थानने विषे (कार्ड पत्ता (अर्थ-(जन्न केंग) 一部やり

K ि उत्पनि यञ्ज हगे! एम संनावना

नीयोने अनंतो काल पड़ गयो हे. माटे ने जीवोने

जह झाल्यों हे. ॥१८॥

E

नावाथे-ज्यवहार राजान पामेला

は自己では

नोगदीने काइ हस थवातु नथी पण, बतारी तेनी तुष्णा जेम बताना द्याप्रमाधी होमें, ने तेनी ज्याता ब्रुंदि पामे, तेम विषय हुष्णा नृद्धि पामग्रे, माटे हे जीन। तु एम निवार के, हु सर्ने बेलाण जड़ने सर्ने जातिना सुख छ स श्रनतीवार नोगनी ज्याज्यो हु पण कोड़ ं वि परनायमा आसक पट्टने पच प्रकारता निषय सुख नोगववानी हुप्छा, हुजु सूर्या तने जहीं नयी परतु तु एम बाह्या राखेडे के, हु सारी सारी जाति आदिकमा जड़ने सारा सारा विषय नोगु, पछ ते निषयमा सुख ने अनतीवार मोगवीने बमन करवा है, तोषपण तेने तेज ठेकाचे नशी जड्ड झाब्यो एम नथी एतु विचारीने विषय सुखयी विराम पामीने तु तहारा ॥ हु है। हु है।। सारी सारी जातिमा तथा सारी सारी योनिमां ठरषत्र थयो तु अने सारा सारा स्थानमा तथा यनेय, धाजर, थामर, ज्ञानरूप, मुखरूप धाने सचारूप एबु ठे तेने तु विसरी जड़ने, देहा नोगनी इड्डा राखीने वाताशी(बॅमन करेलाने खानारो)क्रेम थाय ठे⁹ वली ए विषय सुखने सारा सारा कुलमा डासङ्ग थमो हु अने तु त्या छानेक प्रकारे जन्म मराण पान्यो हु पर् विचारी जीतातो तुजेवो हुनेवोने तेवोच दु एटले तहारु स्वरूपतो निश्चेनयमते करीने छाटेय ग्रात्मस्वरूपना श्रविनाशी सुखमा मग्न था वे गायानो नेगो नावार्थ वे ।

॥ आयोष्टत्तम्.॥

3

नहात पाम्य,॥१५। (रिटीस केंग) (सय्पासंबंधा के०) स्वजन संबंध जे ते जो(श्रपाण कर्)आत्मान(वरमस्क क । ग्वराम पाम्य, अथात् । सर्व एवी अर्थ-(संसारे केंं) संसारने विषे (सबान केंं) जड़ केंग) संबेधि के०) सर्व एवा पए। (मों केंग)

संसारने विषे अनादि कालधी ज्रमण करतां आ जीवे देव म-तवैनों साथे, पोताना माता पिता नार्ड नाय वमुं स्थानक हे. तथा जे बंधुजन हे, तेज बंधन हे,तथा जे विषयसुख हे,तेज विषहे. राखवो घटतो नथी. केम के जे तहारे मोह नावार्थ-हे आत्मन्!

2/2

```
(एगुमिय के०)
                                                                                                                                                                                                                                                              (एगो के॰) एकतोज
                                                                                                                                                                                                                                                                                             नगतरने विषे (बह के॰) ताडन अपने (मथ के॰) वधन अने (मरण के॰) प्राथानो वि
                              माटे एक पोताना आत्म राह्यपतुज साबु सुख मानीते, ते कृष्टि, राजन, इत्यादिकतु क
ए महारे ने तहारा श्रुष्ठ के,तेनेज तु मित्र जाणीने तेने विषे मोह राखीने घेतो हु ते कारण
                                                                                                                                                                                                                                त्रर्थ-(एगो के॰) एक्जो ग्रर्थात् सहाय्य रहित एवो जीत्र जे ते (कम्म के॰) ह्या
                                                                       112 411
                                                                                                                                                                      ह ए रण विसह । एगुबिय कम्मवेलविज्ञ ॥ए६॥
                                                            हिपत सुख मानीने अर्थात् तेने ड खरूप जाणीने ते सर्व पकी निर्दाच पाम्प
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               विसहडके०) सद्दन करे हे बती (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             उनायो सतो (न गमि के॰)
                                                                                                                               एगो वधइ कम्म। एगो वहवधमरणवसणाइ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                   नाराखीआदि कमेने (नयइ के०) झात्मानी सगाये वाये हे तया (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        ् अने (वसचाइके०) श्रापति तेमने (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        (फमबेत्तरित के॰) व
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      (नमदड् केंग) नमें हे ॥१६॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               क्तलान या जांत (
```

i) m कलोज कष्ट मोगवीश. अर्थात् तहारां करेलां कत्यने तुंज नोगवीश, पण ते कष्ट नोगव-गने बीजो कोड़ पण आवशे नही ॥१६॥ एकवानेज सहन करवी पडशे; पए जिने अयें एटले देहने अयें, खीने अयें, पुत्रने अयें, तथा संबंधीने अयें तें अनेक प्रकारनां पाप करधां हे, परंतु तेमांतुं कोइ पए तहारी वे-इनानो नाण तेवाने आवशे नहीं. एवीज रीते बीजा नवोमां पए। कमेवडे हमायेलों तुं, ए-नायाथे-हे जीव! जे वखत तहारो जन्म थयो, ते वखत तें एकलेज वणुज कष्ट सहन हर्च, पण ते बखत तहारु डःख मटाडवाने माटे, तने कोइए सहाय्य करी नहीं. अने जे रडगे. अने पठी ज्यारे नरकादिक नवांतरने विपे जहेंश, त्यारे त्यांनी वेदना पणा, तहारे गखते तुं मरण पामीया, ते बखते ते मरणानी वेदना पण, तहारे एकलानेज सहन करवी र है । १ ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए प्रमान मुलाइ आहेगा। जुंजिस ता कीस दीणमुहो ॥२ ग।

अप्पन्त्य सुहंड्फ

ड्डापं-हे प्राप्तिन (खन्नो के०) अत्म्य जे ते (ज्रहिय के०) श्रहित (श्रिक्ट) ने (म कुखड़ कि०) नक्षे करतो परतु आत्माज करे हे, श्रमे (हियोप के०) दिनते पर्ध, ते (खप्पा के०) के०) नक्षे करतो परतु आत्माज करे हे, श्रमे कि०) हित्ते पर्ध, ते (खप्पा के०) हित्ते पर्ध, ते (खप्पा करे) आत्माज करे हो विद्या करतो (ता कि०) ते कारपा माटे (खप्पा करे) आत्माज करे हो जे (सिपामुहें के०) ही तमुख बालो (किपा कि०) केम पाय हे? अर्थान् मुचीजान्तेने होप हो करता हेले हें ।।१३॥ नावापे-हे जीर। तु एम विज्ञाने होप हो करता होले हें ।।१३॥ नावापे-हे जीर। तु एम विज्ञाने होप हो करता विदे हें ।।१३॥ नावापे-हे जीर। तु एम विज्ञाने होप हो करता वात पाड़े, एम पारिने तेना होप हो करे हो।।१३॥ नावापे-हे जीर। तु एम विज्ञाने होप हो पार पार को हें ।।१३॥ नावापे के करता वात करे हो ।।१३॥ नावापे को हे तहार मावह पाय ने से हा साव ने हो आप होत पाय वाद पा पाड़े हे नावापे होप हो करवा हो। अर्थने के बात पात हो हो से होनासुख वालो पड़ेने, बीलानो होप हो करवा हो हो हो हो भी हमसे हमसे बालो पड़ेने, बीलानो होप हो करवा है हे हो हो भी हमसे हमसे ख्या ने से हमसे कहा है के, चेपरापी नहींने प

पमाडनारो पण था

माडनार पए आ आत्मा ने

210 आतमा हे. अने कामधेनु गायने पमाडनारो पण आ आतमा हे. अने नंदनवन तथा देवin. गुरमान हे. वली आ आत्मा कोड अपेकाये 4(1 ड:खनो कता . जा जात्मान हे. मुख एज रीते । हे, अने कोइ ज्यपेकाये ज्यकता तेने पमाडनारो

राग हेप करवो नहीं. ॥१७॥ यने सदाचार तया अमित्र पण आत्मान हे. आत्माल हे. एम जाणीने कोइना उपर HI

मुच्याग्वा

प्तादिक पिता, नाइ, खाः वव

हे प्राणिन्। (सयपागपा कं)

ज़ीव केंग

बहुआरन के

वत क०)

कि) ते जारने करीने उत्पन्न थर्यु एतु, जे (पावकम्म के०) पाप कर्म, तेने (तुम चेव के०) 🕌 तिरस्कार करीने, तथा मेहेणा मारीने, खने झनेक प्रकारनी युक्तिवढे करीने, एटंडो छद स्ती पेठे फूकी फूकीने तेछ खाइ जाय हे अर्थात् धोले दहाडे नरमा शेहेरमा ते सजनादिक चोर, तने लूटी लेडे अने ते धन छपाजैन करता लेपाय थयु, तेमा फलने तो नरकादिकने विये, तु एक्लोज नीगवीश पण वीजु कोइ नोगववा झावके नहीं माटे हे नच्य, प्राणिन्।। काड़क विचार करीने न्यायपी धन छपार्जन करीने तेने काड्क तो सारा मार्गमा वापरघ'॥१०॥ तु एकतोज (अणुहवासि के०) अनुनय करीश अर्थात् नरकादिकने विषे ते पापनु फल तु हरीने, तथा सिष्ट दिनस शरीरनु सुख पण न गणीने, धन छपाजेन कृष्यु, पर्तु ते धनने स्वजन तया ज्ञाति आदिक लोक, तहारो छपकार न गणता, छलटा तने द्वावीने, तथा तने टलाक ग्रनर्थ करी, तथा नीच सेवादिक घणा भ्रकतेन्य करी, तथा श्रनेक प्रकारे परदेशमा नमीने, तथा लडाड प्रमुखमा मरखात कट माथे लेडने, तथा पोताना स्वथर्मनो पण त्याग नावार्य-हे जीव।ते छानेक प्रकारे जीव हिसा.तया हुडकपट ठलनेद प्रपचादिक के

नावार्थ-हे जीव! तुं मोहने वश पट्ने रात्रि दिवस पारकी चिंता करधा करे है. के, महीए? अर्थात् हे मूर्ख। तने केटलो वपको देइए? एटले ने थोडो पण आत्मानो विचार नयी ् के, महारा आत्मानी शी गति थशे? एवो विचार लगार मात्र पण तुं करतो नथी.॥शण॥ स चितवन करे हे, परंतु (तह केण) तेवी रीते, तें (आप्पा के०) आत्मा जे ते (थोवीप)) थोडो पण (न विचितिन केण) नथी चितवन करवो. माटे तने (कि निषिमो केण) गुं अर्थ-(जीव केo) हे जीव! तुं मोहने वश् थड़ने (जह केo) जेम (मिंनाइ केo) आ महारां वालक जे ते. 'एटले महारां ठोकरां जे ते (आह केo) हवे (डिक्सिआड़ केo) डिखी-पीडा पामे हे. (तह के०) (जुक्सियाड़ के 0) महारां वालक जूरुयां हे. एम (चितियाड़ के 0) ते बालकोनुं तुं अह इकिआइ तह मु। कियाइ जह मितिआइ मिनाइ॥ तं हे. एटले टाहाड्यमां नेहवा पायरवादिक वस्त्र नयी, तेथी प

ग्रा महारा बाबक, नथा आ महारी की इत्यादिक खजन जुल्या है, हपा है, तथा तेमने अञ्च क्सादिक रु ड ख डे इत्यादिक ग्रजेक प्रकारनी चिताने साझि वियस करवा करें हे. परत हासामा नाग्न पामवाना स्व-(श्रज्ञो के०) शरीर थकी ज़बो हत्यु ? एवी थोडो मे महारा मारमानु सायन केटजु कर्सु त्रे विवस मध्ये केटली यिंड कस्यु ? एव 113 011 तुष 100 जीयो यमो भ र अर्थे-हे ब्रासम् ! (सचनगुर के०) क्ष्य नगुर । बान एउ (सरीर के०) व्या शरीर हे (ब्र के०) : निव्यध मुखी याय, एतु काम में रात्रि । धनो विचार तु करतो नथी केवल म्सादिक रुघ से हुत्पादिक धनेक सबधो । सरीर वानु एनु (सरीर मे॰) ह यने (सासयसद्यो मे॰) खणनगर कम्मवसा

गायत उ स्वरूप ते

(कम्मवसा के०) कर्मना आधिनपणायी शरीरनी साथे (संबंधो के०) संयोग थयो हे. माटे नावार्थ-हे जीव! तुं अतेय, अनेय, अजर, अमर, ध्रुव, अनंत कानमय, अनंत (इच के०) ए गरीरने विपे (तुप्र के०) तहारे (को के०) रयो (निन्नंयो के०) अनुवंध हे? एटजे र् श्ररिरने विषे तहारे शी मूजी हे ? ॥३ण॥

ड्यांय, ने विनीत्स (विहामणी) एवी वस्तुए जरेला चामडाना कोथला रूप थ्या शरीर हे. तेवा श्रीरने विषे हे जीव! हुं कर्मना वश्यकी वंशाएतों हुं. तेने विषे महाराषणु मानी ले-इने, एटले या शरीर ने हुं हुं. एम पारीने तेना उपर ममलजाव राखीने शुं करवा मिल्या हाडकां उपर रहेली चामडी, अने मज्जा एटले हाडकामां रहेलु मांस, अने मल मूत्र, ने हरीने, अनित्य, अने अशायत एवं, अने त्वचा, मांस, हाडकां, रुधिर, नसो, मेद एटले वीयमयः, ज्योतिःस्वरूप, पवित्र, आतिम, अञ्चल, नि-द्रोनमय, आनंत चारित्रमय, आनंत वीयमय; ज्यातिःस्वरूप, पावत्र, आतिग, अव्यक्त, ।त-लेंप, निरंजन, अने आनंदमय एवो तुं निश्चे नय मते तुं. परंतु आनादि कालयी कर्मना वशे

हछांत लाखीए ठीए.--जेम कोइ पुरुषे सरकारनो अपराध करयो होष, तेले करीने तेने स-

हेरान थाय हे? इहां प्रसंगानुसारे शरीर ठपरथी मूर्झी अतरवाने माटे, विचारवा जेतुं एक

कत मजूरी हाऐ, महा ड खबाइ बयीखानामा, अमुरु वर्षनी टीप मारीने पूरयो होप, तेम नने एण, तहारा कमें, पर्रे तखेली अजबि वस्तए करीने नरेलो. अने डापिमय रारीररूप . तु शरीर छपरवी मूची छतारय किं नहुना? श्वा श्वाधिकारने ॥ विक्रेम प्रकार कह्यु ठे, त्यायी जोड होवु ॥३०॥ तुमांपे कह च्यागड कह गमिही वेचारीश तो सर्व कल्पना मात्रज मालम पडशे 13.2 आ महारा शरीरमा शेव ने कियो ? हाथ इ तेवा शुरीरने विषे तु एगे ममत्व पारण करे वे क ह बाह्यणी इत्यादिक फस्यित नाम त्रभ त्रखेली श्रशुचि बस्तुए करीने नरेली, ब्र न्नोनी श्राह्मतियालो चामडानो 2000 कह त्याय कह चांलय। र्रे र १५ १५ अन्नन्नपि न याण्ड । ्.. नाला देखे हैं। माथु शेव? एम न्य सूत्रमा पट्ट, तहारा

होइ देवलोकमांथी, एम सड सडनी गतिमांथी आवीने नेगां थयां हे. तेरे पोत पोताना कुटुंचरूप सर्वे लोक पण, कोड़ नारकीमांथी, कोड़ तिर्यंचमांथी, कोड़ मनुष्यमांथी झाने

श्रमे-हे श्रात्मन्। (खषानगुरे के॰) क्षण कृषमा नाग्न पानतु एवु (सरीरे के॰) गरीर सते, तथा (श्रप्तपन्त सास्डिके॰) मेवना समूह जेगो, एउले जेम वायराथी मेथ शीप्र नाग्न पामे हे, तेम थोडा कालमा नाग्न पामे एगे (मणुश्रचने के॰) मनुष्य नवने विषे थी, ते कारण माटे तेमने तु एम मानी बेठो हु के, ज्या महारू कुटुव ठे, पण ते वस्तुगते तहारु कुटुवठेज नही परतृतहारु साचु कुटुवनो काम,दर्शन, चारित्रादिक घारमगुण है ॥२१॥ था, खायिकारने विशेष जाणवानी मरजी होष तो, श्री घावारागजी सुत्रना प्रथम शु-कमंने अनुसारे सुख ड ख नोगवीने, पोत पोताना करेला रुत्यने झतुसारे, चात्या जायडे एत तेमने राखवाने माटे तु अनेक प्रकारना उपाय करीश, तीयपण ते रही शकवाना न खणजगुरे सरीरे। मणुश्रजने सप्रपमलसारिने॥ । ज कीरड सीहणो धम्मो ॥३ गृ॥ तस्कथना प्रथम द्याध्ययनना, प्रथम छहेशामा जोई लेज्यो ॥११॥ सारं इतियमेत ।

देवादिक नवनी अपेक्राए योडा काल रहे एवो, आ मनुष्य (जं के०) जे (सेहिएगों के०) सारो. एटले पांच आश्रवयी विराम पामवा हप(धम्मो के०) अम्प्राणीत धर्म से ते (कीरइ के०) करीए. (इतियमिनं के०) एटलु मात्रज (सारं के०) सारहे. भीत् या संसारमां जेटलुं धर्म साधन थाय हे, एटलुंज सार हे. ॥ ११॥

नेम पगु हे, ते आहार, उंघ अने मेथन तेले करीने

त्यजुना

कराज़, एटलोज वार तहारो मनुष्यनव जाएावो. अने वाकीनो

नेरथेक जाणवां, एटल

ात्मानु साथन

मामान काढी ध

तरजाज आपणा

एट्टी वारनोज तहारो

ो है. तेम नाश पामता शरीरथी जेटली

। मनुष्य नव लेखानो हे. जेम कोइ घर बलतुं होय,

मांडेला घर जेवुं आ शरीर हे. तेवा क्लिफ शरीर वहे, जेटली घांडे तुं प्तव है, तेमां वली आ शरीर कृषे कृषे नाश पामे तेवुं हे. अर्थात

नावार्थ-हे नन्य जीव!

र जत्त्रणो ॥३३॥ यहो इसो हु सत्तारो । जड ॥ यतुद्धुरम्भ जुम्मडुकं जराडुक ।

यर्थ-(थरो के॰) यहो इति ग्राथयं। एटले ग्रा वात माधर्यकारो हे थपवा (भहें

कोड एगो परार्थ नभी के, जेड खरायक न होंग घर्षात् सर्वे परार्थं ड खरायक हे गुरु इ खरायक हे, ते देखांडे हे (जन्म डस्क के॰) जन्म सत्रयी ड ख, एटले था जीवने ज-डेंदपणमा ज्रानेक प्रकार गांड ख प्राप्त थाय हे (य के॰) यती (रोगा के॰) खनेक प्रकारना ज्याथि डासन्न थाय हे (य के॰) यत्ती (मरणाणि के॰) अनेक प्रकारे मरणनी वेदना थाय के॰) बत्ती (रोगा के॰) श्रनेक प्रकारना क्ष्क) हे जीत्र ! ए प्रकारे जीवनु सत्तीयन करवु आ ससारमा पर्यटण करता प्राधियो । स्वास्या १ न्मती गखते वणुज इ स थायने तथा (जरा इस्क केंग)

सवधी ड ख, एटले प-(जनुषो के), प्रापी ज ते

माटे (टु के॰) निभे (जञ्च के॰) जे ससारने विषे ।

श्र नावार्थ-हे आत्मन्ं तुं विचार कर्घ के, च्या जीव ज्यांथी जन्मे ठे, त्यांथी ते मरण प्रति केवल इःख्मांज वर्ते ठे. केम के, जन्मती वरकते इःख घणु पडे ठे. ते विषे शास्त्र-मां कह्यं ठे के, अप्रि वडे तपावीते, लालचोल करेली साडात्रण कोड सोयो, शरीरमां रहेली एवी साडात्रण कोटि रोमराय, तेने विषे चांपतां जेटली वेदना थाय, तेथी आठगुणी षड़ होय, ते वेदना मटाडवाना छपचारने बदले, उलटी तेने वधारे वेदना थाय; तेवा अप-ताना योनी यंत्रमांथी निकलतां, माताने तथा पोताने, अतुल वेदना थाय हे. तेवी रीते मरणांचे डःखोनी मध्ये, रहेला डःखोनुं मरणांचे डःख पण जाणी बेवुं. हवे जन्म अने मरण ए वे डःखोनी मध्ये, रहेला डःखोनुं वर्णन करीए वीए. बास्यावस्थाने विषे, ते बालकने बोलतां न आवडवाथी, तेने जे वेदना वेदना गर्नीन विषे थाय हे. तथा जन्मती वखतनी वेदना तो, कांड कही शकाय तेवी नथी; जेम जतरडामां घालेला सोना हपाना तारने, जेम बलात्कारे खेंची कांटे हे, ए दृष्टांते मा-के0) केश पामे छे, ने (संसारो के0) संसार जे ने (डाकों के0) केवल डाख़ हपज हे. खर्थात् वार करवामां आवे हे. जेम के, ते बालकते मांथु डःखतुं होय, तेनो च्या संसारमां कांड पण सुख नयी. ॥३३॥

| भवस्त्रामा पण्ण, ससारना समस्त सुखनी प्राप्ति यसी नपी न्कदापि पराषे एक सम्बन्धी प्राप्ति थापि थे, तेवामा बीजा बें ड क कन्य स्मान्ति । ॥पी, चोमासामा डरपत्र थएला झाझरे दश पदरदेडका बेड,प

काड़ पण चीज न जडवाथो, चीमासामा ठरपत्र पएला खाशर दश पदर दहका बंदु पी बक्षेरीनो पदी करें हे, तेगामा ते पढो, काड़क चुंहो पवापी जेवामा यीजु एक देहकु छोया जाप है, तेवामा ये देडका कूदी जाय है वही वेने पकडवा जाय है, तेवामा चार जता रहे र द्यातन सिष्टात ए हे के, खी, धन, युत्र, निरोगीपणु जगत्मा मान्यपणु, तथा हे, तेवामा तेमाथीन झणगारपु झणीचतच्यु, डचितु महाफट झावी पडे ठे जेम हे त्रना सुखनी इडा करवा जाय हे, तेवामा स्त्री मरी जाय, वली स्रोना सुखनी इडा ष हे, तेम ए हछातनु सिन्धात ६ ॰ ॰ ॰ ॰ । महोटी हुमेहीम्, श्रमे स्वजनाविकनु श्रमुकूलपणु इत्याविक यथा र

ाय,कदापि शरीरे साजो थयो, तो घर वली जाय,वली घर समु कराववा जाय,एटलामा चोरीनो, अपवा स्वजनादिकनो छपष्ट्र थाय,

म्यांथीज नोगवाय ? केम के, सर्व सुख नोगववानुं मुख्य सायन एवं जे शरीर, ते निर्वेल,

रोगी, कडूपु यह जाय हे. तेमज शाख्नमां कह्युं हे के,हाया पग विगेरे, अंग प्रत्यर घूजे हो. तया आंखे पूरुं देखातुं नथी. काने पूरुं संनलातुं नथी. नाकमांथी लीट नितरे हे. ने बांत पण

अवस्या राखिने सुख नोगववा जाय, तोपण नागवी शकातु नयी. तो स्वावस्यामां तो

न्या यहालो पुत्र थाने पुत्रो विगरे,ते मोसाने तिरस्कार करीने एम कहे ठे के,तमे जानामा-ना खाटलामां पड्या रहोने! नकामो लवारो शुं करवा करो ठो! तमारुं हेच्यु फूटी गयुं ठे, खातो एक तूटमूट खाटलीमां पडयो रहे हे. बली जवानी अयस्यामां पुत्रादिकने पालन पोष-पए कांइ अमारं फुटी गयुं नथी के,तमारु कह्यु करीए!! यती घरना खूणाने विषे खांशी खातो

ण करेतां, ते एवी आशाए के, तेन कृषाबस्थामां महारी वाकरी करते, तोयपण ते खी,

न्नामें हे, तुरे हे छाने फाटे हे. बली मुखेयी बराबर चोकुं बोली शकातुं नथी. छाने जोकने

नुरं थतुं जाय हे.तोयपण बया काममां महापण मोहोजबा घणो जाय हे, त्यारे पोतानी स्त्री

प्णा आनादर करवा जोग्य,तथा हांसी करवा जोग्य थाय हे. तथा दिवसे दिवसे नान पण

हाली उठे ठे. तथा पडी पए जाय हे. तथा खांसी, श्वास अने शरीर नुं निर्वलपणु बये हे. अंग

độ. परानव करे डे-शमे वली गड हे एगा, एक धना नाम माथनाह हनो निया भारत गय तेवो त्तीर्वासी नमरीने पिए यहा धनराज्ञी, अने पछा ए नि क क्षेत्र

र्कलेज नाना प्रकारना छपाये करीने,थन छपार्जन कर्छु. ने ते सघलु थन, डाख्याजां यंधुजन, तथा खजन, गापर्युं. त्यार पठी ते थनो, कालना तया मित्र, तथा खी, अने ताई आदिंक समें संबंधीतना तोणने अधे

10

करीए डीए, तांयपए ते वृद्धपए।मां बुध्दिनी विकलतापी, झपारी करेली चाकरीना जसने परेले, छलटो झ-

दिवस ते सर्वे सीयो, मेप करीने पांत पांताना जरतारने एष करें हे के, तमारा पितानी अमे घली घली चाकरी

खापीछ एटले ते मोसाना पुत्रो, बली ते खीयोने समजावीने मोसानी चाकरीमां बलगारे छे, त्यार पत्री एक

रही. अने सर्वे अंग कंपवा लाग्यां. अनं नेत्रादिकमांथी पाणी गलवा मांडगुं. त्यारे इलवे हलवे ते सीयादि-कोए, ते इन्दनी चाकरी घटाडवा मांडी. केपके, इन्द्राणुं तो वथवा लाग्युं माटे. यली ते हन्द, चित्तना अति-

नीसानुं वर्हतर क्टनानुं ने खमारा कर्ममां क्यां सूभी याली पुक्छुं इते? ते कांट मालम पहतुं नथी. त्यारे तेमना

गान बड़े करीने, हन्दावलाना डांसक्ष समुद्यमां पक्षो. बली ते बृष्टना दीकरानी खीयो एम कहे हे के, आ

ने स्नान करावधु, तथा जानन करावधु इत्यादिक जे काले जेम कर्नु घटे, ते तेम निरंतर करती हती. तेम करतां करतां केटलाएक दिवम गया, पत्री हत्वपणुं हव्चि पांग्युं. एटले आखा शरीरनी इंडियो स्वाथीन न

हता पठी कोई कार्य प्रसंगे, ते छन्दनी खोयो पोताना सामीनी चाकरी करती हती. तेमां पण शरीर चोत्ती-

अग्रेसर करवा हे. तथा तेम हो अमारो बहु उपकार करयो हे. ए रीते पोतानुं मारु हुनीनपर्धु,ते पुत्री जाणावता

मतामां कुशल हता. अने मंसार संबंधि सघला कामनी चिंतानी नार, तेणे ते पुत्रो उपरत्न निरुपो हतो.

तीयपए ते पुत्रों एम बोले छे के, अमने था पितात्रीएन आवी मुद्र अनुसाने पमाज्या छे. तथा सर्वे लोकता

ारिपाकपणायी छन्च अनुखाने पांम्यो. ने तेना सघला युत्रो, तेनुं सारी रीते पालन पोपण करवानी योग्य

() ()

do

पासे ने मासानी र पोको प दिनमें पुत्रे पूज्य स्मा भारत स्मा प रीने क्यारे तस्तु ड क माडु निया ने बार किया ... सीटी के आपणा सत्तान अन पत्तु नियो में बार किया ए रीते रृष्टाश्यानु ड ल जाएानु पनस आपे हे गादे तपने जो अमार कत्यु मानवामां न आवतु होय, तो बीजा कोइ माएस । मेचारीने, हे मोसाने गहु पराजव ब नहोता मानता, पए इन जलमारीन मा-यु म् माम् मारी रीते असाब्या , यन्ते सबर पड़शे पड़ी ने पुत्रीष तेमज न माकरी पाय जे ? स्यार ते 1 E मत्त्रज्ञानो नथी नागी क. तमे अमार कत् मगम : नीसाना अदगुए पोताना पतिना 1 हिबानी बात नथी

Ŧ

नस्यु हे, ते नाबीए :

यतों ते हर्ष्यायस्पामा ड खमा यखनमु बांजु काव्य, राकामा

हाए संभाति क्षमेव हसते, वक्तं च लालायते।। लिता, दन्ताथ नाथ गता ॥ शाद्लानिसी डिनइतम्.॥

र्टले श्रीर करचोलीं चले हे. अने वाक्यं नेव कर्गित बान्यवजनः पत्नी न श्र्यूपते। अर्थ-वृद्धावस्थामा

होय, त्यां न मूकातां बीजे ठेकाणे मुक्वा धार्या ह एटले ज्यां पग म

प्ण विकल थाय हे,।

मुक्ड जाय हे. छाने दांत पण पडी जाय हे. खने खांखे पण फांख खाववाथी बराबर दे-

शंयवजन पण, ते छ छनुं कत्युं करता नथी, अने परणेली खो पण, सेया करती नथी. माटे

जराए (स्ववस्थाए) करीने परानव पामेला पुरुषने धिक्कार थाने !!! केम के, पुत्र पण

व्यंत्रे तिरस्कार करे हे. माटे ए व्यंत्पणानुं जीवतुं, ते केवल कष्टरूप जाणतुं. ॥शाः

वती कह्युं हे कें,

यमक बाप प्रकट, करीने, तेनिनी निंदा करें वे

मुखमांयी जाल चूए ठे. वली

खातुं नथी. अने रूप पण दिवसे दिवसे परतुं जाय हे. अने १

पूर्वे एटले जगनी खब्र्यामा,धमें कर्षो हतो,तेथी केटलाएक लोक ते 7 इन्ने। निर्वाह करता हता, तेपख आ कृदारस्थामा,तेतु डु ख नाश कर गने समर्थं पता नयों जेम कोड़ माणस नौकामा (पहाखामा) वेशे होय, तेवामा ते नौका नर देरिया वच्चे प्राणी जाय, त्यारे तेमा ड खी,थाप हे इत्यादि विस्तार, भी त्राचारागजी तेथी मरएानी वेदनातु ड ख अत्यत जाएावु ज़ीबो जीबबुबाठे हे, पए क्रींड जीबो मर्जु, इन्नता न्यी भाय हे तथा बृ हा गस्थामा प्राये,सींस रोग जरपंत्र थाय हे, तथा जे बृद्ने जोवाथी 1.कुट्ने पूर्ण सहाय्यता न मजवाथी ः ११५ क्षत्राभिष्यसूष्ट्रमम्भाष्टि गार मन्ये जीवारि इस्ति । जीरिस् म् तुत्रथी जाएवो ब्ली,शास्त्रमा कह्य हे के,, गए। करए।। छत्पन्न थाय, तेरो ते बृद्ध ध ड्यथे-पूर्वे व्वारस्थानु जे ड स । तदेज शास्त्रमा कह्यु हे से, सवे ज़ीतो विना माएसोने, जेम ड ख थाय, रटलाज माटे नियंथ महामुनियो वली एज अधिकारने विशेष जाणवाना अधि पुरुपोए, श्री आचारांगजी सूत्रमांथी

जोड़ लेवुं. वली गाथामां च शब्दनुं महण करधुं हे तेथी इब्य संबंधीनुं पण घणुज डि:स हे; ते देखाडे हे. आये डाःखं न्यये डाःखं । यिगर्धं डाःखसाधनम् ॥॥॥ अर्थानामर्जन डःष । मर्जितानां च रद्येषे ॥

गहिःप्राण, तेमां अंतःप्राणतो प्रसिन्ध हे. अने बहिःप्राण ते धन हे. केम के, प्राण जतां अर्थ-आ संसारने विषे मनुष्योते बे प्रकारना प्राण छे.तेमां एक खंतःप्राण, ने बीजा

जेवुं डःख थाय हे, तेवुंज डःख थन जतां पण थाय हे. एटलाज माटे क्रानी पुरुषोए खा डःखनी पंक्तिमां थनने पण गण्युं हे. केम के, (खर्थानां के०) धन मेलवतां पण डःख हे, तेमज छपाजेन करेला धनने साचववामां पण डःख हे. माटे धन खाब्ये पण डःख हे, अने धन गये पण डाख के अर्थात् ते धनज डाखदायक के माटे डाखनु साधन एवा ध-संबंधी डःखना

नने धिक्कार थाने!! ॥४॥-ए रीते जन्म, जरा, रोग, मरण द्यने धन, ते

विचार करवोः पण अंथ परंपराष् न चालकुं ए उपदेशः ॥ ११॥

ध मृत्य रदिते श न गापवता तहारा म् केंग) पश्राताप पर्म ॥ मधा (जाव केंग) हे०) नयी प्रकट पट्टे, तथा (गयु तथा (जाव व) नपी प्रकट पया, तथा (जाय के) ज्या सूधी) मधी ध त १५ जाव न र आर्थ-हे जीव।

ार रूप रात्रप,कापारूप नगरमा

तहम राष्ट्रमीए नक्षण नथी

धेरो नथी वाल्यो, अने ज्यां सूथी कालना सपाटामां बरोबर नथी आज्यो; त्यां सूथीमां तुं जेटलुं आत्म साधन करबुं धारीश, तेटलुं बनी शकशे. माटे जेम बने तेम प्रमाद र्ताने जलदीयी धर्मसाधन कर्य. ॥३४॥—चली नहेहरिये पण कह्यं हे के, यावचानेच्यशांकरमांतेहता, यावतक्यो नागुपः॥ यावतस्वसामदकलेवरगृहै, याबजारा दूरतीं । ॥ शादृत्तविक्रीडितद्यम्.॥

क्र

ययुं, त्यां स्थीमां पंजित पुरुषे, पोताना कत्याणने अये महोटो प्रयत्न करवो. अर्थात् रा-त्रि दिवस परलोके मुख थायः, एवीज साधंनमां प्रवेतिये. केम के, कोड़ एंबुं विचारे के, हालतो अर्थ-(यावत् के०) ज्यां स्पी आ श्रीरह्म घर साजुं हे, तथा ज्यां स्पी जरा नथी आवी, तथा ज्यां सूथी इंडियोनी शिक्त नाज्ञ नथी प्रामी, तथा ज्यां सूथी आनखें पूर्न नथी मोदीप्ते जनने हि क्षेष्तनने, मेत्युरांमः कीह्याः ॥३॥ आत्मश्रेयसि तायदेव विज्ञपा, कार्यः प्रयत्ना महान ।

जवान अवस्था हे, माटे हालमां संसारनां सुख नोगवीने, पठी वृष्ठावस्थामां धर्म साधन

♦ सटी भ

"यात्रचद्र जरा.

हरीतु, पणा हे सझाना। जेम (प्रोदीने के०) पर आतिशे बलवा माड्यु, त्यारे जे कूनो खो-गर्मसायन करी, गु, एम पारबु ने सिन्द नहीं रकेम के, वृद्यावस्थाना र्गानाविक ड खयी, धर्म साथन बनी शकतु, मधुंन अर्थ-हे जीव ! (जह केo) जेम (गेहमि केo) घर (पजिने केo) बताया माड्ये (न सक्तर केंग) ताली छ्यम करवी, ते केवी कहेवाय १ एटले घर बलवा माख्या पठी कृषी खोसी प के०) कोइ पण, एटले समर्थ होप ते पण (कूर के०) कूवाने (खिणिड के०) ्रक् राग्ना १५ १७ धम्मी कह कीरए जीव ॥३५॥ हु व प स्विपित्त न सक्कष् चली एअ वातने मुल प्रथमार पए। जणान छ हुन्। वे माटे पर्म सायन करवामा प्रमाद न करवो ॥१॥ वलता परने हहाडी घर होलवायज नहीं तेम,वृष्ठावस्थामा ब्यु १ जह गेहमि पिलिने। ए ११ ११ तह सपते मर्धे । अर्थात् कृवो लोदी पाणी (कोड़ के इसाने समथे थाय. (तह केंग) तेम (जीव केंग) हे जीव! (मरणे केंग) मरण (संपने केंग) प्राप्त यए सते. एटले मरण नजीक आब्ये सते (यम्मों केंग) धर्म जे ते (कह केंग) किये प्र-बाने तरपर थयो, पए। हे मूढ जीव! तुं एटलुं विचारतो नथी के, हवे महाराथी शुं बनवानुं है! जैम ज्यारे तरपथी घर वलवा मांडचुं, ने तेने होजिववाने माटे, जाएं। कूबो खोदी पाली तने कृतरानी पेठे, तहारों स्त्री पुत्रादिके तिरस्कार करवों, त्यारे तुं पराणे धर्म साथन कर-विचार, ते व्यथे हे. एम देखी, तु विचास्य के, यमें सायन तो नानपण-क्वाना कांवा चप्र नावार्य-हे आत्मन्! ज्यारे (जवानी ग्रवस्थामां) तहारे यमे करवानो ग्रवसर । यारे हुं बीजे चाले चढी गयो, एटले विषयी जीवनी संगते पशुनी पेठे फोगट झर गमाबी. अने हवे ज्यारे श्रीरनी शांक कीएा थवाथी, नकामा जेवो ययो, अने बक्षे Ē, यपवा लाकड़ पड्युं होष, तेमां (कीरए केंं) करी शकाय? ॥३५॥ गहीने, ते बलतु पर होज्ञ ईत्याविक विच ाज, अभ्यास करतां मि साथन करवाना 27

रहे, वए कले करीने घसाराभी छडा काषा पढे हे वछ तेवी काषी पाडवाने, कदापि लो॰ तनी साकझभी खाखो दियस घसे, तोषपष, तेवो कापो न पडे तेम तु वाल्यावर वेषय कषाय नुठा करवाने माटे, धर्म साथनमा वर्नवानी अभ्यास करंग । खणरमणात्य च तारुन्न ॥३६॥ सकाषारागसारस रूवम ऽसासयमे

ञ्चर्य-हे ज्ञात्मन्! (एय के∘) थ्या (रूव के∘) यरीरनु सुदरपणु जे ते (श्रतास्त्य के॰) _{धन} हे केम के. रोगादिक करीने सनतकमार चक्रवर्सिना ग्ररीरनी घेंने नाश पामे ते<u>व</u>

बह्युलया चचल के॰. नाथ का हानी (जाए केर) जगत्ने

सरिस के०) सध्याकाजना नाना प्रकारना रग सरख, एटले सध्याव (तारुझ कंग) ाता, स्थामात्र दखार ध्यने (च केप) वर्षी (हाजमात्र

तिवित पण पोडा कालमा नाश

पेरे चचल हे

द्रप सतानी

रोग्ग तरा गोषु गुणाची,गण्ने पकार्षिष पुत्रुत तम गापु रचयुलान्यु दिगाए हाथु समे सामन्त्र हती सामन्त्र ता स्वान्त सम्पेत्रमा कराग गाँव पद्म समित्राली हर्गा सहो महित काला करूपी स्वानियोग हरोगय दम्भाग पर्पत पत्म सम्पेत महाम प्रमाणना महितान हितान हर्गा महितान कर्मा कराग महितान हर्गा साम प्रमाणना महितान हर्गा महितान हर्गा महितान हर्गा महितान हर्गा महितान स्वान्त समित्रमा हर्गा महितान स्वान्त स्वान्त साम स्वान्त सम्प्रमाणना मितान सम्प्रमाणना स्वान्य सामन्त्रमा स्वान्त स्व गझासे रियक्षे मनाशुक्षारता धन पुष्मी गया सनतनुषारमा देह ने बंजा धज्ञ जार्या हता,मैने ध्रामार्थ-गोरिक परार्थोनु माप रिजेपन ह्ये एक नहाई परिष्य पहेर्यु हतु, छन्ने त कात्मनन करता मारे येटो हतो तुष्प इत् । कर मेता सुधम खनामां में कपनी स्तुमि षई, ते बात कोड़ में देवोंने रची नहीं, पत्री तैत्र ने धाका तमामी निक्य आरक्षा देनता, ततु मनोब्र धुम, कानमणी काषा अमै चछ्ता मेरी कानि,माइन बहु आनद् हरीने, में राजमनामां यानी मिशामन पर, वामरजमभी अने तमान्तायां रियोग बांसा रवा न(नयाइ रहो ने) त्या पेला देनहान पाना निम फ्वे आरीश, पम नहीन स्परित नास्या नपा स्पार पत्री सन्त्रुयारे छत्तम अने धापुरप गयाज्ञकारी पारण कर्त्यां पामुबानु मग्य मधिषा,धुनमा,गिष्टानो थन अन्य सत्ताषदो षोग्य आमने नेमी गषा ठ. राज प्रनेत उप गास्मी नेम पानानी काया, रियोप यान्यीने छपनाने तेम व

अस्मि जरूपन रूप गर्मेरी आनंद वामवाने बर्ने त्राएं रोन् पास्या है। पूरा स्तर्पमां तेज्ञव मागु गुणाव्यु

क्षत्रार्तिष् पूनुषुं अहो ब्राह्मणो! गट् बेला करतां आ बेला तमे जुदा क्षमां मांधु धुणाच्युं,ष्तुं शुं कारण ठीते मने

अने अगुचिमय कायानो आवो प्रपंच जोड़ने सनत्कुमारने अंतःकराणमं वैराग्य उत्पन्न ययो.मे,केबल आ सं-त तुल्य हती. पए। आ वेलाए फ्रेरक्ष डे.तेथी ज्यारे अमृत तुल्य अंग हतुं,त्यारे आनंद पाम्या हता. आ वेला फेर तुल्य छे, त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए डीए ते वातनी सिष्टता करमी होय तो, तमे हमएां तांबूल थुको।त-तहो. अवधिक्ञानानुसारे विमे कद्युं के, हे महाराज! ते रूपमां अने आ रूपमां भूमी अने आकाश जेटलो फेर पदी ायों हे. चक्रवांतिए तेवात स्पष्ट समजवा पुडाबुं त्यारे प्राह्मणे कार्युं. आधिराज ! पथम तमारी कोमल काया आमृ गपनो जे जाम, तेमो आ कायाना मद संबंधनुं मेलवए। थवाथी ए चक्रवार्तिनी काया फेरमय घड़ गइ. विनायी त्काल तेना छपर मक्तिका वेसको अने ते परथाम प्राप्त ययो. सनत्कुमारे ए परीद्धा करी तो सत्य ठरी,पूर्वे कर्मना

पोग्प नथी.एम बोलीने,ते छ खंमनी प्रमूतानो त्याग करीने चाली निकल्पो. एबुं जाएीने आईं ममत्व न तिअसचावसारिं बुन्नसु रजाव लग्नीन विस्यसृह जीवाण गयकन्नचचलान

सार तजवा योग्य हे. आवीने आवी अजुची खी, पुत्र मित्रादिना शरीरमां रहेली हे. ए सघछुं मोहमान कर्ष

× (जीवाएं के०) जीवोनी (लडींच के०) लक्ष्मीयों जे ते (गयकन्न यंचलांच के०)

तिज्ञ के०)इड्ना पमुप् (ञ्राकाशमा बीजा पीजा पनुपनी ब्याहतिवाद्या वादता देखाय होते) सरखा चचल हे ए हेतु माटे (रे जीव के०) हे मूढ जीव।(बुझसु के०) बोध पाम्य बने (मामुप्रके०) मोह्र न पान्य केम के, फ्रीथी आवी मनुष्य देहादिक सामग्री मत्तवी घ-णीज इहोन हे, माटे धर्मने विषे बोध पान्य ॥३॥ चचल हे केम के, थोड़ा काल चपर तें जेनुने मीटा धनाह्य दीवा हता, तेनुन कमना व-ग्पी वही जीवोना ग्रन्दादिक विषय सुख पण्, इड् धतुपनी पेठे एटले खाकाराना जीला तिला रगती पेठे ग्रीघ नाग्न पामे तेवां ठे एटले वस्तुगते विषयना सुख फाफवानां पाणी (बिसयसुह के॰) विषय सुख जे ते (तिद्यसचाव सा-नावार्थ-रे छातमन्! जे लक्ष्मीयोने देखीने तु महकार पारण करे ठे, के, खा लक्ष्मी एक्से पोडा कालमा दिष्ट् पएला, तहारा जोवामा खावे ठे, माटे लक्ष्मीयोनु स्पिर जीवता सूर्यामा महारी पासेयी जवानीज नथी परंतु ए तक्ष्मीयो हाथीना क नवा, तया धूमाडाना वाचका जेवा खसत्य हे,माटे हे जीवी वने तथा लक्ष्मीने श्रसत्य जाणी, श्री जबूकुमरनी प् ापीता कान जेवी चचल हे छाने।

कथा. ए

मोनपण पारण करी रहा. त्यार पत्री माता पिताष्, आठ कन्याजेना पिताछने कह्युं के, अमारो पुत्र है-्मिं प्रमे पांचमा त्रसदेवलोकने विषे तिष्कज़त्यक जातिमां महाँदिक देवता हतो, ते त्यांथी (देवलोक्यी) च-मुधमं ग-राजगृही नगरीने विषे क्तषत्रदस नापा शेठ तेनी थारणी नामे जायीनी कुखमां, जंदुरवामीनो जीव, जे माता हि गिता !! मने पठी माताए स्वप्नमां जंब्हक दीठो, पठी ज्यारे ते कुमरनो जन्म थयो, एषरनी पासे घमेडेशना सांत्रतीने बैराग्य पाम्पो त्यारे श्री मुधमे स्वापीने कहुछु के, हे जगवन् ! हुं चारित्र पए। ते ह्यीयोनी गोलो लागी जात, तो हु अवतिष्णामां मर्ए पामत! एंडु जाएी श्री मुधर्मस्वामीनी पासे पाजो आवीने तेमां चाया जनमा जंत्रथा उपहेलो पजर, पोतानी पासेथी निकल्यो देताने, निचारमा लाग्यो के, हमएां जो मने आ लेड्य, पए पहारा माता पिताने पूटी आयुं एम कहींने पाटो यर तरफ आये टे. एटलामां मार्गमा तेने परणुं; युतान अनस्था पाम्यो, E, एन। आठ कत्याच साथे तहारं सर्गपण करें हु छे, माटे तेने पर्णाने पंठी दीका लेजे साथे नोग नोगडुं नहीं. एवो त्याग करीने, फरी घेर आती माता पिताने कछुं के, ह ते सुपरे समितत मूज ने बार यत है, ते बारे यत लीयां. प्टज़े झंगीकार करवां. णी डकर छे. एवी शीते घली घली समजाच्यो, तीपल जंब्रुमारे मान्युं नही. त्यारे ो सुधर्मस्तामी पासे दीका लोज. सारे माना पिताए कस्यु के, त्ती मर्योद्रा राखी के, कदापि माता पिताना कहेगायी ख़ीपो परएाबी पडे तो, प्तु नाम टीथुं. अनुक्रमे यारे तेनो जन्म महोत्सव करीने जंबूकुमार । पुत्रपणे आवीने जपन्यों. स्यार् । ग्राज्ञा यापो, हं भी

म्स्नी स्रोय हो जहां पर्सामा, पस ने क पार्जनो त्याग है ने मानती मई घाउँपा कर्या लाग्गा क, अमे ानीमां याने क पा प्रश्या तापए। दोकरी ्य, हुतो मनात दीद्या । रे शीयोग सम्मे राग्यान् षयो डे माटे नमारे हीकरियो परखारवानी ह्मीने जो टीका ले, ना अमारी तेहनी साथ व्याननार नथ

त्मक्षां दीक्षा सन्ना नही हम्पा नहि तो नप्त्यीना न्याप प्रधार गनगीय कुछ, ते कभी सीत नीपजे पडी मेराडची, पोतान सासर गयो पत्नी ज्यारे पीताना मासाने पुत्रगु है, घ्या शहादी काइ मारवाड द्यांना फर्पेशी, पातान । मारा रीटला करीन, थालपां मुक्या जे मनारत द्वाप मन्यु है, ने सारी रीत र ग्यांथी जारी ! त्यारे मालाय जेम काइ मारवाड यारे साताये धेन्नदो ग ቒዻቝኯኯኯኯኯቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑቑዀዹቑኇዀዹቑኇዀዹቝኯኯኯኯኯዹቝ

चरोबी नाल्या लाग्या

पत्तम खेत्र याण्यु हतु,

P No

ते लिलितांग कुमरने, खालमां छतारचा. अने विचारथे के, पची कहाडीश. हवे राएतितो राजानी साथे रम-वा लागी गई. अने लिलितांग खालमां जूले मरतो, कोट अन्य आवीने एठवाडी नांखे, ते खाय, अने ए-पाणीनी साथे लालितांग पण, तणातो तणातो नगरनी महोटी खालमां जइ प-माता पिता जह खालमांथी कहाडी घेर लेड गया. संसार संबंधी जोग विलास करवा लागी. पटलामां राजा पए। त्यां आञ्यो. त्यारे जयभांत थइने, राणीष तो पनी पस्तायो!! एवी खीयोनी वाणी सांजली जंबुकुमरे कह्ये के, पूर्वोक्त दृष्टांते पर्याताप नहीं करं. परतु जो नही समजयो तो, तमेज पस्तावो करशो. हुतो लिलितांग कुमरनी पेठे तमारा फंदमां नहीं पडुं. तेनी क-एक नगरमां एक शेठनो पुत्र लालितांग कुमर एवे नामे, महा रूपवंत हतो. तेने उंनी खेती करेली डे ते कपाबी ले, पड़ी शेलडी बनावले. एडुं लोकोनुं कहेबुं तेऐ। मान्धुं नहीं, अने शेलडी त्यारे पथाताप करवा लाग्यो, तेम हे स्वामित्! तमे पए। उतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करोठी ावी. ते थोडी जगी, एटलामां क्वानुं पाणी ख्टी पड्युं, तेथी जं जगेली शेलडी हती, ते पण सुकाइ गइ. था कहु डुं ते सांचाली. एक नगरमां एक योठनो पुत्र लालितांग कुमर एवे नामे, महा रूपवंत हतो. एक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे, तेणीये दीठो. त्यारे एकांते बोलावीने, तेनी र ड्यो. तेने लोकोये देखीने, तेना माता पिताने जरु कखें. बाल उघाडी, ते बालना

त्यां मूजी खाइने पही रह्यो, शरीर पीछे पडी गयुं, हाडकां नीकत्ती आञ्यां, माता पिताये घाणा

नेतारिक मणनी जागरों करणा त्यारे कड़िक बावनेत वर्षों. चरी जोश्योषपार करतो नरतों पणा दिषम देव ग्रीर ग्राम कर हो में स्वार कराने प्रमुच परीने बजारची करवा तिकटमा, नेने राखीये देवीन बाजा को ने ग्राम क, हो में स्वारा पर्तमों एड नहीं ।इने छाड़ितता कथा ।। एसी रीत आंठ बीयोप, जुरी तुदी आज कपाठी, गमाद्वा ग्रुपनों राखा न करते, न जाजपी जब्दुपरने कहीं। अने जब्दुसर एख करी समानों अमारता कावनारी जुरी जुरी जाज कपाड़ आंग्रे और्षोंने कहीं। ने क्यांस इर्ग ग्राम पराना हा, ए॰तामा अक्षुमान, पाणि घष्ण उपर गुणा हो थिता इत नगी, तोपण पूनी रिकार आल्गों के, प रोते मा मजान दीहा सोनी ड, को आ पोर खोतों तो घष्ण्य दोड़ नजे, ता लोक कहव क, तृत्र जारछी। पूर्व पन सार बोर लोको तेह गया, तेषी घ गोणु मुझवे ड पूनी सिंव पंभी मिंदा यज वे पाल सारा,न-सी पूनु विज्ञान सकार गुणा लाग्या, तेषी घी तो पोरोना पा स्थलाह गया। त्यारे अनुतारी रिपार यथों के, आत गु यथु ' एगरे तारा नाम्या तो, जाहुमले जागता दींग पारी मनते जाण्युं के, प्रांप पिया संसारती असारता कासनारी नृती जुरी आज कपाछ आजे श्रीपोने कही े ने क्यां छ इप्ते क्षप करताना जुरुस डामी नदी जा जालवानी मरती एत्य नो श्री जकूनरिज्यां जोड खेरण त्यारे सीपा मिशाप पीमी एकाम् एक कताने गार, गीरपे पोत्स गार्थ नहेने, जकूक्षत्ता पासी आज्या होते सरते रियाना षतानी पनी बाजी पानग एससी एक मनतों चार, चीन्ते चारन गार चहन, बकुक्तरतों पापी प्रांच्या है। सरमाहिसी निर्घा फूरी तेवी गरने विद्या आधी गर, पानु बेकुपाने निष्ठा न पापी जुने सरात्री रियागी संज्ञार उपारीक, नगणु भेष सीमापरीरोती गाँबियों पीपी, तैते दीड़ने न

दिया पटार भाइनी पए

पान कांट्र पट्टा सिया

मन पापा न्यार अश्रेष्ट नम् क, महारी

D X टीपाना स्वादमां मत्र थयो थको, पोताना उपर पूर्वोक्त अनेक जातनां डःख पड्यां ठे, ते सर्वे भूटी गयो. ए-टलामां एक १शिव्याथर आवीने कहेवा लाग्यो के, हे पुरुष! तहारुं डःख देखीने, मने दया आवे छे, माटे काडवा बांडु छे. त्यारे ते पुरुप बोल्यों हे तो चालुं, ए रीते एकेक टींपाना स्वादमां ली-मधपुडो ठे, तेनी १०मक्तिकाछ छडी छडीने ते पुरुषना शारीरने, चटका मारी रहेली छे एटलामां ते मधपुडा-साधे विमानमां वेसी चाले. मांथी एक मथतुं ११टींषु टवक्युं, से पेला पुरुषनी जीतने जह लाग्युं, त्यारे ते पुरुषे छनुं जोवा मांडचुं तो तेषो दीह के, मधपुडामांथी ए मध्विड पहेंडे; एंडु जाएति ते टींपानी नीचे महोडु छघाडुं राखीने लटक्यों) अने ने शाखाने एक एकालों अने वीजो एषोलों, एवा वे छंदरो कापी रह्या छे. वली तेनी छपर एक मधमांखीनों पए मोहं फाडीने बेठों हे. तथा ते बहना थडने हाथी धूणांची रह्यों हे. तथा ने शासामां ते पुरुप लटके हे, जबूरुमरे कधु के, हे मजवा! संसारमा सुख छेज क्यां! के, जेने हुं जोगव. संसारनुं सुखतो मधुविड्या समान हे. तेनी लालचे जीय संसारमां राजते हे. जेम कोट एक १पुरुप भूलथी जजह श्थरवामां जह पड्योतेनी प-जवाडे एक श्हाथी दोड्यो, त्यारे ते हाथीना जयथी नासतो जागतो, एक बढनी धशाखामां जञ्जिती र-बो. ह्ये ते शाखानी नीचे, एक ५कूछ छे. तेमां च्यार इसपे पोतानुं मोहुफाडीने बेठा छे, तथा एक अअजगर नथी. महारे तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार हे. एवो धर्मोपदेश दीथो, त्यारे प्रजये कहर्थं के, आ नवी प लेली खीपोनो त्याग करीने, हं दीका या बास्ते ले हे? संसारनां सुख जोगवीने पही दीका लेने. पनी है आपनी तने डि:खमांथी एम एक टींधु आन्धु, बली पए कबुं के, या बीलुं टींधु आबे आववा आन्य ! महारा १ शिवमानमां वेसी जा . है विद्याधरः! आ एक.रींषु मधनु महारा मुलमा

D X

ত ত

عاد ما د ماد باد ما . अष्णु क एतो प्यांत्र मूलंडे, ⁽ की विद्यापर तान्पा गयो ग जाएं। यम्रो, ते विकट स्थानन गेंड नही, त्यारे विज्ञापर उत्म अत्सव . तथा मनव पता, पविष निकटायो नही नुस्ता

जपनय यएो प्रसिद्ध छे, तापए। ।किनित . र्घातमा मिन्द्रति जा मग्री ५ जन्म ध याञ्चलाष्ट्रप शाबा एक्ष के अन्ती ३ कालक्प हाथी वेष्ष मुख्रूष मथतु टापु १२ मुगुरुष् त्पायक्ष सर्वे अ नरक्षक्ष्य अजगर जीत २ मतारक्ष अटबी

مالاية لايلا لا د

```
حا ا
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            मते हे. अने प्रातःकाले, तेज पहित्यो पीत पाताना कर्मने अनुसरीने, चारेदिशा तरफ डडी
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       जाय हे. तेम आ संसारने विषे अनेक प्रकारना जीवो चारे गतिमांथी आवीने, आ मनुष्य
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              जावार्थ-जेम संध्या समये अनेक प्रकारना पहियो, ज्यारेदिशा तरफथी आवीने एकवा
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               लोकोनो समागम तथा पहित्योनो समागम जेम थोडा कालनो हे, (तहेव के०) तेमज
(जीव के०) हे जीव! (सयणाणां के०) स्वजननो (संजोगो के०) संयोग जे ते (खणनंगु-
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             र्टले मार्गमां जनार
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   The state of the s
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       ग्रर्थ-हे आत्मन्! (जह के०) जेम (संफाए के०) संध्याकालने विषे (सज्याप के०)
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              (पहें केंग) मा-
र है है है है है कि पहित्राण ।।
जह संजाए सन्जणा।ण संगमी जह पहे त्र पहित्राणं॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   रो के ) क्णानंगुर हे. एटले क्लामां नाग् पामवाना स्वनाववालो हे. ॥३०॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  हियोने (संगमों के ) संगम थाय हे. (अ के ) वती (जह के ) जेम (
                                                                                                                                                                                                                                                                                                         रंग । तहेव खणनंगुरो जीव ॥३0॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    िने विषे (पहित्याएं के॰) मार्गे जनार लोकोनो समागम थाय हे. ।
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               सयणाणं र
```

कर्मा-तमाथा आवला, अने एक धरमा रहेला एवा जीवांना नाम पण, । कोड़ माता कहेवाय हे, कोड़ पिता, कोड नार्था, कोड़ नार्ड, हे कस्प्रताए करीने नाम बराव्या हे तेमा तु महोटो मोह धारण से ड सी भाय हे, परत हे मूढ जीय। तु एटजु ोसबय मानीने शु कर्गा हेरान यह तु º माटे हे गामयी द्यावीने ख्रावीने, एकना थाय हे, त्या पीत गेताने योग्य गतिमा जता रहे वे तेम थ्या ससारी रहेता नधी वली जेम घारे दिशाएथी ग्रापेला मसुष्योना नाम, आत्म साथन रहता नथी. र 텔 ग्रायुष्य पूर्ण करीने, सुखी, अने तेने ड खे ड खी भाय हे, ' नातु स एक वेकाएं। वेसी जुरा कल्पा हे तेमा कोड़ माता कहेवाय हे, कोड़ । पुत्र, कोड़ युत्री इत्यादि कत्यनाए करीने नाम डराव्या · कर्मानुसारे सुख इ ख नोगवीने, पठी पाठा पोत ^र गतिमाथी नवमा एकवा थया हे खने तेज जीवो, पोतानु , कोड़ कथि प्रत्ये जता रहे हे, पण तेते । सम्पन साचा गतिमा जता रहे हे तथा जेम मार्गिने । गतमाथा जीव पण, कोइ कपि गतिमार्थ . मध्य एवा जूठा सवधने ्र काइ कोइना फा र जुदा है, तेम चारे नेगा थाय हे, पही त्या स्थानक

मु स्व

Ē बु

म

उदमनत था! ॥३६॥

D N

दियहा ज धन्मराह्म ॥ जपजातिहत्तम्.॥ वर्कयामि ऽच्पाणामु वर निसाविरामे

॥जेहा। निसाविरामे के अर्थ-हे जीव ! तने एवा विचार केम नथी श्रावतो के, हुं

मञ्जनम

शरीररूपी (दियहा केंग) रिमावयामि के (किं केंग) श्या माटे (स्यामी केंग्) ! अने चली (मेंहे नेग) (धम्मरहिनके) धमें रहित थयो सतो (पामे सते. एटले पाठली च्यारघडि रात्री रहे सते जागीने (गमावुं लुं.! (अहं के०) हुं। करं के, (जं केण) जे हुं ((गमामि केण) फोकट बत्तवा मांडे सते तिने २०) वसोने

(जबस्कयामि के॰) जपेका केम कह हुं !!! अर्थात् देहनी साथे रहेला बलता झा-स्ट रहे मिन्नंतं के॰) वाफता. एटजे शरीररूपी घरनी साथे बली मरता एवा

ब्राटा फरी जाय हे, तेम या जीव पण वयो दिवस ससारना कामनो एवो वेग जगाहे हे के, ते रात्रे लावो थड़ने सूए हे, तो पण ते कामना सप्त खावे जाय हे ते स्वप्त, दिवसे क रेता कामना हवरका हे ते हुचरका युणु करीने पाठली रात्रे शांत पहे हे माटे ते खब-छाथाँत् आस्म हत्यान कहेवाय! माटे क्यो रात्रि वियसतो ससारना येगमा चढीजता काइ पण विचार न झाल्यो, पण पाठझी न्यार पडी रात्रे छठीने, जरा निर्मेत चित्तवातो पड़ने, पटीये ब्हाया माडे हे, पठी बहाता बहाता एटले फिरवता फिरवता ते पटीने एवा येगमा खाये हे के, ते वखते जो घटी फिरववी मूकी है, तोषण वेगना जोरपी ते फेरब्याविना पाच सात त्मानी हु रह्मा केम नपी करतो !! इत्यादि आत्मनावना तु केम नायतो नपी ! ॥३७॥ नागर्य-शाक्षने विषे सर्व हत्यानु करता आत्म हत्या महोटी गर्पा। डे एटले जापी देवस देह।दिक परनावमाज रच्यु पज्यु रहेतु, ते ग्रु झात्मानी. घात करी न कहेवाय १ पान्धा ब्रीयो न्पार पडि रात्रे छठीने विचार करवानु ययकार बखे है, तेनो छानिप्राय ए हे के, जैम र ीजा बया विचार रहेवा देइने, हे झात्मन्। तु तहारा झात्मानो विचार कर्ष्यु इहा प नोइने थात्मानु मगाडचु, द्यर्थात् इती सामग्रीए पण थात्मसापन स करमु

आ बपा सर शुन ध्यान करवानो शास्त्रकारे जाएाडयो हे. माटे तुं एवो विचार करच के,

मनुष्यत्रवना अमूल्य दिवसो थर्म विना फोकट केम गमावुं बुं ! अने आ महारुं शरीर पण जरारूपी अग्निनी फालवडे वलवा मांडयुं ठे, अने तेनी साथे रहेलो जे आत्मा, ते पण ब-जूरो समजीने तुं देहना नाव जे जड, छःख, अने मिथ्यानाव तेने देहने विषेज समज. अने विध्वंस मांडचो हे. तो ते यात्माने तुं केम बलवा दे हे? परंतु यात्मज्ञानवडे देहथकी खात्माने ममल मान्ला विषे प्रयत्नवंत था. ए जपदंश. ॥३ए॥ जाय; नियो नयी. एवी रीते आत्मानुं अने देहनुं स्वरूप जुडं समजीने, मिथ्या आहंपणु मांन्युं हे, ते तथा देह संबंपी पदायोंने विषे मिथ्या ममत जाय, पडी जाय, यावत् विध्वंस यह जाय; एटले सिचिदानंदरूप पड़ी जाय एटले सड़ी जाय तेवो, चित् अने आनंदरूप। उत्तरो हे. ने में सही आत्माना नाव ने सत्, एटले जे देह ज्यासमा ने ते तेथी

तमज.

नवा

Ao

HI4-Ė ाधन करवामा जाय हे, तेटलोज (यज्ञ कि HORI (म केंग) मधी क्षमाणस्त के) करतो ણ ડુડો ॥ अनुन्दुष् रुत्म ाहिनियनड् के॰) पाठी झापती खहता के**े** श्रफल, गतमन् ! (जाजा भेग) ने जे (ब्यहम्म कृषमाषस्स वश्चर ज्ञहम्म कंग) 145-14 146-14

```
विये
जाय हे. केम के, पशुने ि
रीते तहारे विषे पण हे.
                                             11801
 के निष्फल
न विनानों ने काल, ते पशुनी
```

প্র

पलायण जस्स व ऽर मञ्जा

*ᢢᢢᠲᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢢᢥ*ᡲᡲ मृत्यु संगाथे (सर्क के०) मिनुणा जे पुरुषने (जस्स के०)

市0)

जस्स केंग्

(व के 0)वली

፞ዾዿ፞ቝጜ፞፠*ጜጜጜጜጜጜዀዀ፠ጞቔቔዀጜጜቝቔጜ*

रम जाते (इ केंच) (म क्र

महारे तो कदि , मृत्युयी मंश् नेई पुरुषने एम युतु नथी के, हु बलवान् तु माटे, पुरुपने कोई विवस पण पयु नपी के, महारे मृत्युनी साथे मित्रता हे, माटे नि, बचीश तथा कोइना मनमा एम नयो ।

गिर्मता करवाने गेकाणे खावतं

प्रमाद, केम करतो हुग्ने !!! ॥ ४१ ॥

एटले थावी वस्तु

नावार्पे-इहा श्रमूत वपमा श्रातकार वडे करीने वपदेश करे डे देवस निपनी नपी, ते कदाचिन् जो निपजे, तो ते ग्राश्चर्यकारक कहे हराए, पण थाबती ह

मनम

नेसाधन नही सूपी जीवीश⁹ म खरी लाईत्रयी हो

्र के, तु व्यावती काल्य १ मनमा एम थाय हे से, १ कोड़ दिवस

타명

प्ताने तथा कोई

आज करवान्

गत्य

। होय. तो ते पुरुप कदापि

बंबवीन् पुरुष, मृत्युना फपाटामा न ष्यावता

तो ते पुरुप कदाांप एम ध ो साथे स

युना हापमाज न श्रावे । जो एवी शक्ति

खुं होय के, हुं तो कोइ काले मरवानोज नथी, तो ते पुरुष कदाचित एम धारे के, हुं ग्रुं नथी, वर्नमान कालमां थती नथी, अने आणामी कालमां थरो पण नही. तोयपण एवी मिध्या कत्पना मनमां करीने, हे जडबुध् जीव!तुं बीजा ससारना कामनो प्रमाद करयो वज्ञति हु राइन य दिवसा य ॥ नियनीते ॥४ ग॥ जपर जखेली सर्व ः केम प्रमाद करे हे? ॥४१॥ गज करवानुं काल्य करीश, तो ते पण युक्त छे. परंतु । ग्यावि न प्रणो ॥ आयांद्यम् ॥ द्डनं, फक्त धमेसाधन करवामां विद्यंता।

मूत्रने जेम जांबा देन अर्थ-हे आत्मन्! (इंनकलियं के०) इंन जेम सूत्रनी कलना (करिना के०) लेखादिक नीच लोको फालका उपर चढेला १ करीने उकेंते हे, द्यर्थात् ज्युष्डु वर्षावाने माटे लावो तालो करवाने छायज लोको फ्ता लक्षा उपर चहेता सूत्रने लाग वफ्ता बसरका बढे करीने फपाटावय उकेले हे, तेम(था-उस्स के०) आउखाने (पिलाता के०) उकेलता एवा (राड्यो के०) रात्रीयो (य के०) उपे (दिवसा के०) दिवसो ने ते (वचति के०) लाय हे (य के०) थाने वहीं (गयाधि के०) गया एवा से दिग्सो तथा रात्रींछे, ते (हु के०) निश्चे (पुर्णो के०) फरीपी (नियनति के०) पाठा नावापं–एक काबरूपी चमाल है, ते दिवस राजीन सम आगु तेरूप, दमना नस स्कारड करीन मतुष्यना आडखा रूप सूत्रना पिमने ज्ञीषपणे डकेले हे एटले ञ्चाडखाने जनदी घटाडे ज्ञाडखाने वनदी पिमने ज्ञाडिखाने प्राप्त डकेस कार्ट हे ज्ञास्मरीने आडखामापी पपेसा राजी दिवस किएपा, पाडा ज्ञावता नयी जेम ज्ञा यय उपायीने प्रसिद्ध थयानी तिथि पिकम सवस् १७५० ना कार्निक जुदि ५ (ज्ञान पांचम) ने सोमवार हतो हुने वर्षनी तेन तिथि वार, ज्ञाखा जनमारामा प्रतिष्ट ज्ञाववानो नयी, तेम हे नव्य जीवो। आ गएता दिवस राजीपण्, तेनी पेठे पाडा करिया मा आववाना नथी एउले गया तेतो गयाता।। एतु जाणीने या धर्मकार्य तो काले करीछु, आवता (न केंग) नयी ॥४१॥ ፟፟፠፟፠፟፠፟፠፠፠፠፠ዹ፟ኯጜ፟፟ጜ፞ዄ፞፞፠ኊ*ዹጜ፞ዹዀ*ዀዹቝቝ፝ኇቝ፝ቝዻ፞፠ዹቜ፞

११ ँ १रं ऐड्ड इंस्काले॥ एम नही करतां, ते धर्मध्यान प्रमाद रहितप्षे खाजज कर्बुं. ए जपदेश. ॥४ १॥ ॥ जवजातियत्म. ॥ मीहो व मियं गहाय। मच्चू न ज्ञास्त्र भ

नवंति ॥४३॥) यह्ण करीने. एटले पकडीने नाश करे हे. (व के॰) (नरं केंग) (जह के०) जेम (सीहो के०) सिंह जे ते (तस्त के०)ते माणासने **उंसहरा**) मृत्यु ने ते (म़िड़ केंग)लेड़ जाय हे.((मन्त् केंग पेया व नाया।) निश्ने (१५ १६ १७ १० १ए माया व पिया व नाया अर्थ-(इह के ग) आ लोकने विषे ((इ के व) अंतकाले के०)आयुष्य पूरु (गहाय के०) ाणियं जाणवो. तेम नस्म ري د م

करवाने(न नवंति के_०)समर्थ नथी घतां,॥४३॥ (माया के) माता जे ते (व के) बर्ज के) नाई जे ते (अंसहरा के) अंशमात्र ') समयने विषे. एटले मर्षानी वखते। ने ते (व के०)वली(नाया यार्णा करवाने एटले लगार मात्र पण रहाण ब

के०) पिता

वेदनापी से माएस मृग जेवो निर्वत पड़ जायवें स्वांभे तेने सिहरूप काल फकरीने छोड़ जाय डे ते वखते ते मनुष्यना माता, पिता, जायो, जाई, इत्यादि कोड्पण लगार मात्र रा-खगा समर्थ यता नथी। एडले ते गमे तेगे स्नेही होय, छने ते स्नेहबड़े करीने तेने राख नारार्थ-हें जीव ! गमे तेवो पीरजवालो मनुष्य होय, तोपए, छातकाले मरणनी घएी क्रणमात्र राखी श्रकता नपी ॥४२॥ वामा गमे तेटला छपाय करे, तीपए। तेने ह

था (सपनीत के ज जापासु त कार्जास् ॥४४॥ सपतीत्र तरगवोवात्र ॥ अर्थ-हे ब्यात्मन् ! (जीज्र के॰) जीववु (जर्जानडसम के॰) रानना झुयनाग वपर रहेला, जसना विड समान चंचल हे ु ५ ६ सुमिएायसम च पिम्म , जीय जलविङ्सम

। झायां इसम् ॥

किएों सीघ जती रहे तेवी हे (च के०) वती (पिम्म के०) स्त्रीयादिकनो प्रेम जे ते (

) समुख्ता तरम जेवी घचल हे ।

नेयों जे ते (तरगलोवाच के)

एटले एक नेकाणेयी

णयसमं के॰) स्वप्न समान हे. एटले क्रणमां नाश पामे तेबो हे. ते कारण माटे (जं के॰) रीते शिखञ्यं, त्यारपठी ते पोपट पण ते वाक्यनो वारंवार अभ्यास करीने, ते रीते बोलवा लाग्यो. परंतु ते विचाराने एम खबर नथी के, विक्षि गुं? अने जड़ी जबुं ते गुं? पठी एक दिवस ते पोपट जेवो पांजरामांथी निकल्यो, तेवोर विलाडीए जाल्यो. तोयपण ते पोपट पूर्वे शिखवेला वाक्यने बोले जतो हतो, ते वखतेज व तोयपए, जीववाने माटे थनेक प्रकारना न करवा योग्य एवा घए। छपाय करे हे. थने वही नंचल हे. एवं बोले (जाणमु के॰) ए प्रकारे खरी रीते, जो खंतःकरणयी अस्थिरपणु जाएतो होय, ' देखीने मंथकार उपदेश करे हे. अप्रमाद्वले धर्म सायन कस्य. ॥४४॥ नावार्थ-लोकमां चालतुं घणुं पोपटियु ज्ञान देखीने यथकार उपदेश ने पोपटियु ज्ञान एटले गुं? जेम कोड़ माणसे एक पोपटने नाताव्युं के, निल्लि आबे तो तरत छडी जबुं. एवी रीते शिखव्युं, त्यारपठी ते पोपट पण ते वास्य पोपटनी मोकी मरडी नांखी. माटे हे जब्य जीबो! कहों! ते पोपटनुं ज्ञान तेम ज्ञा सवें लोको पए। एम बोलेटे के, जीववुं जलना बिंड जेवुं चंचल बोले हे के, या संपत्तियों पण पाणीना तरंगनी पेंडे खास्यर है, परंत् कर्य एटले कारंज्जासु के०) जाएया प्रमाणे

राखवाने माटे, सन्मार्गने विषे वाषरवामा पणुज रुपलपणु करे हे, खने घडी एमबोदों हे रटले तमारा हदन करें हैं हिंहीए 7 माटे यथकार एम कहे है सुतिशे जो चचल जाणे हो ' धनुनव ज्ञान करो जलाब्डचचल ॥ बरा खत करणथ न्हेली त्रष वस्तुने विकनो जे प्रम है, ने स्वप्र समान है, एवी खरा ख्रत करणापी द्यावस्य ज्ञान केबु रम तमे जाणे गे. Œ

अर्थ-(मऊराग मेंग)'सध्या समयनो रग, तथा

श्व रहिता पाणीना बिंड जेर्नु चंचल एवुं, (जीविष के॰) जीवित सते (य के॰) बती वेगसंनित्रे के॰) नदीना वेगने तुल्य एवुं, (जुन्यों के॰) योवन सते (पावजीव के॰) हे अर्थ-जीरण थड़ हे खबस्या ते जेनी, एवा पुरुपना केश तथा दांत जीणे याय जे. एटले व श्वायस्थामां मांथाना केश घोला थाय हे. एटलुंज निहे पण केटलाक नाश पण (जियमें कें)ए बेनी हे जपमा ने जेने एंबुं,(य के 0) अने (जताबिंड चंचले के 0) मानना अथनाग (न बुप्रसे केंग) तुं नयी बोय पामतो (इयं केंग) ए ते (किं केंग) खुं!! एट-नावार्य-आ संसारमां वयी आशान करतां जीववानी आशा वर्षा महोटी ठे. केम पामे हे. अने हांत पण शिषिल धाय हे. एटलुंज निह पण पडी जाय हे. त्यारे पोतानुं ज-के, आ जीवने ज्यारे वेजीवारे श्वास उपडे हे, अने मचकां आवे हे, तोपण हजु हुं जी-वीश, हजु हुं जीवीश, एवी आशा रह्या करे हे. माटे कोइ विदान पुरुपनुं आवें वचन हे के, जीविताशा धनाशा च। कुमारीय विकद्ते ॥१॥ जीयेते जीएनियमः । एमः केशहदायपि ॥ ले ए ते केटलुं वधुं आश्रयं हे !!! ॥४ ए॥

ने बीज ह्यांत कह्यु ने के, ा जीवितन् । Ţ, गखे हे एम । बहे से छे हे, सध्याकाताना लाल, लीला, पीला, ोपणु, देखाडवाने माटे.जनावरना हाडकाना घनायेला नानीपणु देखाडवाने,मुटे, मुनेमा ज्योतु पतिषा श्रावे हे, प्योपे,तेने खुटावी नाखे हे । हरता स्पारे वधारे पीता श्रावे हे, त्यारे तेने गतेष चढावे हे. एटले कातारग बंदे रगे धने न गमतुं एवं दृष्टपणु प्राप्तं पाय हे, स्पोरे र कुमारी कन्यानी पेहे दिन दिन प्रत्ये दृष्टि पामे पराषे जवानीपणु लाववा जाय ान माय काष्या जेतु लागे हे शायी हे, मूल मथकार घणा हर्घात छापी ्रता जाए. ्रतंड वे घडिमा नाश पः ल वेलाडवाने माटे वेर् ने वे कार्त नेता ते रंग घड़ि हे एटताज माट र जी गयानी आशा तथा धननी आशा, एटले तेने कोड़ मीसो कहीने बीबावे, त जवानी पाठी द्यावती नथी तथा दात पडी जाय है, स्यारे जवा॰ चलावे हे माद गिवित इ तेषी पण मानमा अयनाग उपर जीवनानी आंशा पापी है म दातनी वत्रीशी मुखमा तथा जवानीपणानु,थ न्त्रकादार रगना ज्व ग़िवित द्यस्पिर है में ब

Po

पणु आज । नदीना नेग

नहाना याय वे स्मन ø **정점명** जंटलु यायुष्य

1

्री ट्राफ्न-(हयफ्यतेषा के॰) निका करवा जोग्य एता ने यमराज (मावु कर्म) तेणे हिंदी किए। करवा करवा जोग्य एता ने यमराज (मावु कर्म) करवा किए। करवा करवा करवा किए। जनवा के॰) जनवा के॰। जनवा जेप किरा जेप जानका तुरा करवा के॰। अप्र प्रतिपोने (जनवा के॰) करवा किए। जनवा के॰। अप्रवातिने विषे किरा जातिने विषे तेमज (मिह्निया कि॰) वहन स्तिने पण (मजवा के॰) अप्रवातिने विषे किला कि॰। परिवासे एटले परिवासे पण (अप्रवा के॰)अप्रवातिने विषे किला कि॰। परिवासे कि॰। परिवासे अपरिवासे कि। अपे परिवासो कि विषे किला कि॰। परिवासो कि अपरिवासे कि। अपेति प्रति जुरी, सि, अने परिवासिक सविने जुरी जुरी कि। मित्रमा कि। परिवासे विषे कि।

नावार्य-हे खात्मन। आ सत्तारकपी चकडोल छपर चढीने, तु एम निवार करे हे के, सचतु छुडुन महारा नेगु सवापकाल एक स्थितिमा रहे पण आ सर्व छुडुवनो महारे कोड़ विवास सियोग पढ़ नहीं एवा छपायमा तु रात्री दिवस मनेजो तु परतु तु एम विवार नपी करतो के, जे हमजावेज छास्थर वस्तु हो, ते ग्रॅंकडो छपाये पण स्थिर पवानी नपी केम के, जे सर्वे कुटुन माण्यों है, ते सर्वेना कर्म जुरा जुरा हे परतु एक हपे नपी. तेपी करीने

पुत्र, युत्रीयो, स्री भने परिवार इत्यादिक पोत पोताना कर्मानुसारे नाना प्रकारनी गतियो-

E D

कूतरु चालतुं होय, ते कूतरु एम विचारे के, आ सवलो गाडानो नार हुं खंचु हुं. तेम तुं पण एम समजे हे के,आ सर्व कुटुंबनुं नरण पोपण पण हुंज करं हुं. एवो तुं मिथ्या ममत्व करे हे.परंतु एम नथी जाणतो के,सर्वे कर्माथीन हे,तेमां हुं शुं करी शकवानो तुं!।एम विचारी ने तेवा खोटा ममत्वने होडी देइने,कांट्रकतो आत्मतायन करवानो झवकाश्रालाह्य!!॥ धि मांथी से रीते खाल्यां हतां, तेवी रीते पाठां नाना प्रकारनी गतियोमां चाल्यां जाय हे. ते पराधीनपणे जूही जूही जग्याए जड़ पड़े ठे, तेम आ विचारा पुत्राहिक कर्माधीनपणाथी अनेक प्रकारनी गतियोमां जड़ पड़े हे. त्यां, तथा आ नवनां सुख डःखाहिकमां पण, तहा-ते कोइ उपाय चाली श्रकवानो नथी. तोषण मिथ्या ममत्व बांथीने, जेम चालता गाडा तले हेबी रीते चाल्यां जायहे ? तो के, जेम कोड़ जूत देवताने बलिबाकला फेंके हे,ते बलिबाकला जिवेश नवेनवे। मिलियाइ देहाइ जाइ संसरि।। । कीरड संखा अपातिहिं ॥४ ण॥ अ ११ ए ताएं न सागरेहिं।

5

संसारने निषे (जीवेश के) जीन जे तेथे (नवेज-(वेहाड़ के) देह (मिलियाड़ के) मेजन्या हे ए ्रप्रमेन्हे ब्रारमून् । (सस्तारे केट्) संसारने निये (रे केट) त्रव चवने निये (जाइ केट) जे (देहाइ केट) वे

अनत एग (

एटने झनता सागरना पाएतिना विदुष् करीने, अथवा अनता सागरोपम*

) नयी (मीरइ के॰) करी शकाती ॥ध छ॥

पए (सखा केः) सरस्या जे ते (

पनो विचार करव के, ते केटता

नावारी-हे प्राधिन्। ने स्रीरने अधे तु अने ह प्रहारना पाप करे हे, ते वेहना स्वहः

पण थड़ शकती नथीं अथवा अनता सागरापमना काल कराने पण केम के,शास्त्रमां कह्यु ठे के,जीते खेटला शरीरनो त्याग करोगेठे,तेटल

रमो जो दगनो करीए तो त्रष्य जुवनमा पए। माइ शर्रेनही माटे हे नब्य जी 1|वु एम विवार कस्य के, जगत्मा ठेज नहीं कारण के, गमे तेवी सारी सारी बस्त

पड् शकती नपी

מ सागरसालिलाछ बहुयरं श्रत्रमन्नाण नयणोद्यंपि तासि

पण ब्रासुना जज्ञत परिमाण पड़ राकतुं नभी '।।४६।।

तारापं-केटलाएक पुरुषे स्वीयाविक परार्थभी मेराग्य पामीने दीका टीवाने तेपार क्षेत्र परार्थे केटलाएक पुरुषे स्वीयाविक परार्थभी मेराग्य पामीने दीका टीवाने तेपार क्षेत्र परा होय, परत तेष्ठ फक्त माता पितानो पणे स्वेह देखीने अने तेम मधान पाठा हवी जता जोड़ने हाती महाराज तेने उपदेश देखोंने आयें कहें हें के, है नह्य जीर! तु एक नराना माता पिताने रोता, कृतकलता जोड़ने विकारित केम हैं भाष है? परत विवार करण के, ते कर्मना यो करीने खनता नवमा अनता माता पिताने, हैं रोता कृतकलता मुकीने तु आ नरामा आवोरों हु ते माता पितानुनी शाखमांथी निकलता के) अपर ज्यपर जनमें विरे पर्यतीयों एवी (माऊर्ण के) माताझेंनु (गितिय के) शो-कपी निकतात एवा (नयपोदयपि के) नेत्रमा खांसु पएा (सागरसिवाज के) समु-इना पाणी पकी (बहुपर होड़ के) खातियों व्यधिक होय हे अपाँस समुख्ना पाणी वह तु किया माता पिताने सतोप पमाडोश १ माटे बस्तुतापे विचार करय के, श्रात्मानी माता त्रपं-हे यात्मन् ! (तासि के॰) ते (रुज्जमाणीय के॰) रहती एवियो ते (ज्ञनमन्नाय

```
होए हे ! पिता कोए डे ! अधित आतमानां माता पिता डेज नही. एवं विचारीने साहिसि-
                                                              ज्यापे धर्मे साधन कर्य. ॥ ४०॥
```

वि

D)

अर्थ-(नरए के॰) नरकने विषे (नेरइया के॰) नारकी जे ते (जं के॰) जे (घोरएंता-) महा घोर, ने खनंतां एवां (डहाइ के०) डःखने (पावंति के०) पामे हे. (ततो के॰) (आपाँतगुषियं केण) आनंत गुणु (डह केण) जना छःखयी पंषः निमोदने विषे आनंतगुष अथोत् नरंकना डःखयी पण निगोदने ह से हैं हैं हैं हैं हैं डिस्सिट हैं। इहाइ पावंति घोरणंताइ ॥ नेगोत्रमम् डहं होइ

विषे (

निगोध्यमञ्जे के । निगोद् मध्यने

डःख जे ते (होड़ केंग) होय हे.

तत्तो अणंतगुणियं

ब १ व व जं नरए नेरइया

in o ii

। नाना प्रकारना (角部) (BB) अनत पुत्रज

सिन्द हे तया निगोद्तुं र

#0)

(तत्कहा केंग)

20

6

परत से ड खना वर्णनने इहा हिश मात्र

समय थाय, तेटलीवार, कोइ जींब सातमी नरकमां पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सागरोपमने आ-उखे उपजे, त्यारे तेने असंख्याता नव नरकना थाय, ते थ्यसंख्याता नवमां सातमी नरक-ने विषे, ते जीवने जेटलुं ठेदन नेदननुं डःख थाय, ते सर्वे डःख एकतुं करीए, तेथी पण वीए. एक सूईना अभ-ं श्रीर हे. ते एकेका श्रीरमां अनंता जीव हे. एवी रीते निगोदना जी-न घाएं सांकडुं छे. ते उपर एक स्पूज द्रष्टांत कहीए डीए. जेम कोड़ लाख करीने तेने घाणा दिनम माने माना है नि आनंता जीव नेगा रहे हो. ते नेगा शी रीते रहे हो? ते जणावीए हीए. एक सूईना अभ-नाग उपर रहे तेटली कंदमूलनी कली होय, तेमां आसंख्याती श्रेणी रहे हो. ते एकेकी श्रेणीमां आसंख्याता प्रतर हे. ते एकेका प्रतरमां आसंख्याता गोला हे. ते एकेका गो-हष्टात-सातमी नरकमां उत्क्रषांयु तेत्रीश सागरोषमनुं हे, ते तेत्रीश सागरोषमना जेटला तेने वंणा दिवस सूधी खलमां घुंटावीने, पठी तेनी राइना ह मां जे रीते लाख खौषियोनो समावेश थयो, ते रीते एक पासवहजार एक मुहूर्नमां मनंतगुणु इःख निगोदीया जीव एक समयमां नीगवे हे. नामा असंख्याता

a ₽

w

अपे-(रे जीव के०) हे जीव। तु (महवि के०) कोड़ महा कदे करीने पण (तत्तो ते निगोदयकी (निहरीय के०) निमतीने (मणुश्रनणपि के०) मनुप्यपणाने (पत्तो केः) पाम्मे हु (तज्ञाये केः) तेमा पछ (चितामणिसिरिज्ञो केः) चितामणि रत सरखो जन्म मरएता इ.स हे के, ते इ खती उपमाज नयी। ते आश्रयीने निगोदने यिपे नरकना इ समी अनतगुगु इ स भी धीतरागे फद्ध हे ॥४९॥-तेवा इ सने या जीवे ज्ञानावरणाः नव करे, अने एक श्वासोह्यासमा सनरथी काइक छाधिक नय करे हे एवी रीते निगोदमा दिक कमेता वंश पकी अनतीबार नोगर्ज्या हे माटे हवेथी तेवा इ खो न नोगवता पडे, जिएावरपम्मो के०) जिनवरतो धर्म जे ते (पत्तो के०) प्राप्त धयो हे ॥५१॥ तज्ञवि जिएवरधम्मो । पत्तो चितामाणिसरिज्ञो ॥५१॥ । पता मणुत्रमणापि रेजीव ॥ निहरीय कहवि ततो । ज्यममा तत्पर थर् ॥५०॥

प्रकारनी अकाम निर्ज्ञाए करीने तथा निगोदनी

तेने तुं पास्यो . पवा करीने, महाड्डांन एवा मनुष्य नवने पाम्यो. रटले तुं जे जे सुखनी इडा करीश, ते ते सुखनी प्राप्ति च्या पर्म बहेज ने पामीने विषय कषायने घटाडवानो दिन दिन प्रसे डचम कर्य. के, चिंतामणी रत्नसमान श्री जिनयमे, रध ११ ध ११ कुपासि पमायं तुमं तयं डहं जहांस नव अने जिनधर्म ए वे पामवानुं सफलपणुं याय. ॥५१॥ पुणावि परिच पण सकत बांगन पूर्णा करनार माटे। रजीव। नावार्य-हे आत्मन्! तुं अनेक जेएं नवंधक्वे अर्थ-(रे जीव के०) हे जीव! (तांमि के०) ते जिनराजनो धर्म (पत्तिव के०) पाने जेले करीने (पुषाोवि के॰) फरीयी पषा (नवंषकूते के॰) (डहं केंग) डाखने।

पए (तुमं के) तुं (जेएं के)

रहत क्वाने विषे

(जहांस कं)

(तय के॰) ते प्रकारता एटले ससारहप झध कूवामा फरीयी नाखे एवा (पमाय के॰) 🕌 जसटो तेने बदले जेयी फरायी पण ससाररूप थाय-निश्चे छाने व्यवहार ए वे प्र-दिक प्रमादने केम सेवे हे १ केम के. मन्ष्यमो नव । जिन्धमं से ते ((ग्र केर) बली ।एउँ॥ (जिल्यममा के) (झा के०) झा पणी ख़ेरकारक यानी ठे एटले निचा यिक्ष्यादिकने (चैव के॰) निश्ने (कुर्णास के॰) आतस्यादिक वीपे स्वह परे ग्रर्थ-(जोव के॰) हे जीव । ते देवच (पमायदोसेल : हा जीव ऋष्पवेरि अ नवल्ब जिल्लाधम्मा कारे ते पर्मनु कर्तु, ते मूकी जामा पडाय, एवा। सेन्यो (नय के) नथी हो केंं) पाम्यो

विर के) हे आत्माना वैरिन्! (परन के) परलोकने विषे तुं (सुबहुं के) आतिशे रेहिसि के) खेद पामीश. अर्थात् वालोज पथानाप करीश. ॥५३॥

नावार्थ-हे आत्मन्! सर्व सुखनी प्राप्तिनुं कारणा एवा जैनधमीने पामीने, केवल प्र-माद दोषयीज, ते धर्मनुं सेवन, तें करधुं नहीं. माटे तुंतहारी मेलेज तहारा आत्मानो म-शेटो शत्रु थयो. एटले आत्मानी हत्या करनारो थयोः माटे तुं मरण पामीने परलोकमां

साबज्ञी नगरीने विषे गूरमन्न, अने ग्रिशमन्न एवे नामे वे न्नाई राज्य जोगवता हता. तेवामां ए समयने विषे, ज्ञानी गुरु श्री धर्मधोषमूरि नगरीनी वहार ज्ञानने विषे पथारथा. वनपालके जह र व्यामणी दिशि, हानी गुरु भाषाये वनपालके वर्णु इत्य आप्तुं. पजी वे वांधव, श्री गुरु पासे नया. सां विधि वंत्रन करी नावत थानके वेठा. गुरुए पण अवसर जाणी धर्मदेशना द्धि जेम के,

।क्षित्रनराजानीपेठे घषोज्ञ,शोक करीश.॥५३॥ते श्रित्रनराजानी कथा निचे प्रमाषे जाषवी,

क्या. ह

बंदन करी छांचत खानके बेठा. गुरुए पए अयसर जाए। धर्मदेशना दीधी

पूर्व क

गया. सां विषधे

महारोगा नोगाः, कुवलयहशः सपैसहशः॥

तदापायः कायः, प्रणायषु सुखं स्पयांवेमुखं

॥ शिषिरिणीष्टनम् ।

रनैमचितम् ॥१॥ प्रकृतिचपला श्रीरिप खला <u>.</u> यहाबेश यम

ित्ते सुख पए। जास्पर ५ प्टले । तेन स्मेशी क्रणमानमा वैरी पए। । अर्थ-आ शरीर निरतर अपायक्ष

रतो गुहस्या गम ने अथात् अटना उपर वेसना 9 , तेम खीना ससमधी निकार छल्ज थाय छे रहेड, त केपल समाक्त ने धी अनक प्रकारना, राग छत्पन थाय छे

नहे. ने माएनो नाश थाप

नवी होय, तोपता ने नेंट जाय है हराज योज्य है।।।।। आवी पहें है ग्नरमारी थे , तेम गुह्दस्थायम वालाने अनेक प्रकारना वाका मे तेरी कवण कम्मर वांथीने इडपणे, छट छपर २ . सनस्तार, मसारमा कहेनाता महे ज गृहसा ममा कोड़ घातनु पाश्चर पदतु नयीं 크 हिल जम जदनां छहार पुरुष हाल्या विमा र लाग्या

गर्वाने गर्यन्त्र, पाताना

ज्यम् त्यं नय

ভ त्रिजी मरक्तमे विषे नारकीषषे उपन्यो. हवे शूरपत टेवताये अवधिङ्गानना वले करी जोयुं, त्यारे पी-मान्युं, माटे ना-व्यस्तक संवी जलदीयीज करवो. माटे आ राज्य त्यो. एवी रीते कहीने वलात्कारे पोताना जाईने राज्य आपी शूरपत मूकशो, तो पनीथी घलोज पथाताप करता ! अने बली पठी तमे कहेशों के, जाईए धमीतो प्रमाद् मूकीने शूरणंत्रे कर्षे जाई! राज्यने वेडे नरक पामीए. माटे महारे राज्यनो सर्वेथा प्रकारे खप नथी. त्यारे शिशिपने ाजाये श्रीगुरु पासे जइ दीका लीधी पनी घएां तप जप करी अंते अनशन करी, समाधि सहित काल एवी रीते शशियने पामवा एम धारी ते देवता मोहनो लीघो वेदना ' आवशे ! कोएा जाएो परलोक छे के, नथी! आ राज्य ह्वमे शशिमन राजा राज्य नोगवी, सात विषे 'द्रिगे. देखीने विचारखुं के, एऐ महारु कहेएा न । बालकने विहामएाक्प घएतिस (टले १ लेडयो अरे जाई! ए तमे शु कहुं ! ॥ धर्मस्य त्वरिता गतिः॥ महारं कहेण मानीने तेम तेम ते संसारिक मुख जोगवीने पनी रुद्धावस्थामां संयम । माड्या, र ए सर्वे इ तीयपए है तेचु डः ख टालुं. तापान ! मनुष्य जत्र पामीने एले शुं करवा गमावे छे ? माटे हे जाई! विषे देवतापणे जपन्यो पीं , वाबरो, काया वालवाथी हाथमां गुं शुं करवा वांठे छे. नाइन श्राश्ययने त्रिजी नरकने ययो, ने घणुं डाख नोगवे हे. पाताना न हवो. ीने पांचमा ब्रह्मदेयलोकने जतावला थइने जो संसार आन्यो. आवीने परोट्ट मुखने माटे हात्नमां शूरपत्त कहेता नाई इ

m m

m चोरीकरवी. ५ आहंडिकमे. (मृगयाकरवं) अ व्यागमन जुगहुं. १ मांसनक्णः ३ सुरापान परस्रासनना

ी गयो पत्ती देनता कहें के, साइ नि महार कहें एन मान्छ, भूडा में तने बचुए कहा हुन तापण तु समत्यों सही माट हुन शु करीना हमार ते नारकी कहें। हे साई हो शु कह पनी बहुतन दन, परमार्थीमेंने ज का साम का सुर सु करीना हमार के नारकी कहें। है साई हो शु कह पनी बहुतन हन, परमार्थीमेंने ज अर्थ-(जेहिं के॰) जेमणे (पावषमायवसेष के॰) पापरूप प्रमादना नशे करीने (जि ग्रुयमों के) जिनधमें जे ते (न सचियों के) पोताना थ्रात्माने बिपे नथी सचय कर्षो जहानीथी थम साथन नहीं तेम ने गाणी नितामणी रत्न मगान महष्य तत्र पानीने जिन थम नहीं कर, ते गाणी गोधपत राजा हत्यों, ते माणी मोक्ट देवलोकना छुख पामय पद्ज जाणी, मपाद कूकीने धर्म साधन करा। ण ठपटब แสมเ गा है जु भी पंजा समुबहियंमि मरणिम ॥ सोस्रति ते बराया। पंजा समुबहियंमि मरणिम ॥ पावपमायबसेषा । नं सचियो जेहि जिष्डम्मो । सी ऐडे महा शोचवाने पामशे!! अन ने पाएी गूरमन राजानी पेंडे प्रमाद मूकीन, ' शक्षिमज्ञ घलोज पथाताप पाम्यो ۵. ज्ञामण नेश्च पाठा देषलाके गयो 🤏

ति पाताना जातमामा जिनयम बरोबर हसाज्यो नथी (ते के॰) तेवा (वराया के॰) राक पुरुषो जे ते एटले झज्ञान कष्टने करनारा पुरुषो जे ते (मरणामि के०) मरण (समुवाि गंमि के) प्राप्त थए सेते (पज्ञा के) पठी (सोयांति के) शोक करे हे. के, अरेरे! आपणे

हांडु पए। धर्म साधन करगा विना परलोकने विषे क्यांथी सुखी थड्युं!!इत्यादिक घणो-ज पश्चाताप करे हे. ॥ए॥॥

रथी, समफ्रवा विना अज्ञान कट करवां, तेथी परलोकमां तने वणोज पश्चानाप थरो. माटे थोडुं पण जिनआणा सहित धर्मसाधन करवामां प्रमाद रहित था. अथति * पांच प्रका-गरलोक ए प्रकारे वे लोकनुं सुख हारी गया. केम के, लोकमां मनावा पूजावाना अहंका-हुगुरुना उपदेश्यी जिनआहा रहित अनेक प्रकारनां अहान कट करी, आ लोक तथा नावार्थ—हे जीव! जेवी जोइए तेवी तने धर्मसायन करवानी सामग्री मली, तोपण

रायराया । परिपज्ञ निरयजालाए ॥५५॥ 🎌 १ मदः १ निष्यः, ३ मषायः, ध निष्ठाः अने ५ विक्था

। देवो मरिकण जं तिरी होई ॥

वीधीधी संसारं।

रना प्रमादना वश्यी विराम पामीने जलदीयी धर्मेसाधन कर्य. ॥५४॥

, **න**

अर्थ-(ज के०) जे कारण माटे (देवों के०) देव जे ते (मारेकत के०) मरण पामीने गतिने विषे ऋषवा ए॰रीद्यादिकमा जड पाषाणपणे उत्पन्न पाय हे । खा सु छेतु आश्चर्य जेनी से गमा रह्या हे ए ग चक्रवती राजा पण मरीने नरकनी ज्यातामा उत्पन्न थाय है। नाराप-नोइने एक्तार थिकार। कोइने वे यार थिकार।। पण झा ससारने तो त्रण यार थिकार कह्यो तेनु कारण एं ठे के, टेनता सरखा महा क्विंदत पण, मरीने तिर्थेच चोराग्नी लाख घोडा, चोराग्नी लाख रप, थमे ठन्नुमोड पायदल, वली नव नियान, थमे वादरत तथा सोल हजार जद्ध तथा वत्रीत हजार मुकुटवय राजा इत्यादिक, रात्री दिवस 8े ॥ तथा ठ खपता जोक्ता, तथा चोसठ हजार स्त्रीयोना पति, तथा चोराशी लाख हाथी, तिरी के0) तिथेच (होई के0) याय हे अपीत् देतता मरीने तिषेचमा तया एष्योआदिकमा (रायराया के०) राजाना पण राजा जे चक्रवर्ती, ते (मरिक्रण के॰) चाप है। माटे (ससार के॰) ते ससारने (धी धी धी के॰) धिकार थाते। थिकार थाते!। थि थिकार यानी!! इहा खतिशे थिकार जषागवाने माटे त्रष्ण यसत थिकार कद्यों हे ॥५५॥ मरण पामीने (निरय जालाए के०) नरकनी जालावढे करीने (परिपद्य के०) उत्पन्न थाय है। अने

210 品品 त्यां ते चक्रवर्तिने परमाथमी, महा वेदना उपजावे हे. अहो। हो !! आते गुं थोडी

् वि

बर्यकारक वानों ने !

(मणयत्राहरणाई के॰) भीव भाग 'जीवों केंग) अर्थ-(अपाहो के॰) अनाय

धएषञाहरणाड्

मूकांने पएा (कम्म वाय हुने के०)

፟፟፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠*፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠*፠፠፠

वारमा ना

ं जो पड़ने, नरकाविक ड्योतिने गिये जाय हे त्या गया पठी पूर्व कहेंडी कोड़ परा वस्तु ते जीयने सग हागती नयी माटे है जीव! परिधामें जे वस्तु तहारी साथे नयी प्रावती, तेवी वस्तु ठपरथी मोह ममत्वती त्याग करीने, जे परचाते विषे साथे छावीने सुख करे तसरतेषा के)पर्यटन करते। एवो जे त्. (समुद्दमंद्रामि के०) समुज्जी मध्ये (यसिप के॰) निवास करघो टे (य के॰) वली क्यारेक (रुझमोसु के॰) दुझना झप्रते विषे (पसिय के॰) निवास करघो टे झर्पात् पूर्वे कहेला सर्गे स्थानकोमा द्र श्रनतीवार निवा-वेपे(बासिय के) निवास करयों हे तथा (द्रीसु के) द्रांस् वांस्य समुहमप्राम्॥ मसरत्ता ॥५५॥ ठे, तेवा ज्ञान दर्शन चारित्रादिक धर्मनु आराधन करच ॥ए६॥ । निवास कर्यों हे तथा (ससार र ड्यर्थे-हे थात्मन् ! (सत्तारे हे॰)सत्तारने विषे((॥ बासिय गिरीसु वासिय रुक्कगम य वांसेय फाने विषे पए (वसिय के॰) (गिरीमु के०) पर्वतोने 1

व m

करा आञ्यो हुं. माटे तहारुं निवास स्थान एक वेकाणे नथी. ॥५७॥

तया पोताने खेवानी

न्नावार्थ-कोड़ शिष्यने पोताना देशनुं, तथा पोताना गामनुं,

केटलीएक वखत तुं पर्वतने विपे पज्ञररूपे थड़ आब्यां हु. तथा कटलाएक वखत पथतन। गुफामां पण सिंहादिक पशुरूपे थड़ आब्यों हुं.तथा केटलीएक वखत समुद्रने विपे जलजंतु

पर्वतने विषे पज्ञररूपे थड् आव्यो हुं. तथा केटलीएक वखत

मिथ्या आनिमान शुं करवा करे हे ? परंतु तुं विचार करच के, आ संसारमां ज्ञमण करतां

इत्यादिक आनिमानने धारण करतो जोइने, गुरु छपदेश करे हे. के, हे शिष्य!

ईमारतमुं, तथा पोतानी छत्तम जातिनुं, तथा पोताना प्रसिष्ट कुलनुं, तथा पोताना

ग्रम

श्र

4 Lor

तहारा

बुं. इत्यादिक घणीक जग्याए निवास करी आञ्यो हुं. माटे

ह्रपे थड़ आव्यो हुं. तथा केटलिएक वखते वृक्तोना अपनागमां कागडा प्रमुख

अर्थान् एक पए ठेकाणे निवास करवाना स्थाननो

अनिमान मुं करवा करे हे? ॥ए

मिथ्या

तापण महारं महारं करीने

हीयुं एक निवास स्थल हे !

निवास करी आव्यो

·जीव! तु केटलीएक वखत (देवो के॰) देव यमी तु तथा (नेरड्डो नि के॰) खत नारकी ए प्रकारे थयो हु (थ के॰) वली (कीड के॰) केटलीएक व फ़ कीडो थयो हु तथा (पयगु नि के॰) केटलीएक वखत पतिगयो ए प्रकारे (माणुसो के॰) केटलीएक वखत मनुष्य थयो हु वली (एसी के॰) एंज नावार्ध-ुआ जीवे नटवानी पेठे जुदा जूसा रूपे करीने छा। ससाररूपी रगनूमिमा ग्टलीएक बखत ड खना में हैं व कि माणुसों एसों ॥ (य केंग) थर्थ-हे जीव! तु केटलीएक वखत े नोगवनारो पयो हु अने वजी (डिस् पा छछे न "" देवी नेरइन निय। र० ११ ^{११} रूवस्सी य विरूवी पत्त थयां तु ॥५०॥

m, D मति इंग्ने मोड निज्यमी

गिरुक्रतए जीवी ॥६०॥ युग्मम् ॥ अर्थ-हे जीव । तु केटलीएक वसत ((ममगु नि के०) त्रीखारी ए प्रकृरे पर

(राज सि के०) राजा ए प्रकारे थयो (य के०)

) रज्ञ छ (र प्रकार थयो (य केण)

큪

(पुड़ो के) नियंत पयो

(एस मेर) एज तु (

के०) चनात ए प्रकारे थयो । (सामी के०) स्वामी पयो ।

-(इच के॰)

ति केंग) पनपति ए प्रकारे ययो

कोइ प्रकारनो

) <u>a</u>

io W तने कोड़ प्रका-. ज्यापार ते जेखे तोषण ते च्रमण करवाना अभ्यास थकी, निद्यति पामतो नथी. जेम कोइ ऋफिए। प्रमु-अविनाशी सरपाव मल्यो नही. उलटो न्यार गतिमां च्रमा करवा रूप सरपाव मल्यो जेबुं लागे हे. तथा पण अत्तर चंदन परिज्यत्त केंं) पर्यटन करे हे. ॥६०॥ । पण आत्रहजतना घटाडा (क्ववसो के) न्नावार्थ—हे श्वात्मन्! तुं चीदराज लोकरूप चीटामां, राजा प्रजादिकः ना बेग्न लेइने, नदुद्यानी पेठे अनेक प्रकारे निष्फल नाच्यो. पण तेमांथी करी हे चेछा ते जेएो. एटले देवादिक पर्याप रूपनो अध्यास (आअय)रूप न्डबु फर थने तेनी सुगंय ' ग्रन्य अन्यते (व्यसनी होय, ते व्यसनी ते माफिएने एम जाएं ठे के, जीखम थाय हे, तथा ते खातां पण (आफ्राना) खावायां लोकमा पण काता वीकरा जेवुं खराम देखाय हे. (अनुत्र के0) तथा ते खाबाथी कांड छत्तम रसायण जेवो (नडुब के०) नटनी (जीवों केंग) **डनम नयी. तथा तेना** (पण खरात्र गुसाना

वखत पण आपे हे इत्यादिक श्रिफणना अनेक प्रकारना धारापुण जाणे हे, देले हे, धाने खनुनवे हे, तो पण तेने मूकी शकतो नथी तेनु कारण काइ ख्राभ्यास भने कुसगविना बीजु जणातु नथी तेम घा जीवने पण ध्रनादिकालना ख्रभ्यासघी तथा विषयी जीवोनी सोनतथी, थ्रा पच प्रकारना विषय सुखमा इ ख हे एमजाणे है, देखे हे, तथा खानुजवे हे,तोषण थ्राफिएाना व्यसननी पेहे सारु मानी बेहो है तथी एने छानेक प्रकारना नीया ह्या हप करी छा। ससारने विषे नाटक करतु पड़े हे बसी शास्त्रमा कहा है के,— अर्थ-अपमानयी, तथा छची पदवीथी पढवाथी, तथा वथ बभ अने धननो झय ते पकी शैकडो जातिमा रोग ने शोक, छा। जीवे नोगठ्या है ॥ १ ॥ छा। झथिकार सबयी श्री थाचारांगजो सूत्रमा विशेष प्रकारे कह्यु हे, त्यांथी जोइ होत् ॥५ए॥६०॥ माप्ता संमाय गोकाथ जात्पन्तर्भत्वापि ॥१॥ अवमानात्परिअंशाष्ट्रथ**ा पथनक्ष्णात्** ॥ ॥ यनुषुष् रुषम् ॥

2/

मेंगारा होय, तेना छपर ते छच्णवेदनोंबाला नारकोन

दिना, ॥१॥ तेमज थनंती जच्छ वंदना, एटते थ

थनती हुमा वेदना एटले जगरामा खेला सर्वे समुद्येना पाणी ते नारकीना जीवने पाइए, तो पण ते नारकीना जीवनी हुपा ठीपे नहीं ॥ध॥तेमज झनती खरज वेदना, एटले झ नेक प्रकारना तरवार प्रमुख शक्षयंडे करीने, ते नारकीना जीवने पर्पण करे, तोपण ते ना-थारी जाय ॥१॥ तथा एवीज रीतनी ज्ञनती क्षुथा वेरना, एटजे जगत्तमा रहेजा सर्व घृ ताविक पुज्ञाो ते नारकीना जीवने खबरावीय, तोषण तेनी क्षुथा पूरी न याय ॥१॥ तेमज स्कीना जीवनी खरज मटे नहीं ॥५॥ तेवी रीते खनती परवशपलानी वेदना, एटली बधी

हैं हे के, आखा जगत्ना परवरापलानी वेदना एकही करीए, तोषण तेना बरोबर न थाय ॥६॥ हैं तिवी रीते, ज्वर ॥७॥ बाह्र ॥ए॥ नय ॥ए॥ झने शोक ॥१०॥ ए चारमी वेदना आखा ज-गत्नी एक्टी करीए, ते पकी पण एकेक वेदना झनतगुणी जाणवी आवी झनतगुणी वे-

ष्नान, सात ज्यसनना सेवनार प्रमुखने न्नोगवबी पढे हें जेम के, कीइए परबी सग करवो होय, तेने त्या (सरकमा) तेज खीना आकार जेवी लोढानी युतली बनावीने, थाने तेने थायिवडे सारी पेठे लाटाचोल परवयवती करीने, ते स्त्रीनी साथे ते परमाथिमियो ध्रनेकवार

धनतगुषी वेदना गास्त्र-

वहु प्रकारनुं (नीसणडहं केण) नयानक डःख जे ते (झणंतखुनो के०) खनंतीवार (स-नावार्थ-हे खात्मन्! विशेष'ज्ञानवंत एवा देव नवने विषे, तथा मनुष्य नवने विषे अर्थ-हे जीव! (हेवने के०) हेव जवने विषे, तथा (मणुखने के०) मनुष्य जवने विषे विशेषे जाणवानी मरजी होष तो, श्री स्वगडांग परात्तिनुगत्तएं के) परतंत्रपतााने (जवगएएां के) पाम्पो एवो तुं जे तेऐ (बहुविहं के) स्वतंत्रपण मूकीने परतंत्रपणा वडे, एटले परवशपणे रहीने, अर्थात् इंडियोने मां कही है. तेने विचारीने हे मंदमते! कांड्क तो पाप करतां पात्रो निसन्य! ॥६१॥ नीसणडहं बहुविहं। अणंतख्तो समणुनूअं ॥६ए॥ मुत्रना प्रथम शुतस्कंथना पांचमा नरक विजािक आध्ययनने विषे जोड लेज्यो देवते मणुत्रते । परात्रित्रजनमां जवगएणं ॥ आ नरकनां इःखना आधिकारने मणुनूखं कं०) खनुनव करमुं ठ. ॥६१॥

यहने, महामहा कष्ट धनतीवार नोगन्या हे एटले इचियोए जेम जेम तने नचान्यो, तेम अर्थ-हे आत्मन् । तु (तिरियगड़ के॰) तिर्यंच गांतने (ष्रणुपनो के॰) प म्यो हु त्या गयो, त्या खागल गरेडाविष्णं खबतराने कु-जन्मए मरए। रहट्टे के**०) जन्म मर**एक्ष्य रहेंटने विषे(अएतस्वतो के०) तेम तु नाज्यो नेतेयी महा जयानक इ खने पान्यों, परत् ते इच्योने ते यश न करी विहा हे०) अनेक प्रकारनी (जीममहावेद्याणा के०) जयकर एवी महोटी रिम्रामेन ॥६३॥ ज्ञनतीवार (परिप्रमिन्ने के॰) परिज्ञमण करी खाब्यो हु ॥६३॥ न्यारे त्यारे पख, ते इध्योने बग्न करीने झात्मसापनमा 色 श्रातिवत् । सु तियंच गतिने तिरियगई व्यक्षपती जम्मणमर्णरहट प्तहन करतो सतो। 116311

तकष्ट सहन करी आज्यों हुं. वानी पोपट प्रमुखना नवमां पांजराहिकने विषे बंधनकष्टने सहन करी आज्यों हुं. अर्थात् एवुं कोइ डि:ख नथी के, जे डि:खने तें सहन नथी करधुं!! ए मकारे आनंतीवार घोर महा नयानक डःख तें सहन कर्यां हे. माटे हवे एवुं धर्मसाधन ना प्रहार सहन करी छाज्यों हे. वली बलद प्रमुखना जवमां घणी परुणीनी आरोना प्र-टुकडा परांणे पामवानुं कष्ट सहन करी खान्यों हुं. वली बोकडा प्रमुखना नवमां मरणां-हरीने घणा क्रोरडादिकना प्रहार सहन करी आञ्यो हुं. अने हाथी प्रमुख थड़ने अंकुरा-गरा दिकना हाथनां घणां ममणां साइ आञ्यो हु. बती घोडा प्रमुखना आवतार धारण हार खाइ आज्यो हु. बनी मांकडां प्रमुखना जबमां घेरघेर शतामो करी नाचीने रोटलाना जावंति केवि इका। सारीरा माणसा व संसारे॥ कर्घ के, जेथी तेवां डःख नोगववां पडे नहीं. ॥ दशा पतां ऋणतख्ता अर्थ-(जोगो के॰) जीव जे ते (ससारे के॰) ससारने विवे (सारीरा के॰) शरीर स

संवे ड स सहन करी खाब्यों ठे ॥६॥। नावार्थ-छा सलारने विषे ड ख वे प्रकारना ठे एक शरीर सवयी रोगादिके करीने ाग (अर्सा के०) ड ख छे, सेने (सत्तारकतारे के०) सत्ताररुपी श्रदयीने विषे (श्रापारिसुत्ता ३०) श्रनतीवार (वसो के०) पान्यो ठे एटले सत्ताररूप श्रदवीमा परिम्रमण करता श्रा क्यी (ब के०) यती (माणसा के०) मनंस्पर्या (जावति के०) जेटला ।

वेयोगादिक थकी इत्त ने ते सर्वे इत्त आ थने बीजु मन सवधी इष्ठ वस्तुना वियोगादिक पका डि ख ठ न सव थ झटवीने विषे च्रमख करता, या जीवे छानतीवार नोगब्या छे ॥६॥॥

ताब्हा ऋणतख्तो। ससारे तारिसी तुम श्यासी॥

ज पसमें सबी। दही पाम उदय न तीरिका 30 33

अर्थ-हे जीय ! (तुम के॰) तने (तएहा के॰) हुप्णा झर्षात् हुपा (तारिसी के॰) ते

EY D क पुरुषने प्राप्त थाप, तोषणा ते पुरुषनी धन संबंधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज जगत्-है अने जब विगेरे सघड़े थान्य, जो एक जातने प्राप्त थाय, तोपण तेने धान्य संबंधिनी ब्ला घूरी न थाय. तेमज सघला जगत्मां रहेलुं हीरा, माणेक, मोती, सोनुं ह्यु विगेरे धन, प्रकारनी (आएंतखुनो के०) अनंतीवार (संतारे के०) नरकरूप संतारने विपे (आसी के०) अर्थ-सयली एथ्वीमां उत्तन थएली अनेक प्रकारनी मांगेर तथा अनेक प्रकारना थइ हे, के, ते तृष्णा शमाववाने माटे, सर्व समुद्योना पाणीना बिंड जेटला धनादिक वहे आ प्रकारनो अर्थ प्रथम नरकनी वेदनामां कही गया वीए. माटे पुनरुक्ति दोपतुं निवारण करवा माटे आ प्रकारनो नावार्थ जाएवी. के, हे जीव! तने अनंती तृष्णा उत्पन्न उत्पन्न यह हती. (जं केंंं) जे त्याने (पत्तमें केंंं) श्मावनाने ख्यें (सबेदिहीएंं केंंं) सर्व समुद्रोतुं पए (उद्यं के०) जल जे ते (न तीरिजा के०) न समर्थ थाय !!! ॥६५॥ पत्पृथिच्यां ब्रीहियवं । हिरण्यं पद्मवः स्नियः ॥ नालमेकस्य तत्सर्व । प्रिमि स्थयन मुग्नात ॥।।। गण तहारी तृष्णा पूरी थाय तेम नथी. ते कह्युं हे के,

की समेरी तृष्णा पूरी न थाय ए प्रकारना ावचार करान या नाजा थे. वे, तेज पुरुष संसारने तिथे मोह पामतो नथी ॥१॥ माटे हे ज्यातमन् । वपर कह्या प्रमाणे तु खनती तार विषयो जोगवी चूस्पो तु परतु नेशो विगरे चतुष्पद जीवो हे, ने जो एक प्रने सुदर सुगथराली एरी जवान खीयों जो एक पुरुषने, प्राप्त थाय तोपण, ते पुरुषने। जेवी के, श्रस्तत जावष्यवाबी, श्रस्यत रुपगाबी, अस्यत गुएावाडी सबधिनी तृष्णा यूरी नथाय तेमज जगा महोटा राजानी राषीयो तया महोटा ने सुखनो ते एक गसत पण अनुनव नथी काथो, एवा छात्म सुखनी ाए। ते पुरुपनी चतुष्पद सर्वाधनो | देगागनान तथा महोटा महोटा र ने विषे डोटझा हाथी, घोडा, घट, बलद, गायो, जजने प्राप्त थाय, तो युष्त से युरुपती घतुष्पद र होटा धनाढयनी स्त्रीयों : थासी थ विषे रूपालामा रूपाला प्तमः यम फरब

अर्थ-रे जीव ! (संसारे के०) नरक प्रवह्म संसारने विषे (ते के०) तने (तारिसिया परंतु हे मूढ नावार्थ-हे थात्मन्! नस्क नवने विषे तने एवी क्षुया उत्पन्न पड़ हती के, आ जन्मां रहेला ने घृतादिक सवता सारा सारा पुन्नलोवड़े पण, ते क्षुयानी ग्रांति थाय तेम नहोतुं. एवी क्षुयावेदनी तें परवश्वपणामां अनंतीवार सहन करी ठे. माटे तने उपदेश क-रवाने एटलोज हे के, आज स्वायीनपणामां एकासणु करहें, अथवा एक उपवास करवों, तेमां पण तने महोटो विचार थड़ पडे हे. अने वती तुं एवं बोले ठे के, महाराथी संब-त्सरीनो उपवास पण बनी शकवो कठण हे. कारण के, महाराश तो एक घडिवार पण नूख्यु हार केo) तेवा प्रकारनी (वृहावि केo) क्षुया पण (आणंतरवुनो केo) आनंतीवार (आसी केo) वरपन्न पड् हती के, (नं केo) ने क्षुयाने (पत्तमेंवं केo) ग्रमाववाने (सबो केo) सर्व एवा पुग्गलकानिवि केo) घृतादिरूप पुन्ननासमूह जेते पण्(न तरिङ्गा केo) न समर्थ याय!॥६ ६॥ तुस्य रहेबातुं नथी. एम कहीने श्रमेक प्रकारनां सारां सारां त्योजन करीने जमे हे, परंतु हे जीव! आखो जन्मारो थड़ने ते केटला मण घृतादिक मिष्ट पदायों खाया हजे? तेतुं र बीव! आखो जन्मारो थड़ने तें केटला मण घृतादिक मिष्ट पदायों खाया हजे? तेतुं र केंग) तेवा प्रकारनी (

सेरवी जो के, ते घृतादिक पदार्थानी काइ पण विकास जलाय हे⁹ खर्यात नयी जणाती मत्त हवेयी पण न भनेक फकाचन नन होंचे तुस पवानी नयी। आने जिह्ना इचिन् रहाना मूलमा पाणी मूरुवायी मद्य मासा होय, ने पएा कुमांगे जेएो रसना इंडि र्ज । पायी प्रसरे #, 레디 더 라 타.

-3-35-4- Y27

125

त्रधान

<u>अ</u>0) शंकड़ों. (ज्याषोगाई के०) अनेक एवां (जम्म-हास क-(जहिं चियं के) यथा इज्ञा प्रमाणे. । सयाइं के॰) (डस्नेता केंग) जम्मणमर्णपरियङ्णसयाई ॥ परावतीन तेनां (कान्त्रणं के ।) करीने नामे हे. ॥६॥॥ लहइ जिहा हिय भीव जेते ारेयहण् कें)) मनुष्यप्णाने पामे हे, त्यारे (लहड़ केंग) (जीयो के०) रटले जन्म मरागनां शेंकडो परावतीनने । इज्ञा प्रमाणे कुशतपणाने द्योगाई। ग्रर्थ-(जर्ड के०) ज्यारे ए मरए केंं) जन्म मरए काकपाम (माणुसनं के०)

R

R D रिंक कारण बंद करीन मनुष्यपणानि

स्वने आपनारों, तथा मांकना सु-

र्टले देवताना

एवां जन्म मरणनां शेंकडो एटले क्यारंक जन्म, क्यारंक

नावार्थ-रे आत्मन्। अनंत ।

मरएा, ए प्रकारनां डःख सहन करीने, ज्यारे आ जीव मनुष्यपएााने पामे हे, एटले झकाम

टाते करी इ खे पामवा योग्य एगु (च के॰) वली (विञ्जुलया चचल के॰) विज्ञतिकप ज तानी पेंठे चचल एवु (ते के॰) ते, एटले ते योग्य एगु (मणुयत के॰) मनुष्यपशु, तेने पा-श्रभं-(नो के०) जे पुरुप (तह इझहजन के०) तथा प्रकारे एटाले चुझकादि दश ह ग़कती नयी एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोष् सर्वे ना करता छा। मतुष्यत्रवने जनममा जनम गएषो हे अने व्या द्याते हरी ज्ञीन पण एटलाज माटे कहाो हे। छा। द्या द्यात्तु स्त शिलने आपनारो, मा मनुष्य ना है परंतु मनुष्यना विना कोड प्रवयंद्धे मुखनी प्राप्ति थह त तहङ्खहिट्लन । विञ्जुलयाचचल च मणुयत् ॥ हप प्रसिद्ध माटे तथा प्रय तिस्तार थवाना नयथी लस्सु नथी मोंया मनुष्यत्तवने पामीने एले गमावी खारसर चूकरो नहीं ॥६॥॥ । सो कार्डारसो न र ु , 0 धम्मामि जो विसीयइ ।

मीने (यम्मामि के) यमीने विषे (निसीयड के) लेद पामे हे (सो के) ते

नावार्य-जेनगासनमां प्रसिद् एगं वंश ह्यांते डातेन एगं, यमे विज्ञीना फवका-पण, जे पुरुयो धर्मसायन करवामां प्रमाद करे हे, ते पुरुयो निंदा करवा योग्य भाष हे, पण ते त्रखुरुयोनी पंक्तिमां गणवा बायक थता नथी. माट हे जीव ! पूर्वे अमुनव करेला पशुपणा-क्रसित (मिंदित) पुरुष जालबो. पण(मप्पिसो के॰) सप्पुरुष (म के॰) म जाएवो.॥६०॥ त्रव अही द्यापमां थयो, तेमां वली कर्म जूमिमां थयो. तेमां वली आर्थ देशमां थयो, तेमां वली छत्तम कुलने विषे थयो, तेमां वली अविकत्र पंत्रेष्टिंय पूर्ण थयो, तेमां वली निरोगी काया पाम्यो, अने तेमां बती सदगुरुनो अने सत् शास्त्र सांजत्रवानो जोग बन्यो: तेम ततां तनी पें क्णानंगुर एवं, ने जेमां कोड़ प्रकारनी पण खामी नथी एवं. एटले जा मनुष्वनो । जिणिस्थम्मो न कन य जेणे॥ ना स्वनावने मूकी देड़ने, मनुष्यनवने लेखे लगाडनामां उथमं कर्य. ॥६०॥ हजा मलवा य व्यवस्स ॥ जपनानिर्माम, ॥ माण्स्स्तम्मे ति लघ्यंमि। जन भागकप्ता थ्यपै-(जेएा के०) जेखे (नडि के०) ससारह्य समुज्जा काग्रह्म (माणुस्सजन्मे के०)

ममुष्य जन्म (त द्यामि के) पामे सते (जिशिवयम्मो के) जिनेष्ट्नो धर्म जे ते (न कन्न

किंग) नपी करवो (तेष केंग) तेषे खर्यात् तेने (य केंग) पण (जह केंग) जेन (पाणुकपण किंग) धनुपीरि पुरुप जे तेषो खर्यात् तेने (गुषों केंग) पण्ड (तुड़े केंग) तूटे सते (खरस्त केंग) निमें (हड़ा केंग) श्पर (मलेबा य केंग) यत्तया पडेज हे तेम खा जीवने पण हाय प-सर्ता पढ़े हे एटले पढ़ी पक्षात्ताय कररों पड़े हे ॥ इण्॥ ि नावार्य-द्यतता जनक्ष्य ससुझा नटकता मटकता मनुष्य जन्महप कानो प्राप्तथष् सते पण्, जेले अहिसाहप जिनथमे न आचरण करयो, तेने, जेम रणस्याममा युद्द कर गा है गएजा एक धनुगरि पुरुषमा थनुष्यती पण्ड तूटी गड़, तेथी तेने जम हाथ पस्या पख्या, तेम

तहारे पए हाय पता पटहो माटे, हे जीव । जो तु पण उती सामयी सते जिनयमेरूप नातु नहि महाण करे, तो तहारे पए मराशावस्थाये पश्चात्ताप करबोज पडहो ते छा प्रकारे के, छोरे ।।

में जती सामग्री ए पए आज्ञा कुरचु।।।के, परलोक्ते जताध्रिपंत्प नातु काड पए लोधु नहीं!माटे ढवे हु ग्रु करीश़ ! एवी रीते तहारे हाथ पस ग पडशे वली लेम छा नयमा पोडो

नवनेयपारेग्गह विविहजाल । संसारि व्यांचे सहु इंद्याल ॥५०॥ अर्थ-(रे जीव के॰) हे जीव! तुं (निसुणि के॰) सांनल्य के, जे (चंचसमहाव के॰) जातु जिया शिवाय जतो नथी. तेम तहारे तो अहियी मरीने क्यां जबुं पडशे? ने त्यां केट-जा दिवस रेहेबुं पडशे? अने कोने त्यां जइने जतारो करवो पडशे? अने मार्गमां जातु जि-ग विना गुं खाइगुं? इत्यादिक परलोक संबंधी तने कांड पए। विचार थतो नथी! माटे हे भ्रयों बंदोबस्त करी राखे हे के, अमुक जग्याये छतरीशुं, ने त्यां अमुक नोजन करीशुं. रीतनो वराव करीने पढी पोतानी साथे नातादिक घणी सामग्री लेइने जाय हे. पण गल रहे आ माटे कोइ पुरुष ज्यारे परदेश जवानी होय, त्यारे ते पुरुष प्रयमयी जाता विगरेनो मूढ जीव! सर्व डःख मात्रने निवारण करनार झने मनोवांछित सुखने आपनार एतुं ' संसारि ऋि सहु इंद्याल ॥५०॥ रेजीव निस्राणि चंचलसहाव । मिट्हेविणु सयलावि वप्ननाव ॥ नातुं संगाये राख्य. ॥ हण।

चचज स्वलापवाला (सपत्नवि के०) सर्व एवाय पष (बद्यलाप के०) हारीरादिक घाद्यत्रायने तेने (मिन्हेरिए के॰) मुकीने परतोके जईम, एहेतु माट (ससारि के॰) ससारने रिपे (झिंडी के॰) जे शर्रारादिक देखायटे, (सहु के॰) ते समझ (इदयाज के॰) इड्नाज समान टे ॥ॻ॰॥ वतो चचन राजावरालो ठे एटले कृषमा देखाय अने कृषामा नाश पामी जाय एवी ठे एटबुज नहि पण सतारमा जे ने यसु देखाय ठे, ते सवेंने तु इष्डजाल समान जाषीने तेने विषे मोह ममल न करघ कारण के, ते सघवा बाह्यनावने मुनीने तु एकबीज परतोक-मा जईंग, पण पूर्रे कही तेमानी कोड़ बस्तु पण तहारी साथे खाबवानी नथी केम क, ते त्या(मर्जेयपरिगह के) नव नेदवाता परिमह्तो (विविह्तान्के) श्रने ह प्रकारना समृह, नावार्य-हे श्रात्मन् । तहारु हितकारी एनु झा एक गाक्य सानत्व्य आ देखातो श् रीरादिक सवतो वाद्यमान ठे, ते ऽघ्वजाज समान ठे एटले नय प्रकारनो परियह^भते स * १ पन १ थाय ३ दात्र ध घर, ५ सुम्राण्ड ६ म्यु ७ मात्रपितल छ नीपत्थ मृतुष्य सवे, वस्तुताए श्रसन् हे माटे तेने विषे तु सत्यपणानी च्राति न करीश ॥७०॥

स्त्री पुत्रादिक सी पोत पोतानां स्वाथी हे. पए। कोई कोईनुं न्यी. जेम के, जपर ज-जाबाथ-आ जगत्मां परलोकने विषे कांड पण सहाय्यता करवाने न समये एवां माता (इहलोड्अ के०) आ लोक संबंधी (सब के०) सर्वे एवो (मिस के०) मित्र (घर के०) गृह (घराणि के०) स्त्री, तेम-नो (जाय केण) समूह जे ते (निय सुह सहाय केण) पोताने सुख करवानो वे खनाव ते जेमनो एवो हे. एटले सी पोत पोताना सुखना खर्यों हे. पण (तिरि निरय हस्क केण) ति-(तुह केण) तहारे (सरीध केण) शरण करवा योग्य (कोड़ वि केण) रिच तथा नरक ने संबंधी डःख, तेने (इक्षल्लु के०) तुं एकलोज (सहासि केण) सहन करें है। तिरिनिरयङक रह रथ रध रो ए रें मुक्त । इकान्नु सहिति । प्यप्तमित्यरघरिए। प्रहलोइञ) यतु नया. ॥ ।।।। अर्थ-(मुख्न के०) हे मूर्खे!। (पुत्त के०) पुत्र (प्एा ते बखत तेमांचुं (तु होड् पएा (न अधि के॰) पेय केंंं) पिता (

थाटलु काम झ-ड्ब्य तेनी पत्तवांढे शुन विचार पण तेमने नथी त्यापी माडीने परतु ते बापडो नरकादिक ग १ तथा ते विचारो घषु इञ्य माण्स भी विचार पण तेमने न पोताना परताकन एडी दिवस पोताना शरीरमु सुख पण न विचारता कुढ कपट खेला परना माणसोने एनो निश्रय याय हे हे,'हने झा पथारीमाँ मुगैरोलो । नरपूर वेदनामा तरफडतो . तमे ठानी रीते सचय करेंड ग्यापी समजवा १ गया पठी पण केवल पोतानो स्वार्थ सनारो सनारीने रुए हे, के, र्त्वी रीते पोतानो स्यार्थं साधवानी व गयो है। पण तेना बीजा ड खमा नाग न लेता फक तेनुज चापछु, एवो विचार पण नभी पतो छाने बती छाचो थुरु मुकान गया प्यस्त का प्रमान में किस्सा करतु है पर चोके सता सूनी पण एखे आपणा, चेतरु कृष्या करतु है पर |तिने विषे एकतो गयो है, त्या तेने केवा छ ख पढता हशे? . मरण पीपण करबु छे लीयो नभी एवी रीते मुकीने गया । पए तेत्र एम नथी विचारता के, उ गरीने ने सूतेला 争 मूकीने गयो है।

살

नद्भ

56.4

हरवानां झनकाज्ञ जरा '

```
ر
ا
                                                                                                                                                                                                                                                                                                      ता अध्यवनमां हे. त्यांथी विस्तारना आंथे पुरुषाए जारे लेखें
                                                                                                                                                                                                                               जिध्वत जे ते चंचल जाणवं. मांटे श्री महावीर स्वामी गी-
                                                                                                                                                                                                                                                       विस् के ) हे गौतम! (समयं के ) एक समय मात्र पण
                                                                                                                                                           (नसांबंडए के॰) जा-
                                                                                                                                                                                । लांबो थतो सतो एटले वायुवडे पडवानी तैयारीमां
                                                                                                                                                                                                           (चिट्ट केंग) रहे हे. (एवं केंग) ए प्रकारे (मणुआण केंग)
पामीने
जीव! हे महा मूखी! कांड्कतो विचास्य!! के, हुं आश्रवनावमांथी निस्ति
                                                                                                                                                                मानना अयनागने विषे
                                                             ॥ मागांथेकाइतम् ॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                          (कूसम्मं केष)
                                                                                 ्र
न जह नमबिंडए ।
न
                                 नावमां वर्तु ॥७१॥
                                                                                                                                                                                               बिंड जे ते (लंबमाणए केंग)
                                                                                                                                                                                                                        (योवं के०) थोड़ो काल।
                                                                                                                                                                        一种(
                                                                                                                                                                                                                                                                                              मा पमायए कंग
                                                                                                                                                                                                                                               तमन
                                                                                                                                                                                                                                                मनुष्य जे
```

पहे, थोडोज काल रहे ते 3 हे एटले जोता जाता जल्प गायु वडे पण शोघपण नाश पामें तिहु हे खर्यात माना थामें पे पे खेला जलािंड तो, फक्त वायाडेल नाश पामें हे प्राधित का मनुष्य तो, खर्मिक प्रकारना कारणोथी मरे हे जेम के, ताव खाववाथी, मुजारों ह गगयी, सर्प करडवाथी ड्लाहिक अनेक प्रकारना कारणो मतवाथी डिचितो नांग पामे य्रवाथी, कोनेरा (कोगतिषु) आववायी, पर पढवाथी, जाग्नवढे बलवायी, काख प्रमुख वा नावार्थ-श्री महावीर स्वामी गौतम प्रत्ये कहे हे के, हे गोतम। एक समय मात्र पण प्र माद न करीक् केम के, था मनुष्यपद्यानु जीवबु मानना श्रमनागमा रहेद्या जज्ञानिङ्मी था डश्तेशा उध मी ए व गायात्र श्री मूपगदाग सुमना प्रथम उत्तरत्त्वमा वैतालीय छाण्ययत्तती त. हे एम जाएीने हे जीव। धर्महत्यने विषे समय मात्रनो प्रमाद न कस्य ॥७१॥ र १ १ ॥ १ ॥ समुद्रह । संबोही सन्न पिच

1231 त्य १९ १९ १९ में मुलह पुणरवि जीविय । नो हु वृष्णमति राइन । नो मुलह पुणरवि जीविय । इसिहा॥

B.~

कर्या एवा, अने रात्री दिवस जीवियं के ोही केंग) प्रत्ये श्री झादीश्वर नगवान् ठपदेश (सड्डे केंग) नथी. नेम अर्थ-श्री क्यनदेव स्वामीना एत्र श्री नातेश्वर, तेमाो तिरस्कार मर्ण पाम्या पठी परनवने विपे केम तमे वाय नथी पामता ? संबुद्धह कंग) डिलेन हे.

किं न बुझह के०)

ज्यना अपि।

) सुलन्न नयी. ए ते ऋयति तटेलं । सुतन नयी. (सुलहं नो के) (मुलहं नो केंं) (जावियं के) फरीने पण एटले फरी फरी। इतिन हे. ग्रथवा करीने पण र (ड्झहा कें) निश्रं (जवणमांति नो केंं) काइ पए। समय (एच कें) 可数((पुषारवि के) (युषारिव के॰) वित ाम्बं जेते (स्यमह्प थानब

₽/ सामग्रीसते पएा, केम बोप पामता नथी? चारित्ररूप धर्मने जाएगे. कारण के, आवो

दशन न

घ्रयांत् त्रोगने हुच्च जणी, तेनो त्याग करीने सन्धरेत विषे बोध पामो ते कह्यु ठे के,

लुब्धे स्वरूपमचार मे जातु स्वरूपपद्गाप्ति न मले सते, तहारे लगार मात्र पण काम सुख सेवबु घटतुं नथी

श्चर्∽मोङ्गादिक सुखनो छापनार एयो, मनुष्यनो नय मले ≀

धर्मफ़ल नथी कख़, तेने परनवमा सजमरूप

सुखने थपें रताकर समान । करीने, तेने बदले काचनो ककडो

तिशे झल्प अने तुष्ठ एवा विपय ह्यां एवा त्नाकरमां स्थाग

माचनो ककडो टोबो गु तहारे

तना समूह जेमा रद्यो ठे, एवा रत्नाफरने पामीने एटले रतनी खाण रचे, युने वती अल्प मृत्यवाहो एवो काचने कळले नेने म सुखनो परिषाम सारो छावतो नपी ते छपर हष्टांत कहें हे

118511 र्वा, रात्री दिवस 4 मलतुंज नथी. वली गयेला एवा, ने धर्मसाधन करवाने योग्य । धमत् थ ात्रा दिवस उत्यादिक हवे सर्व संसारी

00

(बुद्धार के व) (सेले कें) तहर (जह कें) जेम (चयात (महरा केंं) वाल एवा (य केंंं) रहेला एवाय पण सिन्न वह्य हर जुमा त अन्त ग्रयं-हे जात्मन्! महरा प्रचावि के।)

(एवं कि ०) क्च थये सते (तुद्दई के०) हरे के0) हरण करे ठे. अर्थात

चाठखानो

गि उस्त्रयांमं केंं

पासह कं0)

छपदेश करवा योग्य होय, तेनेज मनुष्य कहीए परतु जे छपदेश देवा योग्य न होय, तेने तो मनुष्वनी पक्तिमा न गणवा एम घषकारनो थानिप्राय हे बली मनुष्यनु आयुष्य ज्यनेक प्रकारना कारणे मलवायी प्रशुच्न चचळाटे एम जणाववाने छापे सर्वे ज्यवस्थामा मरख क्रीने षामे हे अने केदलाएक महाकष्टे करीते, जन्म यया पत्री वाजपणामाज मरण पामे हे अने सरए। पामे वे झने केटलाएक तो इव्हारस्याना ड ख चीगवता मोगवता, पराणे पराणे प्या परीति सरण पामे वे चली छा जन्याए मानय कृष्ट् महण करयो वे, तेनु ए कारण वे के, रेखाङ्मु ठे वली श्री सूपगडाग सूत्रना प्रयम श्रुतस्कथना बीजा बैतालीय अध्ययनी बीजी नावार्थ-हे जीव। तु विचारीने लोके, केटलाएक मनुष्य गर्नमा रह्याथकांने मर्गा केटताएक जवान घ्रास्थामाज पोताना स्त्रीद्यादिक वहाता पदायोंने, छाणइड्डापे मूर्काने अथं-त्राष पत्योपमना व्यायुष्यवाताने पण्, पर्याप्ति पाम्या पठी व्यतमृहुर्ने त्रिपल्योपमाधुष्कस्यापि पर्याप्यन तसम नमुश्र्मनेच कस्यति भृत्युक्पतिष्ठतीति क्एं बायुच्य नाज़ पामे हे ख्यवा मृत्यु ने ते जीवितने हरे हे ॥ ग्रधा ॥थानी दोषिकामा तथा टीकामा कह्यु ठे के,

है मोइक पुरुषने मृत्यु ने ते प्राप्त थाय हे.

बती भी गणांगजी सूत्रना सातमा गणामां कह्युं हे के,

मन विहे आउ नेरं. पत्रते तंत्रहा. ॥ आयाहत्त्रम् ॥

॥६॥ अने श्वासोच्चासने रंथवापी. ॥७॥ एम सात प्रकारे खांछल् नेदाय हे. खुषवा ह-॥४॥ तथा पराघातथी एटले गर्नेपातादिकथी. ॥५॥ तथा तरेहवारना सर्पादिकना स्पर्शथी. तथी. ॥१॥ तथा छात्यंत आहार करवाथी. ॥३॥ तथा नेत्र छाने ज्ञादिकनी वेदनाथी. ग्रथं-आयुष्यनो नेद एटले उपक्रम जेते, सात प्रकारनो कह्यों ठे. केम के, निमित-नुं पामवापणुं ठे ए हेतु माटे. हवे ते सात नेद देखांडे ठे. सराग स्नेहना न्यथकी एटले आगल गुरे हे. एम आगल पण संबंध जोडवो. ॥१॥ वली इंफ शस्त्रादिकना मिथिता कोइना उपर अत्यंत स्नेह होय, तेवामां तेनो नाश सांनलवाथी उत्पन्न थयो जे नय, मामे याणापाण् । स्तावहं नियप् याम ॥१॥ अझमाण निषिने । आहारे नेयणा परायाए ॥

**** एडु छाउलु तेन पूर्वे कहेला निमिनपी बुटे हे था पूर्वे ने प्ण निरुषक्रम आडखावा नोपक्रम कर्मथी SE SE त्रदत्त म धन करवामा सावधान था । पए। नाज़ पामे हेः दर्घा विस्मति न पावाड पक्रम ने कारण ने जेन, तिह्यणजप <u>~</u>

<u>፟ጜፙኯኯኯኯፙፙጜጜፙፙፙፙፙፙፙፙጜጜፙፙፙፙ</u>

नयी इसरता, तेवा निर्विज्ञ जीयोना विवर्षणाने विकार पाठी विकार याठी! एम जातिशे अथे-(ज के०) जे पुरुष (मरंत्रं के०) मरतो एयो (तिह्यणजाएं के०) त्रण जननना जीनने, मरता देखीने अने जाएगिने पण पाताना आत्माने धर्मने विषे नथी जीडता, तथा हिंसा दिक यकी निर्शत नथी पामता, अर्थात् ने कत्यथी पाप मंगाय हे, तेवा कत्यथी पाठा नायार्थ-स्वर्ग मृत्यु ने पाताल ए प्रकारे जण जोकना रहेनारने. अर्थान् सर्व संसारी डता, शने (पावान के०) पापयकी (न विरमीति के०) नथी विराम पानता (ताएं के०) ते-जनने (इड्ण के०) देखीने (ग्रप्पाणं के०) ग्रात्माने (न नयंति के०) धर्मने विषे नथी जो-मना (यीठनएं के०) चिठड्पणाने एटने निर्जे जापणाने(यीयी के०)थिद्यार याचे !१ ॥९ प॥ मामा जंपह बहुयं। जे यदा चिक्रणेहि कम्मेहिं॥ विकारपणु जणाववाने माठे वेबार पिकार अन्द कह्यों हे. ॥ अप॥

स्वेसि तिस जायइ। हियोबएसी महादोसी 119६॥

भूषं-अयोग्य क्षित्योने ऊपापी गुरुने उपदेश ररता जोड़, योग्य क्षिप्यो गुरु प्रत्ये कहे । गुरी । (से के०) से पुरुपो (चिक्नखेडि के०) चिक्रषा प्या (कम्मेडि के०) क्षेम करीने (जायइक्ट) थाय हे ॥ उध नागर्--त्रयोग्य शिष्यने वारवार वोष करता देखींने, थाचार्ष महाराज प्रत्ये !) महादोप वालो, खयवा महा द्वेप राजी(महादोसी कें)

झा खत शिच्योने खापगमे तेटनो प्रतिनोय करशो, तोयपष तेष्ठे प्रतिनोप पामया कगण थने हे झुयोग्य हिप्तो पोताना छात्माने पण नाहा करे हे अथवा ते झयोग्य हिप्योने जे ते, विनती करे ठेके, हे नग पन। आपतो करुणासागर ठो परतु कृाना निविडपद्यर जेषा वडाने पण नाग्न पमाडे ठे तेम छायोग्य जीयोने बीप करेलु सिन्दात रहस्य से ते ज्ञाय हे केमके, जे प्राखियो झानावरणीयाषिक निविड ध वर्मोपहेज्ञ देवाने योग्य नंषी जेम काचा षडामा नाखेड्ड

प्रकापाय न शान्तये जपदेशो हि मूर्साएां ।

मुजन्नाना प्यःपान

सर्पने जे द्व पावं,

भाग

उपर कीप करे हे.

अर्थ-मूर्ष ब

B

. वधारतो जाय हे.।

तेम तेम त

। द्य पीए हे,

' ने ते, प्रकोपने अधे थाय हे. एटले डपदेश हे-

m' 6

(सयपा कें)

ग्ययवा जेने

यानंतु वे डःख ते जेले करीने

अणतड्सित् के

अ तिमन्

त्वा

यका ख्ययं जोने।

阿丁

।णविह्वपमुहेसु ऽणतः

ममनं

(धपा कें) धन एटले सुवपागिंदक ।

पामे हें ॥ उ ६॥

माता पिताविक सवत तथा.(विद्व पमुहेसु के०) हाथी, घोडा प्रमुख विनव, इत्यादि-कने विषे (ममत के०) ममलजावने हु (कुणिस के०) करें हे (पुण के०) पातु (ज्यापत-सुस्त्रमि के०) ज्यनतु हे सुख ने जेने विषे एवा (मुस्त्रमि के०) मोक्टना सुखने विषे (ज्याप-र के०) ज्यादर्ते हु (स्तिहितोसि के०) शिषित करें हे एटले हु मोक्टना सुख पामवानों छ-बनादिकने जो हु छपकारी जाणीने ममत्व करतों होय तो, एवी रीतना छपकार करनार तो, धनता नवमा खनता स्वजनादिक पया हे माटे ते स्वजनादिकने विषे तु केम ममत्व नभी करतो १ झने ते स्वजनादिकना दया हवात यया होशे १ तेनो पण लगार मात्र विचार नथी करतो | बती फक छाज नवना स्वजनादिकने छाँगे राग होपे करीने खेती, व्यापार, नावार्य-रे मूढ आत्मत्। अनत ड खना कारण एवा, स्वजन, विना, थन इत्या-दिकने विषे ममत्र करी महोटा ड खनो नारतु माथे छपाडे हे पण वर्नमान हालना रा-थने सेवाशिक के, जेमा प्राएतिनो उपचात थाय, एवी न करवा योग्य क्रिया, आ जीव करया द्यम नयी करतो ॥89॥

करे हे जेम फरगुरामे थनत वीर्प राजामा थासक पएजी रेणुकानामे पोतानी मातानु माथु

तेने मारी नांस्यो. वली पोताना स्वार्थ माटे सुनूम चक्तवनिये बाह्मणोनो अने कृत्रियोनो वली राज्यना लोने करीने कनककेत राजाये पोताना पुत्रोनां सर्वे छांग ठेइन कर्यां. वली ए वे जाइ बबे, महोटुं युद्ध थयुं. ने तेमां हजारो जीवोनो संहार थह गयो. वती विपर्य राग पूरो न श्रवाशी पोतानो पति जे परदेशी राजा, तेने सुरीकंता राणीये केर देशने मारबी. नीति शाखना कर्ता चाणाक्ये राज्यना लोजे करीते पोतानो मित्र जे पर्वत नामे राजा, एटलुंज नहीं पए।, ठेवटे गले नख पए दीयों! वली पुत्रीना स्नेहे करीने जरासंधे श्री ऊप्ण वासुदेव संगाये महोटुं यु ठ करी, पोताना कुलताहित हजारो जीवोनो नाश करयो. आग्ने सनगाव्यो. वली एक हार हाथीनी लडाइने माटे, फक्त एक पद्मावतीना वचनथीज एक क्रोडने एशिलाख जीवोनो घात थयो. वली राज्यना लोने करीने जरत छने बाहुबबी कापी नाख्युं. तथा तेज फरगुरामे पोताना पिता छपर राग होबाथी एकवीश्वार नक्त्री मंबीखानामां नांख्या. तेमज पोतानी मनोद्यनि प्रमाणे चालवामां झडचण करनार जाणी-ने, च्लणी राणीये पोतानो पुत्र ने बहादन, तेने मारवाने अर्थे जाखना मोहोजमां घाली एथी करी. बज़ी काणिक राजाये राज्यना लोने करीने पोताना पिता जे अधिक राजा,तेमने

1 to 1

क्य रुखो एगी रीतना व्यनेक ट्यातो हे ते जो लख्या नैसीए तो तेनी एक महोटी मथ

पुत्रों में भाता में। स्त्रनते में गुहरत्तरत्ता म ॥ इतिक्ठतममेराच्द् । पशुमिर मृत्युत्रन हरिते ॥१॥ | यता पए। पार त मारे माटे विचारवानु आवजु छे हे,

हैं स्वजन, या महारु पानी दिनास एनु निवार ने के, या महारों एम, आ महारों नाई, या महारा इस्वजन, या महारु पर, या महारा खोखादिक बाहुनारी, परतु ए प्रकार बोजनाराने जैम पा तिको पुरुप, में में करता एगा बोकडाने हरण करे ने, तेम मृरगु ले ते, में में(महारु महार) करता प्राणीने एकडीने लेड़ बाप ने ॥१॥

गार गार कोई पण ते सरनारने राख्या समर्थे पतु नभी, एटबुन नहि पण, पंताना स्यापेमा श्री सामी कोई पण ते सरनारने राख्या समर्थे पतु नभी, एटबुन नहि जबु"ए रीपान प्रमाणे तेज सम्योपो श्री सामी जाववासी,पोडा दिगस रहन करी "गवेलाने चूली जबु"ए रीपान प्रमाणे तेज सम्योपो

माटे तेना छपर ममरा करवापी डजडु पाप बयाहो पण तेमातु कोड मरी बधे,त्यारे ते

्र लामी आववात्यां प्रांत प्रियंत रहन करा "प्यान" पुरा "उ. " होने दिसरी जाय है जैम पीताता बीग बर्षमा पुत्रता मुखु समये फक मोहना छठाला-है भी गाहरवर्ष (जावा रागे रुमो पाडी) रुदन करतार यने ठाती कुठनार पिता, पोताना बीजा

पण स्वार्थ युक्त, अरुप मुक्तनो, स्थिति पूर्ण थये त्रुटनारो, ज्ञापणो राख्यो नहि रेहेनारो, अने परिणामे डःखकाइ एवो इंड्जाल समान खोटो ठे. तेथी तेने विषे समत्व थारण क-हपुं, हीरा, माणेक, मोती, शंख, प्रवावां, तेना जपर पण् जे ममत्व करवो. ते पण परिणामे डःखनुंज मूल हे. माटे जे जे कत्य करवुं तेनु परिणाम प्रथमयीज विचारवुं के, या कत्यनुं परिणाम शुं निपजशे ! ते जपर नीतिशास्त्रमां कह्युं हे के, आखा दिवसमां एवं काम कर्बु मुंजाइ एटले ख्रुशी थड, अगाउनी ख्रीने विसरी जाय हे. तेमज पोताना बंधुना मृत्युथी पुत्रादिकनी साथे इञ्चादिकना नागमां कपट आदरे हे. एवी रीते स्वजन परिवारनो संबंध रवो ए पण केवल अज्ञानताज छे! एवीज रीते हाथी, घोडा, रथ, पायदल विगेरे ठकुराइ पुत्रना लग्न समये, ते मृत्यु पामनारने नूली जह, वर्तमान समयना उत्लाहमां वूर्ण हपेयी डःखी थयानुं बतावनार च्राता (माइ) योडा दिवस पठी ते बंधुना स्नेहने नूली जह, तेना ग़खल याय हे. एज शते झत्यंत स्नेहवाली स्त्री (नायी)ना मृत्यु पठी, तेज नर्नार बोजी न्नी साथे विवाह करी जाएं। आ संबंध सदाकाल रेहेवानोज होय ने गुं! एवा खोटा मोहमां गण अनित्य हे. तेने विषे जे ममत्व करवो, ते पण मोहचेटा जाणवी. तेमज धन,

श्राव मासमा एवु काम करतु के, जेले करीने मृषे विशेष धर्मध्यान थाय तथा पर्ने ध्यान्त्या (डहहें कि) ड खन् कारण है 110011 नवी यवाय (म केंग) श्रद्धया । श्रर्थ-हे जीव! (ससारो के॰) त्रा ससार जे ते (असम्बत्ता के) इ ख ए ज मता हे जेनु ए गो हे नेयी रात्रीये सुखे निद्धा घाषे सहन थाय, प्रु नं ड ख ते 119911 न चयाते ससारा ोमासाना च्पार महिन मा एवु काम कर्छ

जाना के

अध्यक्ष कष

(न चयंति के॰) नथी त्याग करता. अर्थात् संसारने डःखदायक जाऐ ठे, तोयपण तेना

্ৰ প্ৰত

m Ci

नावाथ-आ संसारमां सर्व बंधन करतां प्रेम बंधन आतिशे महोटुं हे. ते कह्युं हे के, रात्रिगीमिष्यति ज्ञविष्यति सुप्रजातं । ज्ञास्वानुदेष्यति हसिष्यति पद्भजश्रीः ॥ ॥ वसन्तितिलकाष्ट्रतम्. ॥ याग नयी करता. ॥ 90॥

इझे विभिन्तयाति कोरागते धिरेफे। हा हन्त हन्त मलिनों गज छक्तहार ॥ १॥

अर्थ-जेम कमलनो रस पीवाने बेवेलो एवो जे नमरो, ते मनमां विचारे हे के, दारजेद्निपुर्योगि पडङ्गि।निष्कियो जनति पक्षजकोये ॥ १ ॥ वन्धनानि खन्दु सन्ति बहूनि । प्रेमरङ्काकृतवन्धनमन्यत् ॥ ॥ स्वागताष्ट्रतम्. ॥

****************** हरतां करतां संध्याकाल थड़. ने कमल मिंचाइ गयुं, ते बखते ते नमरो विचार करे छे के, रात्री जशे ने सारो प्रजातकाल थशे ने सूर्य उगशे, ने कमलनी लक्ष्मी हसशे एटले प्रफु-संध्याकाल पडवा ज्यावी, ने कमल मिंचाइ जरो; माटे हुं छडी जछ तो ठीक, एम विचार

क्षित थरो. त्यारे हुं छडीरा. एवो विचार करे छे. एटलामां पाषी पीवाने माटे आवेला हाथीए

अनुनव करे 3 एटले वेदनाए करीने आखमाथी आसु चाल्या जाय है, तोयपण मोहना ठद्यपी नोगनी आकाङा(इडा)करे ठे छाने पासे बेठेली स्तीना डपर हाथ नासीने पोतानी स्तीतु नाम देतो देतो मरण पामीने सातमी नरकने विषे गयो छाने त्या पण तीव वेदनानो छानुनव करतो सतो, ते सीनु नाम वारवार सनारतो सतो वेदना नोगवे ठे एवी रीते नोगनी छातािक त्याण करवी वणी इकर ठे छाने केटलाएक महा सत्ववाला सनत्कुमार हैं ने कमतने उपाडीने हा इति सेदें। मुखमा घाती, पेता विवास नमराने वृत्तवंहे याववा सिमान्द्रो। ॥१॥ ने वस्तेने पेता नमरो मरता मरता पशाताप करें ठे के, जगतुमा वयन तो घणा है, पण प्रेमहप वृश्ति वयन तो एक जुदी जातनुज ठें केम के, गमें तेबु काय होय होता होता होता होता विषे समताना वोताने विषे होता पण तेने विषयाने नमरो समर्थ होय ठे, परतु हुतो स्नेहें करीने कमताना दोताने विषे हिंदी रहीने तिमा रहित थयो एटले ते वोदाने कीरीने नीकती जवा समर्थ न ययो॥॥।-यत्ती हैं रहीने दिसम्मर्थ न ययो॥॥।-यत्ती हैं रहीने दिसम्मर्थ न ययो॥।।।-यति हैं सिहाने किरीने पराजव पाम्मे सतो अतिहो, सतापनी हैं ंचक्रवनीं जेवा पुरुषो तो,रोगनी वेदना थये सते पण देहने तथा झारमाने जुदो समफीनि एव विचारता के, आ महारु करेंसु कर्म मने उदय शाब्यु हे माटे महारेज मोगवबु पडरो र्यो निश्रय करीने समता सहित कर्म त्रोगवे हे. पए मनमां पीडा जरपन्न थवा देता नथी. महोटा विघ्न रहित ठ. एटले ए वीजमाथी वृद्य १ वृद्यने रोगरूप खंकुरा जत्पन्न थया ठे. अने पने जो तुं सम्यक् प्रकारे एटले सम्नावे नहि समनावे नहिं नोगबुं तो, छक् पोते पोताने हायेज वाञ्यो हे. ने तेमां मोहरूप पाएगि शिच्युं अने ते हक्तनी जन्मनूमि पए अग्रुन कर्मरूप क्यारामां ते. वती राग हेप कपाय, तेनी संतित एटले श्रीए, ते रूप बीज हे. ते महोटा विघ्न राहित हे. एटले ए बीजमांथी बुक पुष्पने जो तुं सम्यक् प्रकारे एटले सम्नावे ते महोटा विम्न रहित हे. एटले ए बीजमांथी उत्पन्न थया विना रहेज नहीं; तेवुं के. अने ए वृक्तने रोगरूप अंकुरा जत्पन्न विपत्तिरूप पुष्प आव्यों के. ते विपत्तिरूप पुष्पने जो तुं सम्यक् प्रकारे एटले सहन करे तो, ते पुष्पमांथी अधोगतिनां हःखरूप फल जत्पन्न थशे. ॥१॥ एवं विचारे हे के, तिलतो डःसर्योगामिनिः॥१॥ नक्षों यः स्वतं एवं मोहसांलेलों जन्मालवालोऽभुनो ज्यापदाने । रागडेपकपायसंतितमहानिविघ्रवीजस्तथा ॥ रोगैर इकुरितो विषत् मुमितः कम्मेद्रमः सामते शादेलांपेक्रींडितइत. आम विचारे हे के, जो हुं आवी पहेला सोंडा नो यदि सम्यगेप अर्थ-आ कर्मरूप

एवी एतो (जीयो केण) घ्या जीव महागमन एमाथी महारे ड्यांतिना ड खरूप फल उरान्न थरो माटे हे नव्य जीयो। या प्रहारमा ग्व (पत्रस के०) ड से करीने सहन करवाने अशक्य हे ड स ते डे नेयम (ब्रत्त) कोइ अत्प परिपहुषी ससारहर 113611 (विम्नचणान कें) वध वधनादिक गिटमना तेने करो मिय के०) पोतानु (कम्म के०) ज्ञानायराषीयादिक कर्म, ने रूप (नयानक) एवु (मसारहाणधे के॰) **३सहे** इस्मान हिति ससारने इ खमय जाणीने ससार बटाडवानो उद्यम मा, प्रयात नहाडचा वेटवनानुने पामे हे ॥ उए॥ पानए १ वेमव्याचि। न प नियकम्मपव्याचाले ज्यर्थ-(वारे केंग) वार डसहडस्कान के०) नावाथ-कांड पुरुष का का केंग

। डःखने, जगार विचारी जो के, तियँचना जव-निन्नवणदेहों के) ने-सीयलानिल के । शी-ाखवी. आ नेकाणे मेवकुमारने हखांत जाणवुं. ते हखांत प्रसिन्ध ने माटे लक्खुं नथी.॥ जणा (अरए) के०) झरएय (अटवी एटले पीडायो हे हढ एवा पण देह ते जेनो, एवा थयो सतो, तुं (अएंतसो एटले था जीव झनेक प्रकारना रसायण जेवां के. गंप महा महिनानों अत्यत ऽएपनता , पाम्यो हुं. ॥ ए०॥ (ताढां) वायु, तेनी (जहरिसहस्सेहि के॰) हजारो जहरीवडे हे. एटले पीडायो हे टर मने मम नेन के के निहणम तिथैचना नवमां। नीयवानिवा। वहारिसहरसोहि (शियातो) (निहणं के॰) नाशने (झणुपनो के॰) श्रणंतसो नावार्थ–हे आत्मन्! तुं पूर्वे अनुत्रवेतां (तिरियन्तर्यामि के॰) सिसिरंमि के०) गिशिर कतु दह, खूब मजबूत हता, अनतावार मर्ण पाम्या ग्रथं-हे जीव!

इतितास विगेर साझने शारिरने मज्जूत तथा पुष्ठ करबु पारे हे, तोषपण ते शरीर घोडा है। तेशु झपया पाडा जेशु करिएण यतु नथी तो पण ते शरीरने घोडानी तथा पाडानी छ- है। पमाँ अपाय हे तेवा वोडा विभेरे तिपैबोना श्रीर पण, अस्यत तादधी नाश पामे हे ते नाश पामवादिक इ ख ते अनतीनार महन करवा तो खा नवमा पर्मेतायन निमिषे अ-(ताडनो) परिपद्द तु केम सहन नथी करतो? ॥००॥ इस्से ग्रहिन गम्हायवसतता जेवु, द्यप्रयमा पाडा जेवु क पमा ट्यपाय छे तेवा घोः ट्प एम प्या शांत (

तिर्धंचनां नगने विषे (झराऐ के॰) अटवीमा 3 **अर्थ-हे जी**ग ! तु (तिरियनवे के**०**) सपनो तिरियनवे

) सारी ध ग्षी (बुहिन के०) क्षुया वेदनाने सहन करतो ग्रीप्मकृतुना तडकावडे (सतत्तो कै०)

पणी तृपा वेदनाने सहन करतो एगो, ने (यह के०)

सहन करयां हे. ते डाक्ट्रलहिरिसत आ तापनुं डाख, रया हिसाबमां हे ! एवो विचार तने गपने पण नीसहन करतो, तुं पंखा प्रमुखे करीने वायुकायना जीवोनो घात करे हे. पण म नथी विचारतो के, त्रिशेत्र-सवने विषे तथा नरक नवने विषे में आनंतां तापनां डःख तावार्थ-हे आत्मन्! जेम ते तिर्धेचना नवमां शीत परिपह सहन कर्यो. तेम उष्ण (श्रीष्मक्तुमां) एटले वैशाख जेठ महिनाना आकरा तापमां तें उष्ण परिसह सहन तेमां बली आतिशे तथा वेदनी तथा आतिशे सुधा वेदनी तेषे करीने, तुं अत्यंत र परंतु ते डःखने विसरी जहने, आ नवमां ध मतो सतो (मरणडहं के०) मरणनां डःखने (संपनो के०) पाम्यो हतो. ॥ । १॥ गिरिनिप्ररणोदगेहि बधतो ऽरसमित्र ामतो सतो अनंतीवार मरण '

नुसमात्र

110211

नावार्थ-हे जीव। तु तिर्वता जवने विषे, योमासानी क्तुमा दुक् प्रमुखने विषे रा 'वासास के । वर्णत्र **बहसो के**)वछीवार(मज़िस के o)मरण पाम्पोडे लीने मर्छ पछ पाम्बो ठे ने नदीयोमा त्राातों तछातों छनेक प्रकारनी चेदना 15 क्राइने पराएो प्राण स्पाग करबा हे. ए सपता कष्ने नु खाज केम विसरी ' अर्थ-रे जीव ! तु (तिरियन्तो के) तिर्धनपणाने विषे (देवस निर्ममन करता वरसातनी पाराजेना कद सहन करी 🤅 सीयामिल केंग)

* *********

(तिरियनवेसु के०) तिर्यवना (जीव केण) हे जीव! तुं (डडडकम्म केण) इष्ट एवां जे खात कमे. एरले इष्ट तलने आपनारां ज्ञानावरातीयादिक झाठ कमें ते रूप (पलयानिल के॰) प्रलय कालना नावार्थ—हे खालमन् ! तुं तिधँचना जवोने विषे पए। खनंतां डःख जोगवी खाठ्यो हे. ॥७३॥ (वसियों के०) निवास करी झाव्यों हें. ॥ ए रू॥ (नींसर्धाम के०) जयानक एवी। (नीसषात्रवारहो के॰) त्रयानक एबी (हिडंतो के॰) चाजतो सतो (नरएसुवि के॰) तारको गमे इः वे करीने अर्थ-(एवं के०). ए प्रकारे एटले पूर्वे कह्यं ते प्रकारे । । प्ररत्मा करची एवो, अने (अणंतख्नो के अनंतीवार (जीवो केंं) था जीव जे ते ((डाक्तमयसहस्तेहिं केर) (परित के०) गयु वहे (

(बङ्कानसम् ह केर) बजायिनो है। पाह से जेने विषे एडले झ-प्रनतीवार इ ख नोगञ्चामा खामी राख़ी नथी तोपए। बली पाठा तेनातेज इ ख प्राप्त ाय,तेवा उपाय करे जाय हे माटे हवे तेवा ५ खो नोगवता पड़े नहि, तेवो छपाय कर्ज ॥७४॥ जितिये गीतनी ने येदना पुनोस ड ख (अएतसो के॰) अनंतीवार (पत्तांसि के॰)' पाम्पो हे ॥ए॥॥ विलवतो करणसदाह नावार्थ-हे धारमंन् † ते क्वानावरषीयादिक ष्यांव कमें ः | वज्रानलद्धिपान सीयविष्णास् के सत्तम् नरयमहास् वासयो अपतत्वतो स्थित अधित भी ध्यर्पन्हे जीव

तरक पृथ्वीचने विषे (करुण-सतो (श्रणतखुनो के॰) धन-

नरवमहीमु के

सात

सन्स् के

(बांसियों केंग) बशों हे ॥ ए ५॥

30 नावार्थ-हे आत्मन्!तुं साते नरक एष्वीयोमां निवास करी आञ्यो हे. अने त्यां त्यां बेदना तथा शीत वेदना, आ नीचे लख्या प्रमाणे अनंतीवार सहन करी आव्यो हे. नारकीना जीवोने त्यांथी उपाडीने जो कदापि आहिंना थनधगता खेरना अंगारामां सुवा-माचलनी पृथ्वीने विषे राख्यो होय, अने बली त्यां अत्यंत वायराना फ़पाटा चालता होय, समयमां आकाशनी मध्ये आवेतो, मेघरहित, घषा खाकरा नारकीना जीवो नोगवे हे. ते नारकीना जीवोने पूर्वे कहेला, हिमाचल पृथ्वीना स्थानमां निवी उपाविद्ना रीए, तो जेम शीतल चंदननो लेप करयो होय, ने तेथी जेम अत्यंत मुखयी निष्ठा थाये तेवी रीतनी निष्ठा ते नारकीना जीवने आवे हे. एवीज रीते पोप महिनानी रात्रीने विरे मेघराहित आकाश घए सते, हदयादिकमां कंपाराना रोगवाला पुरुषने खावरण रहित, किरणवालो सूर्य, देदिप्यमान सते,जेना श्रीरने विषे पित्तनो प्रकोप थयो छे, तेवा ने,च्यारे बाजु खेरना अंगारानो खिटि सलगावीने तेनी वच्चे राखीए, ने तेने जेवी छप्पारे थाय, ते करतां पा छानंतगुणी छप्णवेदना, नरकने विषे नारकीना जीवो नोगवे ते बखत ते जीवने जेवी शीतवेदना थाय, तेथी पण अनंतगुणी शीतबेदना नरकने , ते करतां पए। अनंतगुषी उप्णवेदना, नरकने

10411 . तत्ये होय, तो जेम वायरा विनाना स्थानमा शियाताने विषे मिष्टा छावे, तेम ते नारकीना 11041 विषेते निद्धा खादी जाय हे 'माटे एवा इ ख तु छानतीवार सहन करी छाव्यों हे माटे हेर्फ त्रास पामीने क्रीभी स्वा न जबु पढ़े, एवा धर्मऋसमा सावग्रान या । ॥ तु ममुष्य चवमा पुष माता पिता स्वजनामिक प्रिय वस्तुनो।) केम नथी सन्नारतो १ (रहिनेक्) ७ १० ० ११ कि न त सरसि ॥ ६६॥ विलावित केंग) त्रीने हे खत ते जेनो, एवा ज्याधिये (मणुष्यनवं के०) पंडा पाम्यो एवं। एज कारण माट ((कि न सरसि के॰) अरतवाहिति <u>अर्थ-रे जीव ! (निस्सारे के०) श्रक्तार एवा (</u> पमाय केण) पिता माता आने (संपंता केण)) ते मनष्यनवने पियमायसयणाराह्

₽ ₩Ÿ*** थवाथी तथा अनेक प्रकारना शरीरना ज्याधिथी विलाप करी करीने मरण पाम्यो हतो, ते गतने तुं केम विसरी जाय हे ? मनुष्यनव आश्रीने अहं मंमत्व तथा मोहपणा सिहित

कथा. उ

नोम्यप्णा विषे एक सोमिल ब्राह्मणनी कथा टीकामां लखी हे. ते नीचे प्रमाणे जाणवी

कौशांची नगरीमां सोमिल नामे ब्राह्मण जन्मथी दारिष्टी एवो रहेतो हतो. ने तेने ह्यी, पुत्र, पुत्री, इत्या-घणु कुटुंब हतुं. ते कुटुंबनो पेरणाथी एक दिवस धन कमाववाने अर्थे देशांतर गयो. त्यां तेणे ज्यापारा-राहेत एवो, पण दाननोगे सहित, एटले महोटा दानेक्यी जेवो, एक योगी पुरुष दीठो. ते योगिये ं (गुप्त स्थानकमां) गया त्यां योगी बोल्यों के,आ ादक राहत एवा, पए दानजोगे सहित, एटले महोटा दानेव्यरी जेवो, एक योगी पुरुष दीठो. ते इच्यनी चिंतायी आकुल न्याकुल थएला बाह्मएते पूछवुं के,तहारे शी चिंता है।त्यारे तेऐ कहुं के, एज महारे चिंता हे. त्यारे योगी बोल्यों के, जो तुं महार्र कहुं करे, तो हुं तने महोटो धनाहय करें. र गत ते ब्राह्मणे फबूल करी. पनी ते बे जए। पर्वतनी तहलाटीम

मुचर्णीसिन्दि थवानो रस छे. एटले योगीए पूर्वे ताद तडको भूख तृषादिक वेठीने अने घएा काल सूधी सुकां रवा कंदभूल फल इत्यादिकनुं जोजन करीने, एवी रीते महा मेहेनत करीने अने समदीना पांदडानो पिडियो तेमां आ रसनुं एक टांपु पून्युं होय तीं, ते सर्वे पत्रामां रस वेंध इ जाय. पटले हजार पत्रां आक्षमां तपाबीने उपरा हरीने ते बडे रसकुंपिकामांथी लेहने घले काले घला पयासथीते रस तुंबडीमां जरी राख्यो हतों.ते पेला एटले त्रांबांनां , आ सहस्रवेधी रस है. । . म महाम

मनष्य नवमा रमिन रुरलंपय यह जाय 胡茄 था कथानु ।

तेवानु मन नयी थतु, ए बहु ३ विस्मिक्त अवसर अ पत्तु ब

करवाना

在沙地市中放汽

संसारक्ष

जीवो के

श्चर्य- हे थात्मन

गत्तधात

** * ** *** *** *** ***

200 बब्धे के नबाए किए)

110311 के 0.) पवननी पेठे (झालासिन के 0) खहश्ररूपे थयो सतो (नमइ के 0) नमे हे.। समूहने (समुश्रिक्ता के०) त्याग करीने (ग्यणमग्गे के०) आकारा मागिने विषे

थहने छडे छे. तेम केटलाएक पुरुषो धनने अथे श्रीरनुं डःख पण न गणतां, कोइ विला-यत जाय छे. कोइ चीन जाय हे. कोइ लंकामां जाय हे. कोइ बहादेशमां जाय हे. इत्यादिक अनेक देशमा जाय हे. तेवामां त्यां अनेक प्रकारनां निमिन मत्तवाथी मरण पामे हे. एवी रयपणाथी एटले आ पूर्वे महारो कोण सगो हतो? तेवा अजाणपणाथी अनेक स्थानने वेपे च्रमण करे हे. तेमां अनेक नवने विषे मलेलां धन तथा स्वजन इत्यादिकनो त्याग हरीने एटले तेमनी शी गति हशे ? एवी चिंता मूकीने वर्नमानकालनां स्वजनादिकने "सुखी हरवाने तथा धन मेलववाने अर्थे देशोदेश नमे हे. अर्थात् वायुवडे पांनडुं जेम पराथीन नावार्थ-जेम आकाश मार्गमां वायु फरे हे, तेम आ जीव पता नवाटवीमां शह-ति आ जीव नजरे देखे हे, तो पए। कर्म छपर विश्वास राखीने संतीष राखी धर्मसाधन हरतो नथी. ॥ एउ॥ **ルスタンスケンスト** ज्सता एवा 5 (याते केंग) अनुनवे हे ॥एए॥ (तहवि केंग) मूद हे मन हे ज़े 4 यमम यस्टन विञ्जिता केंग्) वियाता सता जावा ॥ (जम्मजरामरण केंग) जन्म जरा मरणहर (ससरत के०) नायपुषा (महमुषा कु०) Ē क्यावि हु । त्राज्ञाणनुषगन्निक्या महम्पा मसरत म् विधिज्जता असयै । जम्मजरामर्ष अर्थ-(सत्तारे के०) च्यारणतिरूप सत्तारने HHIV (असय केट) बारबार निव (জুল কীচ) জুণ न्ह्यु तत् डि ससारचारगाउ **डहम ऽणुह्**याते तहवि खषापि नीयनेत त्रित्त मानाये बद्धा कुछ)

मनुं एवा. अर्थात् मूर्वे एवा, अने (मन्नाण्नुयंगमंकिया के०) अज्ञानरूप सर्पे मरया एवा (जीवा के०) जीव जे ते (कयावि के०) कोड् वखत पण् (हु के०) निश्वे (संसारचारगाने नावार्थ-जेम कोइ नाली मारे, ने तेनी वेदना थती होय, तेवामां वदी बीजो नालों अज्ञानरूप सर्पे मग्नेला एवा मूह जीव, संसाररूप वंधिखानाथी कोड़ बखत पण कृणमात्र (नय अबिझ्ति के०) छहेग गरे एवी रीते उपरा उपरि वागवायी जेवुं डःख जोगवे, तेवी रीते आ संसारी जीव पण जन्म जरा मरण इत्यादिकनां घणां नयानक इःख उपरा उपरि नोगवे हे.॥ जा तोयपण नथी पामता, एटले वैराग्य नथी पामता! आते केटलं बधं आश्रर्य? ॥ एण।। जावियनाह ॥ ए० (खणंपि कें) क्रणमात्र पण नहेंग पामता नथी. आ केटलुं बंधुं शास्त्रयें हे !!! ॥ एए॥ सरारवावाड कीलिसि कियंतवेलं कालरहडघडाह ससारहप वांधेखानाथी

(सरीरवावीड् के॰) श्रीररूप वान्यने विषे (कियतवेल के॰)केटला ाह(सोसिज्जड् के०)शोप पामेठे छार्थात्मुकाइ जायठे । केंग) जे ग्रारीररूप वाञ्यने 1 ५०) किया करीश ? (जर्ज

जीवितह्म जनमो प्रव ं सूपी (कीलिस के समय समय प्रत्ये (टार्यन्हे जीव। त भुष् ê

भावापे-जेम खूंट वहे वाज्यमायी जेम जेम पाणी काढ़ीए, तेम तेम ते पाणी छेठु हैं पतु जाय हे तेम हे जीव। में पाण जेटलु खायुष्प वाषीने जन्म लीगो हे, ने तेमायी जे से समय जाय हे, तेटलु खाछबु छेठु थतु जाय हे कहेवत हे के, माजाप जाणे के, महारो हिक्सो महोटो पाय हे, पात दिवसे दिवसे खाजबु घटवाषी नहानो थतो जाय हे ए हैं प्रमाण विचारता तो, खाजखानो छात खाचता वार नाहि लागे केमके, समये वट- हैं वापणु हो माटे जेमके, कोइने शुली हेवा लोड़ जाय है अने ते शूली सी मगला होटी हे त्यारे ते माणा जेम जेम काली सन्मुख पगला नारे हे, तेम तेम तेम मुख्य निक्त मालिक खायतु जाय है छ खने ते वालत तेने खानपाता विक छाइपण गमतु तभी केमके, एने मृत्यु निक्त छाइप जाय

तेम हे चेतन!

*ትሎቲዮ-ፍሎ*ቶታዶ*ፍሎ*

```
तन्मुख आवे जाय हे. एटले जो कदि तहारुं आयुष्य सी वर्षनुं होय, अने तेमांथी जे जे
                                                   तेटलुं आयुष्य सो वर्षमांथी नुहं थयुं जाणादुं. अर्थात् या यत्प आयुष्य जपा-
                                                                                                   पुरु थशे. अने मनना मनसुबा मनमां रही जशे. अने पांडलथी घषोज पश्वानाप
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            अर्थ-(रे जीव के₀) हे जीव! तुं (बुझ के₀) धर्मने विषे बोध पाम्य, पण् (मामुझ के₀)
पोह न पाम्य, जे कारण माटे (रेपाव के० ) हे पाप जीव! ( पमायं के० ) प्रमाइने ( मा
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             (किं कें) केंम
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    ) हे खजाए। एटले हे मूढ ! प्रमाद करीने
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             (गुरुड्सत्तायणं कें) महोटा डःखने रहेवाना नाजनरूप
                                                                                                                                                             ! माटे प्रमाद बोदीने परलोकनुं साधन करवामां सावधानथा. ॥ए०॥
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   हों होसे अयाण ॥ ए१॥
                                                                                                                                                                                                                        एज बातने मूल प्रथकार पए जएाचे छे के,
                                                                                                                                                                                                                                                                                                         रेजीव बुन्न मामु। त्र मा पमायं करोसि
                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     गरलाए गुरुडा कनायण
```

हरास के) न कराश. (अयाण के _b)

नावार्ध-हे झात्मन्। पर्म साथन कर्वाना थगरूप एटले मनुष्वनो नव, गुष्ट् अष्, जीव के) हे जीव ! (पुणरति हे) मरीने पए (एसा के) मा (सामजी के) धर्म सा-ने तें(ड्झहा के₀)डबने ने एटले फ्री फ्रीने यमै सामयो मलगी महा इझेन छे ॥एश। मोह न पास्य एटले सम्यक् प्रकारे जिनयमें धर्गीकार करच (जम्हा के) जे हेतु माटे नावार्थ-हे आत्मन्। तु अहटनावश्यी छर्नेनएवा मनुष्यन्तने पामीने तेमावली जैनथमे ड्यर्थ–(रे जीव के॰) हे जीव (तम के॰) तु (घुङ्सु के॰) धर्मने पिये बीय पाम्य छने (माज्ञास के०) धर्मने जाणीने (जिष्णमयामि के०) जिनदाासनने विषे (मामुझासि के०) गमाने घमनिविरे प्रमाद न करव. तेमठता जो प्रमाद करीवा, तो महा ड खने पामीवा ॥ए१॥ जम्हा पुणरावि एसा। सामग्गी इझहा जीव ॥एए॥ र् । विद्यस्ति होता । मासुत्रसि जिलामयमि नाकण ॥ होहिसि के) याप हे ? ॥ ए ।।

310 अने तेने विषे वीषेनुं फोरवबुं, ते फरी फरीने चक्रवेयनी पेते, मलबुं महा इलीन हे. (युए के) ब्ली नरकन कवण है. माटे (तं केंग) 000 (च केंग) ग्रमे (नरयड्स् केंग एटल प्रमाद (जिनयमें जे ते, (मलव भार्यत तं किये (तुमं के०)तुं((मुहेसी के) मुखनी बांग होहिसि के) सुख तन क्यायां मत्त्रों ? (ड़ाये करीने पण सहन (ज्तहों कें) महा ब्रनंन हे. यने (जिलायम्मो केंग) किन शक (य के०) बली इसहं च अर्थ-हे नीव!

नावार्थ-श्री आवश्यक निर्यक्तिमा कह्यु हे के, आलत्तथी साधु पासे जड़ने धर्मे सा-नही शकतो नथी तथा मोहयकी धरती जजातने विषे मूढ थहने रह्यों हे झर्थात साध पासे जह निस्य ग्रु साननषु हे⁹ ष्णीवार सानतेत्हें हे एम धारीने धर्म सानतवानी ख

कुव्यसन सेववाथी तथा रुपण्यपण्याथी एटले जो छपान्ने जङ्झ, तो कोष्ट्र पर्ममार्गनी टीपमा होकहाजयी काङ् थापतु पढ्ने तथा नयथी एटले जो छपान्ने जङ्झ, तो नरकादिकना वज्ञा करे हे तथा जात्यादिकता झिनिमानयी तथा क्रोषयी तथा प्रमादशी एटले मद्या।

एटते गीत नाटकाविकना ठदमा पढवाथी तथा रमणुषी एटते जनायरनी साथे मीडा क स्वायी इत्यादिक अनेक कारणीथी पामेलु एनु पण्ण मनुष्यपणु एने गमाये हे पटले जब समुच्यी तारनार अने सकत सुखने आपनार एवा जिनधर्मने करतो नथी अने ससा

त्यारे नरकना डसह ड ख तहाराथी केम सहन थग्ने? अने परलोकमा तहारी शी गति सुखनी याठा करें डे पण हें जीव! तु सामान्य ड ख पए। सहन करी शकतो नयी,

ड स सानतवा पडग्ने तथा शोकवी तथा श्रहानथी एटले नाइनय दोस्तदारना ना कहेवा-थी तथा व्याक्षेपथी एटले जाएी जोइने घणी जजात जनी करवाथी तथा कुत्रहातथी

सहायकारी एवा धर्म . एटल घणा महाटा लाज (विदप्द कें) जपाजीन यह शके हे, तो (ता कें) तहारे (। परवश एवा (देहेण के०) देहवडे पनाम प्रवस्त साहीयों के०) (जड़ केंं) जो (ज्याधरेण केंं)) एम गुरु महाराज उपदेश करे हे. ॥ए३॥ । अर्थात् सर्वे प्राप्त थयं. (निम्मतो के०) निर्मेल एवो. अने नावार्थ-हे जीव! आ अंशायता । पार्जन याय हे, तो झुं न परिपूर्ण थयुं? (परवसेषा के 0) देहें जरु विहण्पर् । एवा. अने ज्रथं-रे जीव!

5/5

凯 यदे, पुर कहेटाा चितामएी रत्न समान खेनवर्मने कोए। न बहुष्ण करे ' श्रर्थातु से महा होष तेज न बहुष्ण करे ॥१॥१॥ तथा पोताने रहेवान फुपडु छापीने चक्रानिनु राज्य कोए। न यहण करे १ छापीत तरवा तरवना रिपारनार तो तरतब यहण करे। तेरीज रीते या मलम्प्रादिके करीने परपूर एग मु परिपूर्णताच य मत्यो क्हेगय ? ग्रथीत् अगत्मा बेटजा लान क्हेवाय ठे, ते सर्गे लाभ मज़ी सूम्याज नहेगाय तेमज रोगादिकने छापीन एवा देहाडे जो स्यापीन एयो जिनपर्म गर्थ-तरा द्योने अतरवनो निवार करनार (बुविमान्) पुरप चे ते, काचना फरुठा मसे,तो गु एने फाइपए मज्ञानी खामी रही कहेवाय ? अर्थात् नज कहेवाय ते कह्यु ठे फे, संदे, अमूल्य एम चितामण काने कोण न महण करे? तथा धूल आणीने कोण न यहुष करे १ तथा पालीनो बिड खापीने द्यमुतना समुच्ने कोण न यहुष कसमा तम् गृड्डीयाचन्त्रातस्यतिगरम् ॥१॥ युग्पम् रचुना चेडितप्र नेत्युशान्ध्यनीराने डना ॥१॥ पूर्णण वाह माम्राज्ये दहेन युक्ता पहि ॥ िर नारत्नमनध्ये गेत्याप्यने का गानाये

एवी रीते विचारीने खा महामालिन एवा श्ररीर उपरथी मोह उतारीने, जेम बने तेम

मुलहं न हु हों तुनिविह्याएं॥ महणा करच. ॥ए४॥ गुन्द एवा थर्मने

5/ 5/

जियाण गुणावहववाज्जयाण

अर्थ-हे जीव! (तुज्ञविहवाएं के०) नुज्ञ विनव वालाने (जह के०) जेम (चिंताम-चिंतामणि रत्न जे ते (मुज़हं के॰) मुजन एवुं (न हु होइ के॰) नज होय. (गुणविह्यवाद्धियाणं के॰) गुण रूप वैन्नवे करीने रहित एवा (जियाण के॰) (धम्मर्घणंपि कें) धर्मरत्न जे ते प्रा, सुलन न होय. ॥ए ।॥ नावायं-तुच विनववाला जीवाने एटले

(तह के०)

ांचतामांखे रत्न सुखे पामवा जोग्य न होय, खर्थान् पुष्यहीन जीवो, जेम चिंतामािख पामी शके नहीं, तेम सम्यक्त्वादि गुणरूष विज्ञवे करीने रहित एवा प्राखियो. जन्ड पर्गुपाल जवा स्वल्प पुएषवाला प्रााणियान

राहत एवा

जे जपदेव कुमारनी पेवे पाता पुष्परूप गुणीए करीने नरेला गतिने विषे चितामिता रत्न समान सदमें प्रत्ये पामे हे ॥ए५॥ कथा ज गमेंह्प राजने पामी शहे नही होप, तेल प्राधियो, था मनुष्प

इहा पगुपाल खने जयदेवतु स्तात झा मीचे प्रमाणे

सस्तितपुर नगरो पिरे नागत नाम घठनी जनुपरा जापींनी कुरामा जस्पता यपुरी नगदर माने तुम हाग तेले पार गर्ने सूपी रतनी परीहाना व्यप्पान करवो त्यार पत्री ने बायमा अनुपारे पत्त म

माराखु रिरामिण एस वाणीमे बीजा मरिषेतिने प्रयार कृष गणीने तेत्र रितामिण एसने में मिरारा मारे मर नगरी शिरार कि प मर नगरी भिर्म एक एक यने गर पर मरी अमती खूबी परतु न रस्त नगीहि पण पान्यी नहीं स्वार कि प्रणान माता पितान रहेती खूरों के, महरक रित राजायणी रसने विषे छात्यु है मारे हु तसे अर्थे बी ते हेकाण जड़्य बारे माता पिताप कुछ है पुत्र ! बाती रिंग मस्त्यान है परतु परमार्थ यन्नी रिंताम-णी नयी हे कारण माटे हु पीतानी पुत्री ममाण् बीत्रों रस्तोपी व्यापार करण रिंदरी रीत पर रूप, पत्र णी नकी ने कारण महे दु पीतानी तुत्ती ममण्य तीर्ता स्लोगी व्यापार करण रूपनी रीत ग्रु गयु, गर्यु नक्दर निवामणी पामाना निश्न क्रीने इस्लिमायुग्यी नीक्सीने पणा पर्तेत, गर्पर, गाम, बाख, करमक,

एत् म्यांहि प्डो छरास मनगडो थइने पेताना पनमां विचार करम खाग्यो क, ग्रु। युद्ध डें डे मंद्रे क्यांक्षे पण देरानमां आगु नथी।' खयम शासमा व पत्तन, समुद्रतीर प्रना स्यानकाने गिप वे गितामणीने सोद्यतो सत्तो प्रणा काल नम्यो

o जि

002

ज्ञापणु फेरफार न हीय. माटे क्यांहि पए। हशे. एयो निश्रय करीने फरीने पए। घएी मिएनी खाएो जो-ी सतो ने रत्ननी घणी खोल करवा लाग्यी. त्यार पनी एक दहाड़ों कोइक छन्द्र पुरुपे तेने कर्णे के,

नड़! इहां एक माीनी खाए। डे. तेने विषे जे पुण्यवत माएती होय, ते चितामाती पामे. पड़ी जयदेव ते-गोल आकारवालो पथरो देखीने ते पयराने शाख्रमां कहेला लक्त्णोंये करीने चितामणी आर्णीन, ते जय-देवे ते पशुपालनी पासे माग्यो त्यारे पशुपाले कर्षुं तमारे आ पथरानुं भुं काम ने ! जयदेवे कर्सुं. हु महारि घेर जहने ठोकरांठने रमवा आपीता. पर्जा पशुपाले कर्सुं. इहां आवा घएा। पथरा पख्या ठें ते तमें पोतेज केम लेता नथी ! जपदेव वोल्पो. हमएां महारे घर जनानी जतावल के. माटे एज मने आप्य. हु इहाथी गा बचनथी त्यां जज्ने चितामएं। खोलगा लाग्यो. ते अवसरे त्यां एक मंद्विष्टिबाला पशुपालना हाथमा

 ए प्रकारे सांजलीने ते पशुपाल पोतानी बोकांडयोना समूहने लंहने गापना सन्मुख गयां. त्यार पर्वा ज-बीजो पामीश. एवी रीते कर्द्यं, तोपएा ते पशुपाले परने जपकार करवाना स्वन्नांव रहितपऐो कराने तेने न आप्यो पठी जयदेवे छपकार बुन्दिये करीने तने कहुँ. हे जादा! जो तुं मने नथी आपतो, तो तुं पोतज ए जगारेक हर्ताने जयदेने कर्षे छाहो! एम न विचारीये. त्रए छपवास करीने संध्या समये ए मिएने गुन्द पा-ग्रीथी पखालीने ग्रुष्ट भूमिये छंचे खानके खापन करींने चंदन, बरास, फुलादिक वडे पूजीने झने वली चितामणी रत्नमुं आराधन करच. जेथी आ चितामणी तने पण बांडित फल आपे. त्यारे पशुपाले मञ्ज नमस्कार करीने पठी एनी आगल जे पोताने इष्ट होय, ते चिल्वन करीए. ते सर्व पए। पातःकालमां पामी नो आ चिंतामणी साचे ठे, तो महार्ह चिंत्वन करेलुं बहु, बोरडोना फलार्न चूरणादिक शीघ आपो

o ए मेतर सरसार मोमले पाणक घड़, में वण हे मोण रोखतों नंबी नेन्जामा है पूर्व, रोप चन्तीन ने मोण रहेता एतो. छोरी जो हु हरारा पण खावतों नंबी, तो साबित खर्च निष्णव प्रत्यान रिपे ता-एरी भी सावारी! खबात तदार नाम रितामणी ए धाउँ ने कुड़ नंबी केम के में पास्मी राशि मोदी-गेन नियय करतो के, गुण रक्षित पता साना दायमा आ तिनामणी रच नहा रह पम रिपारीने ज यद्य गण ना पूर्व नान्यों हो पशुषाज्ञ मार्ग लिए याजना गता कहेरा साम्या के, ह मणी हमणा जा ने मरारा मनमी निका जनी नथी। ! पत्नी जे दुराष अन जाय विना फ्राए मात्र पछ रही न शह, न हु एम नगरमे रिगे एक राथमु देहर अमे तमा च्यार हाथना देन यने भो रेन प छमम करती पनी रू मधी। रंजी माम पख उट छे माडे माममा कांटक कथा करे मोक्तांक्यां रामि यसम इस्पादिक झातीने नदारी पूजा परीण पर्रारे पण म मनो होष को हुतन नदु नुमनित्य

तरारा माट रराग मोठ्या प्राप्त पण जपाती करीनन पराण पाषु ते पाटे हु एवं माञ्ज हु के, ज्यां ना किसे सन माराने मारे सराफ मानि करा बखाय ठ'त माट है त्यां जा क, ज्या कराने मन्ते देत्ता न क्टे एस रहीने गण में मीखने छे नाती होगा व ज्यांसरे अपदेश श्रानट पामीने तत्तात्व मपस्रार क रीने गानामणी ब्रह्म करीने, माण थमी छे मनारच वे जैनो पूरी नात्रे पोताना नगरन समुख पार्चर धन सनी मधामा करता खारीम पातामा माता पितान िए मिना मनानथी जन पर्णु व्रष्प माप्त थयु छे एरो न हुमार भुग्नेंद्र गठनी र नग्ती नामे युत्री तन परलीने वहु परिसार सहित हस्तिमापुर नगरे आष्या .. కూడాగాలినికి ఫోడ్ కేందానలు శాస్తు

नथी, तेम मिथ्यात्वरूप कुवासनाये करीने विवेकरूप चक्षेये रहित पएता जीवोने पण, जि-णुमयसंजोगो के)जिनमतनो संयोग जे ते. एटले जिनमतनीप्राप्ति(न होइके)न होय.॥ए६॥ नावार्थ-नेम जन्माराथी छांष यएला पुरुपोने, स्यूज पदार्थ पण देखवामां यावतो अर्थ-(जह के०) जेम (जबंधयाण के०) जन्माराष्ट्रीज ग्रंध एवा (जीवाणं के०) जीव लाग्यां. अने कुर्दनी लोको तेनु सन्मान करना लाग्यां. अने बीजा लोको पए तेनी स्तरमा करना लाग्या. पोते जावज्ञीय स्थी सुखी ययो. ए यकारे धर्मक्ष रत्ननी मासिने विषे पशुषाल अने जयदेवनो अपनय कर्षा. जे तेमने (विद्यसिनोगों के) द्यष्टनो संयोग जे ते. एटले आंखे करीने देखवुं (न होड़ के) नशासनरूप सूर्य दीवामां आवतो नथी. एटले जिनशासननी प्राप्ति थती नथी. ॥एष॥ न होय. (तह के0) तेम (मित्रंथजीवाएं के0) मिध्याले करीने आंथला एवा जीवीने। तह जिएमयसंजोगो। न होड़ मिनंधजीवाएँ ॥ए६॥ । न होड् जबंधयाण जीवाणं ॥ जह दिवीसंजोगो।

<u>*</u>:~ □ ~

ज् च पद्मस्कम ऽपात्तगण

क्रि के०) धनता ६०) प्रत्यक् प्रमाण ब तहावे हे स्प्रमाणधा

नावार्थ- या लोकने विषे यश, धाने परलोकने विषे स्वर्ग तथा मोक्तना सुख खाप 'मिम के॰) (ह के प) (तहवि केप) वेषे (कयावि केष्) क्यारे पख (म के ग) रमता एटले नथी जोडाता । ॥ए७॥ दायना ।

नवाव. विपे काइषण दोष न

नार एवा श्री जिनवर्मने अंगीकार नथी करता. ॥एउ॥

₹ 0 X

ঠেত

आर्थ—(मिन्ने के॰) मिथ्यात्वने विषे (पयडा के॰) प्रकट एवा (अएंतदोसा के॰) आ-नंत दोप जे ते (दिसिंति के॰) देखाय हे. (य के॰) वली. तेमां (गुणलेसोवि के॰) गुणनो लेश मात्र पण (न के॰) नयी (तहविय के॰) तोयपण (मोहंथा के॰) मोहे करीने आंधला एवा (जिया के॰) जीव जे ते (तं चेव के॰) ते मिथ्यात्वनेज (निसेवंति के॰) सेवे हे. ते (ही के॰) । प्यंडा दोसंति न विय गुणलेसो ॥ स् रह रह रह रह रह रह रहि सहिया निसेवंति ॥ एए ॥

नावार्थ-कुगुरु कुदेव आने कुथर्म तेमनो आंगीकार करवारूप अध्यवसायने विपे एटले ग्सा देखातो नथी. तोयप्सा मोहे करीने अंथ थएला जीवो, ते मिश्यात्वनोज आश्य करेंहे. विषे नरकपातादिक अनंत दोप प्रकट देखाय हे, पण तेमां गुणनोतो जवलेश

घ्लंन आश्वर्य है!!!॥ए०॥

ज्जा होइाट्य, औदार्थ तथा शार्थ धे-एउसे ने मिथ्यारानेस झगीकार करे ठे, परतु जिनधर्मने खगीकार नयी करता, ते पणुज वेषे कुग्रतम्पु घषुज बख्षाय हे एटले रत्नादिकती परीक्षाकरवामा घषा माह्या गमंहप रत्नमे विषे (जे केंग (দিবালিক) | रीते परीकृति (न जापाति के॰) नथी जायता क्सलम क०) क्रुशंत्रपणाने तदसज्ञयम्मरयाों के॰) सुखकारी अने सत्य एगा । वित्राणे तह यिने ने पुरुपोनु शिल्प मुचेस केंग्रे मुपाने। यान् । । । । ।) मानी र सुहसञ्चधम्मरयण (माए के 11111 (तह के०) क्रार पार्च

छ एवी जे धर्मनी कता नयी जाएी, तो ते निश्चे अपंतितज जाएवा. माटे सर्व परीक्रा ग्ह्युंडे के, बहोतेर कलामां कुशल एवा पंतित पुरुषो होय, तोपण जो तेमणे सर्व कलामां हहेवाय हे, ते पुरुषो सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्नेनी परीहा, जो न करी राक्या ो तेमना सघता महापणप्ताने अतिशे थिकार थाने!!धिकार थाने!!! ते उपर शास्त्रमां ग्रतां धर्मरूप रत्ननी परीका करवी, तेज श्रेष्ठ परीका हे. ॥एए॥

E0 2

। फलाएं दायगो इमो ॥१००॥ । अप्पुनो कप्पपायनो ॥ ॥ अनुसुष् रातम्. ॥ सम्गापव्यम्स्काण जेएधम्मो ऽयं त

अर्थ-(अयं के०) या (जिलायम्मो के०) जिनयमें जे ते (जीवालं के) जीवोने (अ-पुवो केण) अपूर्व एटले आप्रसिद्ध एवो (कप्पपायवो केष) कत्पवृक्त हे. केमके, (इमो केष)

ए जिनयमरूप कल्पवृक्ष जे ते(संगापवागसुरकाएं के०) स्वर्ग एटले देवलोक छाने खपव-

₹ D 3

```
एटले मोक् तेना सुखरूप (फ्लाएा के॰) फजने (बाङ्गो के॰) खापनारों है ॥१००॥
नावार्थ-आ जिनयमैरूप कल्पहुक्त खपूर्व हे एटले प्रसिद्ध कल्पनुक्त तो, फक था
कने विपे रहेता पुत्रालिक सुखनेज खापनार हे परस्था पर्मरूप कल्पनुक्तों, स्वर्गी-
                                                                                                                                     देक फज़ने तथा मोक फलने आपनार हे माटे छापूरी कत्परूष्ट कह्यों एव जाएतिने
                                                                                                                                                                                                                                                      <u>स</u>
                                                                                                                                                                                                                                 र र से में हैं हैं हैं सिनों ये परमो
                                                                                                                                                                                  ज झाश्रय करवो ॥१००॥
                                                                                                    लोकने नि
```

धम्मो परमसद्णा मुक्तमम्मप्यवाष

ध्यर्थ-रे जीव । (पम्मो के) था जिनयमें जे ते (तथु के) वधु (साई) समान हे 'य के) यदी (सुमिलो के) सारा मित्र समान हे (य के) वही (पम्मो के) यमें जे ते (परमो युरु के) छत्र्छा गुरु समान हे वही ते (प्रमो के) पर्म जे ते (मुख्तमणपञ्जाष निषे प्रवर्तेता प्रष्योने (परमसद्यो के०) उत्ह्या रथ समान हे ॥१०१॥

श्व तथा गुरु जेम असत्मार्गयी पाठो वाले ठे, तेम नावार्थ-जेम आपर् कालने विषे नाई सहायता करे हे, तेम संसारह्म आपर्का-हेतकारी अर्थने मेलवी आपवाथी सुख करे हे, तेम आ यर्मरूप मित्र पण मनोवांडित तित्र श्री समान हे.तथा रथे करीने जेम मार्गमां सुखे सुखे जवाय हे,तेम धर्मरूप रथे करीने 1 जनायी पातो वाले हे. माटे उत्कथा मार्गमां सुखे सुखे जइ शकाय हे.माटे थर्मने परम रथ समान कह्यो हे. एवुं जाणीने तमां, आ जिनधमी पण सहायता करे ठे, माटे जाई समान हे. तथा सारो चनगर्णतं बहानज। पालंत चवकाषाणं महानीमे आमयकमसम जिएवियण । आयाहतम्.॥ मुख मेलवी आपवाथी सुमित्र समान हे. करवां. ॥१ ण १॥ जिनधर्म पण, नरक तिथैचा। सेवसु र

RD

कुनमा मग्न या अयोत् रूडा अनुषानने ग्रहुण करण जेथी तने अपूर्व सुखरााति परो ॥१०२॥ झर्थे-(महानीमे के०) महा नयकर एवु (चठगड़्एातडहानल के₀) च्यार गतिमा रहे∙ ला एवा छनता ड लरूप महोटा श्रीमे रुरोने (पितजनवकाणणे के॰) सागतु प्व जे ससाररूप वन, तेने विषे (रजीव के०) हे जीव! (तुम के॰) तु (श्रमियकुनसम के॰) अभु नावार्थ-था ससारक्ष्प न्नयकर दावातक्षपी दाफेलो एवी जे तु, ते जिनाचनक्ष्प झमुताना तना कुफ समान (जिखनयख के०) जिनराजना नचनने (सेवसु के०) सेवन करच सेवातमा कहेला अनुषानने विचि सहित अगीकार करच ॥१०१॥

झुर्य-(जीव केº) हे जीव ! (विसमे के॰) विषम एटले चालनारने ड खकारी एवा सिवसहद् ॥१०३॥ अणतडहिंगिम्हतावसतते। । सरस् तुम जीव जाएधम्मकत्परुख । विसमे नवमहदेसे

(अणतडहगिम्हतावसतने केंग) थनता इ खरूप शीष्मक्त्ना तापवडे सारी पेठे त-

ב ס ~ O सं 2 (सिवसहदं केंं) मोक स्विने ! संसारनां अनेक डःखरूप मारवाड देशनी तपेली रेती, तेमां ोने महोटा नाग्ये प्राप्त थयेतो जिनधर्मारूप करपश्क, तेज आश्रय जीव जाते IIRa VII घुणुं कहें करीने शुं! तेप्रकारे (जिन्ने के०) सकत बांडित सुखनी सिंदि थाय. ॥१ ० ३॥ मासय गण टीकाकारे कल्पवृत्तुं स्मरण करच. जिनधमेरूप करप्त हाने ोता एवा (नवमरुदेसे के॰) संसाररूप मारवाड देशने विषे नम लहर जिन (जह के०) जड्यमं के । यत करवो. ाक बहुता के०) जिएएममकप्परुक्तं केंग) 1150211 योग्य हे. के. जेथी वेचारवा योग्य हे.) आश्रय करब. ग्रापनार एवा

खा

व

ት፠ኯ፟ጜ፠፠ቝጜ፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠፠**፠**፠፠፠፠፠፠

के॰) मयानक एम (नबोदर्षि के॰) ससाररूप समुच्ने (सहु के॰) शोष्रपणे (नारंप के॰) तरीने (ज्यणतसुद्द के॰) खनतु हे सुख नेजेने चिपे एतु (सासय गण के॰) शाग्यतु स्थान एटले मोक् तेने (नदृह हे॰) पामे ॥१०॥॥ नावार्य-हे नब्य जीयो । आखा प्रयत्नो सारमा सार एटलोज कहेवानो ठे के, जि नयमेने विषे प्रमाद रहितप्रो प्रयत्न करो के, जेपी तमने मोझ्त शायतु सुख प्राप्त थाय ते सुखतु गर्धन थड़ शके तेम नधी तेम उत्ता जो तेना स्वरूपने जाणवानी मरजी होय मुह्म भी आचारागजी मूत्रमा पाचमा लोकसार नामा अध्ययनमा जोइ लेज्यो ॥१ ग्धा त्या घथना ५० मा तथा ६० मा पानानी पुठिमा जषाच्यु ठे के, सागरोपम-नु तथा पुजलपरावर्तनु स्वरूप यथने अते जणावीयु, ते इहा जणावीष् शिष् (१ष ७ ४ ० २ १६) एक कोड सडसवलाख शिनोतेरह्नार बरोंने सील खाबनीये, एक र् थाय ठे. तेवा त्रीश मुहुने एक अहोरात्रीरूप दिवस थाय ठे. तेवा पंदर छहोरात्रीये एक प- किंगा खवाडियुं याय ठे. तेवा वे पखवाडिये एक महिनो थाय ठे. तेवा वार महिने एक वर्ष थाय किं पम. तेमां बत्ती एकेकना बादर अने मुक्ष्म एवा वे वे जेद हो. तेमांना अन्दा पल्योपमहें,स्वरूप जापावीए डीए. केम के, आ बादर अन्दा पल्योपमे करीनेज जीयोनां आछातां, कायिश्यिति, कर्मीस्थाति, पुरत्तिस्थिति आदिकहे पमाए। गए।प हे माटे. ते अन्दा पल्योपमना पए। मूक्ष्म अने बादर एवा वे जेद हे. तेमां मथम कालचक्र थाय. एवा अनंता कालचंक्रे एक पुजलपरावने थाय.॥इतिपुजलपरावनेप्रमाणाम्.॥ देवकुर उत्तरकुर देत्रमां जन्मेलां जुगलियाना बाल ते एवा के, ने जुगलने जन्मे एक बे यावत् सात ंश्ह्यं पत्योपम जए मकारना हे. ते कहे हे. १ जन्दार पत्योपम. १ अन्दा पत्योपम. ३ देत्र पत्यो-कोडाकोडि सागरोपमे, आवसिष्या याय. ए वे मलीने वीश कोडाकोडि सागरोपमे, एक ठे. तेवा आसंख्याता कोडाकोडि वर्षे एक अपत्योपम थाय हे. तेवा दश कोडाकोडि पत्योपमे एज रीते एटले पूर्वे कह्या तेवा दश कोडाकोडि सागरीपमे, छत्सिप्पिषी झने वीजा दश एक अञ्चा सागरोपम थाय, ॥इति सागरोपम प्रमाणम्.॥ बाद्र अन्दा पन्योपमनुं स्नक्ष कहीष् ठीष्.

या मनोपी, ते फूटा नांबी टांबीने नांबि चड़ी तेसावी युर्वनी पेठे एके ही वादानी कफड़ों सी सा वर्ष कादी-ए पड़ी उपारें ते कुनो काम दाद्दी याग, त्यारें एक सूक्ष अन्धा क्रमायम याग तेना आसरपाता कोडा कीडि वर्ष याप नेवा दय कोडा कोड़ सागरोप्से एक अन्ता सामदीस्य याप एमी रीतना सागरीस्पनु म पून मह्या एवा सुगोलयाना एकेका वालाग्रना, असर्याता एक कल्पम ते वालाग्रना खने करी पूर्ने क दिवस पगा होप, नेरा छालियाना केष (गाटा) टोटने तेना एया करडा करमा के, से ककडानो बीजो क क्टो श्रृङ क्रोड नदी तेम सालाग्रने च्यार गाउनो लांगे, च्यार गाउनो पढ़ालो अने च्यार गाउना ऊषो गाए। छत्तरी कके नहीं, तथा पायरे करी हे वाजाय छडी घके नहीं प्वा ठांशी ठावीने जरना होय, प्ठी त वानायनो एन को कतडो सो सो वर्षे काडीए हे काडता काढता ज्वार ते कूया तमाम खात्ती थाय, त्यारे एक अधा यादर परमाग्न याप सेनो सरयातो बादाकाहि वप याप आ हारोत कथन मात्र छे नेप क, या मताए गएतीमां यावतु नयी गएप्रीयां ता सूत्रम उपद्या परपोपम छाते छे तेतु सप्त्य निचे कहीएडाए र्ग कूरामा ते बालागने प्वा टांबीटांशीने प्रतीये थे, तेना छपर थइने नकरांतिनु सैन्य चाले, वो पण ने एटले तेनी अक् विस्तार थी अनुयोगचार सूत्र तथा पाचवा कर्षे प्रथमां रालाग्र हाली शक्ते नही तथा अधिये बली शक्ते नहीं, तथा पालीए करी नींजाय नहीं आ वार्तानो मिशेष जोह लेख त्यायी विस्तातना आर्थिय माए या नम्पाप् नावारु

医妆装点 杂水混乱 液水华尔片 水水水油外水水水油溶水气浆 二分分分批分分量分分类

802

र्व

प्रबन्यिचन्तामार्गा, यमीविन्ड। श्रीहारिनञ्छिकसंबपद्धाः ॥

नापान्तरेषानियुता यतः स्युः । सीर्यं प्रनावो मिष् संघर्ष्टेः ॥ १ ॥

॥ अनुष्त रनम् ॥

वियाभ्यासवतां तुष्ट्री। कचरा गोपाल भेषिना॥ १॥ मन्मयात्रिमतो यावान् । अस्वायां लिखितो निजि।।

6 ॥ इति थी जैनीय यथ्यापक, शास्त्री रामचंद्र दीनानाय विरिचत 9 थी वेराम्यज्ञतकनो हमानम मन्द्र

0

॥ श्री जैन बोल विचार.॥ बोल र जो

र आसमा॥ र समय॥ (डींगमा डींगे काल)॥ र प्रदेश॥ (जैनो विनाम नथी थतो)

परमाणु (नेनापी वीजी कोड़ पण फेली यस्तु नपी,) १ सिन्धिता॥ १ झसयम॥

बोल १ जो

र राग, ने १ द्वेष ॥ १ सापेद्र, ने १ निरपेक्ष ॥ १ निषे, ने १ ज्यवहार ॥ १सि-इना जीय, ने १ सतारी जीव ॥ १ पर्यांता, ने १ छाष्यांता ॥१ प्रत्येक, ने १ साथारणा॥ नव, ने १ पदा ॥ १ लोक, ने १ खालोक ॥ १ इन्य, ने १ नाव ॥ १ उत्सर्ग ने १ अ

पवाद ॥ १ जीवराधि, ने १ द्याचीराधि ॥ १ व्येतानर, ने १ दिगवर ॥ १ सूक्ष्म, ने १ गवर ॥ १ त्रस ने १ थावर ॥ १ उस्तिष्यिषी, ने १ द्यावसर्षिषी ॥ १ सङ्घी, ने १ द्या

बादर ॥ १ जस ने २ थावर ॥ १ जस्तिष्पिति, ने

ित्म, श पुरुष जिंग, ने च नयुंसक जिंग ॥ त्रण दृष्टि. १ समिकित दृष्टि, श मिथ्या दृष्टि, ने मिश्य दृष्टि, ने जन्म के कार्य के क १ मतिअज्ञान, १श्रुत अज्ञान, ने रिविनंग ज्ञान ॥ त्रण प्रकारना आहार. रिवेज आहार, त्रण गुप्ति. १ मन गुप्ति, १ वचन गुप्ति, ने १ काय गुप्ति॥ १ त्रण इंन. १ मन इंन, ने शृक्षपद्दी जीव ॥ १ शाश्वत, ने आशाश्वत ॥ १ आरंन, ने परिश्वत् ॥ १ अर्थदंम, ने श अनर्थदंम ॥ १ काविक सूत्र, ने श उत्कालिक सूत्र ॥ १ सरामी संयम, ने श वीतरा गी संयम ॥ १ वदास्य, ने २ केवली ॥ १ परित संसारी, ने २ खनंत संसारी ॥ १ सु-लनबोधि जीव, ने २ डलनबोधि जीव ॥ १ देश विरति धमे, ने २ सर्व विरति धर्म ॥ श बचन इंम, ने ह काय इंम ॥ जाए तत्व. १ देव तत्व, श गुरु तत्व, ने ह धर्म तत्व ॥ त्रए शत्य. १ माया शत्य, १ नियाए शत्य, ने १ मिथ्यादर्शन शत्य। त्रण लिंग. १ स्त्री (शिक्त.) १ हकार, १ मकार, ने १ थिकार ॥ जा आज्ञान, संज्ञी॥ १ बाह्य तप, ने १ आभ्यंतर तप॥ १ सामान्य,ने १ विशेष॥ १ कृष्णपत्नी जीव, बोल ३ जां. ३ जपादेय ॥ त्रण दंम. (

है। य लोम आहार, ने ३ कवल आहार ॥ जण प्रकारना आरमा १ अतरारमा, १ वहीरारमा, १ १ ने ३ परमारमा ॥ जण गारव १ कविनारा, १ रसगारव, ने २ झालागारव ॥ जण विरा-र महारता वैराग्य १ ड स्थालक, र नह नार । १ ने ३ उत्कट ॥ समक्ति पुरुषना त्रण जिग १ सिद्धात सानलवानी द्यातिशे खिनिलापा, १ ने ३ उत्कट ॥ समक्ति पुरुषना त्रण जिग १ सिद्धात सानलवानी द्यातिशे खिनिलापा, र महुचचन ॥ त्रण दर्शन १ समकित दर्शन, १ मिष्या दर्शन, ने ३ मित्र दर्शन ॥ त्रण मनोरथ १ क्योरे हु आप्ल परियहने ठाडीश १ क्यारे हु छाणगर पड्झा छाने ३ क्योरे क्षु छात्तोंची निदी पनित मर्रो मरीश ॥ त्रण लोक १ कर्ष्यं बोक, १ छायो लोक, ने | है तिज्ञों बोक॥ त्रण प्रकारना जड १ क्जुनड, १ वफजड, ने १ क्जुप्राज्ञ ॥ त्रण लोक |१ स्वर्ग, १ सुख, ने १ पाताल ॥ १ घुन्य १ गुण, ने १ पर्याय ॥ त्रण प्रकारना नन्य है। निकटनन्व, र मध्यत्रव्य, ने र छन्न्य ॥ त्राग प्रकारना नीत । नवानिनवी, र पु जानदी, ने र आत्मानदी ॥ त्रण विकलें ि १ वेइच्हि, १ तेइच्हि, ने र चेत्रि ॥ त्रण प्रकारना वैराग्य १ ड ख गर्नित, १ मोह गर्नित, ने २ ज्ञान गर्नित ॥ १ जवन्य, १ मध्यम, १ नन्य, य धानन्य, ने व नीतन्य नी अनन्य ॥ प्रण ययन १ एकायन, य दि ग्यन, ने

श तिथैच, र मनुष्य, ने ध देवता॥ ज्यार ध्यान. १ आनी ध्यान, श रोष्ट्र ध्यान, र धर्मे ध्यान, ने ध मनुष्य, ने ध मुश्रक्षेत्र, र सग्वेद, र सज्वेद, र सामवेद, ने ध मुश्रविष् पुरुपोनी वैयावृत्य करवामां सावधान॥ तिथैच पंचेष्टिना त्रण नेद. र जलचर, यतचर, ने १ चारित्र धर्म (बत पचस्काए करवा) नी झतिशे झिनिलापा, ने १ देव गुरु प्रमुख उत्तम | प्रमाण, र अनुमान प्रमाण, र उपमा प्रमाण,ने ४ आगम प्रमाण ॥ च्यार गति. १ नरक नुयोग, १ इञ्यानुयोग, १ धर्मकथानुयोग, ने ४ गीएतानुयोग ॥ ज्यार प्रमाए। १ प्रत्यक् वेद ॥ ज्यार प्रकारनी बुद्धि. १ जत्पातकी, १ विनयकी, १ कार्मेणकी, ने ४ परिणामकी ॥ असत्य नापा, र मिश्र नापा, ने ४ व्यवहार नापा॥ च्यार छानुयोग. १ चरण करणा-र खेचर ॥ मनुष्यना त्राए नेद. १ कमे नूमिना, १ अकमे नूमिना, ने १ अंतरद्वीपना॥ ज्यार कपाय. १ क्रोध, १ मान, १ माया, ने ४ लोन॥ज्यार नाषा. १ सत्य नाषा, गोल ध थो.

ज्यार प्रकारनी स्त्रीयो. १ पद्माणी, १ हंसाणी, १ चित्राणी,ने ४ शंखणी ॥ ज्यार तीर्थे. १ साधु, य साध्वी, र आवक, ने ध आविका ॥ च्यार प्रकारनी क्या. १ आकृषिणी, शविकृषिणी,

व निवेदिनी, ने ध सवेदिनी ॥ ज्यार प्रकारत आदन १ तीयकर आदन, १ गुरु आदन, 🐚 । नारकीमा जीगने महोनेदमा, ने छारप निर्ज्जारा जाणायी भ साधुने महावेतमा, ने महा निर्ज्जार महाजेदमा, ने महा निर्ज्जार महाजेदमारनी पेठे, बहेबताने छात्य वेदमा,ने छात्त निर्ज्जार, ने धर्मेलेदगी करणे लिकसूर कसाड॥ च्यार प्रत्येक बुद १ करकनु, २ डम्मुह, ३ निमे, ने धनिमाड ॥ च्यार प्रकारनो धर्म १ झाचार धर्म, २ दया धर्म, ३ किया धर्म, ने ध बस्तु धर्म ॥ धर्मना च्यार े ज्यार निक्केषा १ नाम, २ स्थापना, ३ व्हन्य, ने ध नाव॥ ज्यार श्रमात १ याषी १ प्राह्मण, १ विक्रम, ३ वेश्य, ने ध शृच्च॥ ज्यार प्रकारनी चतुरमी सेना १ राषी, १ षोडा, ३ रथ, १ से ध प्रवेशक । ज्यार जातिना पुरुषी १ वमीने व्यया, ते नरतेथ्यर १ वमीने श्रायमा,ते ्री कारण १ वान, य बीख, र तप ने ध नातना ॥ १ ख्व्य, य क्षेत्र, र काल, ने ध नात वेमानिक ॥ न्यार प्रकारना आहार १ अश्न, १ पान, २ स्वादिम, ने ध स्पादिम॥ प्राधान चमवनी र आयमीने छम्पा, ने हिस्किशी छा। गार ने ध छा। पमीने छा। पमा, ने का ३ स्वामी श्रवन,ने ध जीव छादन ॥ च्यार विकथा १ खी कथा, १ प्रक्त कथा,२ देश कथा, ने धराज कथा।। न्यार जातिना देवता १ नवनपति, ४ पाष्टयतर, ३ जोतिपी, ने ध

ग्रारंनमां वर्ततोथको. १ महापरिश्रहमां व० १ पंचेष्ट्यजीवोनो वथ करतोथको,ने ४ मां-मकारे जीव मनुष्यायु बांधे. १ जङ्क प्रकतिये वर्नतो, १ विनित प्रकृतिये वण ३ दयासिहि-गसुदेव ॥ मनुष्यनी चार आवस्था. १ मनीवस्था, १ बाल्यावस्था, ३ थीवनावस्था,ने ४छ-आहार करतो थको।। ज्यार प्रकारे जीव तियैचायु बांधे. १ अल्प माया करवाथी, भ शूर पुरुष १ कमा शूर आरिहत, १ तप शूर आषागार, ३ दान शूर वेश्रमण,ने ४ युष्ठ शूर साध्वी) र नागिल आवक, ने ४ सर्वेश्री आविका ॥ ४ दर्शन, १ चक्षु दर्शन, १ झचक्ष वेशेष माया करवाथी, र अलीक वोलवाथी, ने ४ क्डां तोल कूडां माप करवाथी.॥ ज्यार ात्वनो यद्यार्थ रीते झुभ्यात तथा विचार करवो, १ याचार्य, जपाध्याय, ने साधु आदिक ग्रोदमे गुणवाणे महानिर्द्धारा, ने खल्प वेदना. ॥ च्यार प्रकारे जीव नरकायु बांधे ॥ १ महा १ देश संयममां वर्तवे करा, २ बाल तपे करी, ने ४ अकाम निर्जाराए करी ॥ ज्यार प्रकारना ्हावस्या ॥ ध आंतिम(बेह्नो)चतुर्विय संघ. १ श्री इःप्रसह आचार्य, १ फल्मुश्री आयों, ; ३ खबधि दर्शन, ने ४ केवल दर्शन ॥ ज्यार प्रकारनी सदत्वणा. १ जीवादिक नव तपणे व० ने ४ मत्तर राहितपषो व० ॥ चार प्रकारे जीव देवायु बांधे. १ सराग संयमे करी,

हैं नी सेवा करवी, ३ समकितथी पडेला एवा जे पासहादिक, तेमनो सग करवी नहीं, में विश्व करवी, १ प्रकृति हैं । ॥ अयुर तरना च्यार लेव १ प्रकृति हैं । वर्ष, २ स्थितिवयाइष्टि) नो सग करवो नहीं ॥ ॥ व्यय तरना च्यार लेव १ प्रकृति हैं । वर्ष, २ स्थितिवय, २ अनुनाग वर्ष, ने ॥ प्रदेश वर्ष। मोह्स तरवना च्यार लेव १ ह्यान, १ १ दर्शन, ३ पानि १ व तर्ष। पुष्प पाप द्यात्री चोलगी १ पुष्पानुवधी पुष्प, २ पान् १ पान्नमी पाप, ने ॥ पापानुवधी पुष्प ॥ देवताने चालवानी च्यार प्रहे । पान्नमी पाप, ने ॥ पापानुवधी पुष्प ॥ देवताने चालवानी च्यार प्रहे ।

पाच इंडियो १ स्रोत इंडि, १ चक्ष इंडि, १ माण इंडि, १ रस इंडि, ने ५ एक्षे इंडि॥ पाच जाति १ एफ्रेंडि, १ वेइडि, १ तेइडि, १ मार्सहोने ५ पचेडि॥ पाच समवाय १ काल, १ राजाव,नियत(जावी,)४ पूर्कत, ने ५ छद्यम॥ पाच प्रकारना शरीर १ झो १ तहेर, १ तेनिय, १ साहेर १ जिसस्ते ५ एक्षिण॥ पाच प्रमाद १ मद,१विषय, ३ कपाय,

ति॰ ध मेथुन वि॰ ने ए परिग्रह वि॰ ॥ पाच अनुनर विमान रविजय,श्विजयत, रैजयत, । ध निद्धा,ने प्विकथा ॥ पाच महाबत १ प्राखातिपात विरमण, १मुपाबाद विष् रुश्रदतादान

जन्म, र बाह्म, व कवता, न र निवास ॥ पाच र्यावरना गात्रा र प्रत्वाकाय, र आप्काय, हिर् र तेनकाय, ध बायुकाय, ने ए बनस्पतिकाय ॥ हत्वे तेनां नाम कहे हे. १ इंडियाबर काय, र ि 🛭 8 अपराजित, ने ५ सर्वार्थिस्ड ॥ पांच चारित्र. १ सामायिक चारित्र, १ हेदोपस्थापनीय जजन सिंवाण पारिठावणिया समिति॥ पांच खाचारः १ ज्ञान खाचार, १ दर्शन झा-१ वक्रा, र कुगील, ध निमैप, ने ए स्नातक ॥ तीपैकरनां पांच कल्यापाक. १ च्यवन, १ जन्म, ३ दीहा, ४ केवल, ने ५ निर्वाण ॥ पांच स्थावरनां गोत्रः १ ष्टर्वाकाय, १ ड्याप्काय, समिति, ३ एपणा समिति, ध आटानमन नंन निक्रमना समिति,ने ५ छन्।र पासवण ख़े-क्षीचार, र चारित्र झाचार, ध तर झाचार, ५ ने वीचे आचार॥ पांच निर्धेष, १ प्राक्त. १११ | क्षे चाण्ड्यिस्हिरिविद्यादिक चाण्य स्दमसंपराय चाण्ने प्ययास्यात चारित्र ॥ पांच प्रकार्त्ता | क्षेत्र । क्षेत्र ॥ पांच प्रकार्त्ता । क्षेत्र ॥ पांच प्राप्त । मिन र नियुंकि, ३ नाप्य, ४ चूर्णी, ने ५ टीका ॥ पांच समकित. १ जपशम समकित, शहर-हेव. १ जियिय ख्टबेहेव, १ नरहेव, १ थमेहेव, ८ हेवायिहेव, ने ५ जावहेव ॥ पांच झान. १ मित ज्ञान, १ अत ज्ञान, १ अविध ज्ञान, ४ मनःपर्वज्ञान,ने ५ केवलज्ञान ॥ पंचार्गा. १ स्त्र, गेपश्म सण ३ क्रायिक सण ४ सास्वादान सण ने ५ वेदक सण ॥ पांच प्रकारना विषय. र शब्द, श रूप, श रस, ध गंध, ने ए स्पर्श ॥ पांच समिति. १ इयां समिति, श नापा

। स्पीयापर काय, ध सुमति थावर काय, ने ए पयावश थावर काय ॥ दान १ अन्य, १ सुपात्र, १ अनुरुषा, ४ छिषत, ने ५ कीनि॥ पाच प्रकारना पात-ग्राम-गीतरागना पचनमा सरेट, १ काङ्गा-जिनमत विना बीजा मतनी वाठा क सुखनी ऋजितापा राखबो, ३ निवद एटजे यकारना जोतियी टेवो १ चच, १ सूर्ष, १ यह, ४ नक्षत्र, ने ५ तारा ॥ पाच प्रकारना हा १ पासहो, १ डंसझो, ३ कुर्गोलियो, ४ ससतो, ने ५ छहरहो ॥ पाच प्रकारना डप गवबु तथा र्रिड थाय तेम कर्नु, ३ तीथैनी सेना कर्मी, ७ जिनधमेने विषे हहता राखनं ३ गिचिकत्ता-धर्मना फजने गिषे सदेह करवो, ध झन्यतिर्थिनी प्रतशा, ने ५ १ न्यतीर्थिनो परिचय ॥ पाच चूरण १ जिनमागीने विषे छुशल होष, १ जिनशासनने |वनय वयारुष्य करवा ॥ पाच लक्ष्ण १ उपशम पे ए पांच गर्नेन तिथेच, छाने ८ गा पाच समूर्डिम तिथेच पर्वाझ्य, एम दश नेद । पाच आतिमा तिथैच १ जजबर, १ स्थलचर, १ खेचर, ४ छर एटल माझना ने ५ देन गुरु तथा सिद्धातनो । न्यार कपायनु टालारु, १ सारम् । बनीयावर काय, १ X1 44 44 48 14 " 3" 7.5

सतारमा ड खथा वटास रहेतु, ४ थनुकपा एटले जीवने ड खयी निवारण करवानी इ

·*

| जा, ने ए आस्तिक्य एटले वीतरागना वचन जपर हढ आस्या राखवी॥

 अावश्यक. १ सामायिक, १ च्छविसञ्जो, १ वंदना, ४ पिडिक्रमणुं, ५ काछस्त-मा, ने ६ पञ्चत्काए। ॥ ठ संघयए। १ वज्ञक्यननाराच, १ क्ष्यननाराच, २ नाराच,

काय, ए पुजाति काय, ने ६ अन्ता समय काल ॥ ६ नापा. १ मागधी नाषा, १ प्रा-कृत नापा, र संस्कत नाषा, ध शौरशेनी नापा, ए पैशाची नाषा, ने ६ अपन्नंश नाया॥

खमा, र सुखमा, र सुखम डःखमा, ४ डःखम सुखमा, ए डःखमा, ने ६ डःखम डःख-

मा॥ उड्ट्य. १ धर्मासिकाय, १ झधर्मासित काय, १ झाकाशास्ति काय, ४ जीवास्ति

र इंड्यि पण ध श्वासोन्नास पण ए नापा पण ने ६ मनःपर्याप्ति॥ व ज्याराः १ सुखम सु-

य, ए बनस्पतिकाय, ने ६ जसकाय ॥ उ संस्थान. १ समचतुरस्र, १ न्ययांध पारंमिर्गल, र सादि, ध कुब्ज, ए वामन, ने ६ हुं फक ॥ उ पर्याप्ति. १ आहार पर्याप्ति, १ शरीर पण

अर्थनाराच, ए कीलिका, ने ६ वेबर्डु ॥ व लेश्या. १ कप्पा, १ नील, १ कापांत,

B तेजो ए पद्म, ने ६ गुक्क ॥ व काय. १ पृथ्वीकाय, १ अप्काय, तेजकाय, B

्र । जीर देया पालवा माटे, ने ६ जात सलेपणाये श्रीर ठाढवा माटे ॥ पद्कारक १ क- । १ जीर देया पालवा माटे, ने ६ जायार ॥ ठ फारना दिंग हैं नो, २ कार्य (कमें), ३ कारण, ४ सम्प्रवान, ५ ज्ञपादान, ३ पूर्व विशिष्ण, भ पश्चमाविश्वाण, ५ जनर हैं जावार १ ज्या समिकत, प्रमेकत, १ जनर हैं हैं होए। ३ द विश्वण विश्वण ।। समिकतभी ठ प्रकारनी जावान। १ ज्या समिकित, प्रमेक्त मिटिंग हैं इस समिकित प्रमेक्त मिटिंग। इस समिकित, प्रमेक्त मिटिंग। इस समिकित, प्रमेक्त मिटिंग। इस सामिकित, प्रमेश सामिकत, प्रमेश सिवि ठे ॥ ठ प्रकारना स्थान १ जीर ठेवा, हैं जान एटले पात्र ठे, ने ६ व्या समिकित, ध्रमेश सिवि ठे ॥ ठ प्रकारना स्थान १ जीर ठेवा, हैं | हा माटे, ने ६ गुन ध्यान करवा माटे ॥ साधु ठ कारखे आहार न करे १ ज्यराविक रोग खावे, र मारापने छपसर्ग रूप कारखे, र जलवर्ष राखवा माटे, ध तप करवा माटे, आवकना व खागार १ राजाने कारणे, १ ज्ञाति खादिकने कारणे, १ वजवत चोर तथा | स्तेडादिकने कारणे, ४ देवताने कारणे, ५ छटचीने विषे ज्ञाजीविकाने कारणे, ने ६ माता | िषताने कारखे ॥ साधु उ कारखे छाहार करे १ क्षुयानी वेदनाये, १ छाचावांविकनी चे वावच करवाने छाँथे, ३ इर्यासमिति शोषवा माटे, ४ सवम पानवा माटे, ५ जीवितब्प र

ठय, ए स्याद् अस्ति अवक्तव्य, ६ स्याद् नास्ति अवक्तव्य, ने ७ स्याद् अस्तिनास्ति युग-स्मात् नय, ए अजीव नय, ६ मर्गा नय, ने ७ पूजारुगधा नय ॥ सात नरकनां नाम. करेलां आरिहंतनां चैत्य तेमने वे हाथ जोडी वंदन करवुं नहीं, १ पूर्वे कह्या तेमने नमस्कार करवो नहीं, १ तेमनी साथे बोलाब्या विना बोलवुं नहीं, ४ तेमनी साथे यारंवार बोलवुं नहीं, ५ तेमने अरानपानादि धर्मे बुद्धिए आपवुंनहीं,ने इतेमने गंध पुष्पादि मोकलवां नहीं। सप्त नंगी. १ स्याद् आसित, १ स्याद् नास्ति, १ स्याद् अस्ति नास्ति, ४ स्याद् अयक्त-पत् अवसन्य ॥ सात नय. १ आतोक नय, १ परतोक नय, १ आदान नय, ४ झक-ोत्र. १ रत्नप्रता, १ शर्कराप्रता, १ वासुकाप्रता, ४ पंकप्रता, ५ ध्मप्रता, ६ तमःप्रता, , बमा, य बंशा, र सेला. ४ अंजाए।, ५ रिठा, ६ मघा, ने ७ माघवती ॥ तेनां सात श ने जीव नित्य हे, श ने जीव कर्मनो कर्ना हे, ध ने जीव पोताना करेतां कर्म प्रत्ये नोग वे, ए ते जीवने मोक्त हे, ने ६ ने जीवने मोक्तनो छपाय एटले कर्म रहित यवानुं हुई सायन हे ॥ उ प्रकारनी जतना. अन्यतीर्थि, अन्यतीर्थिना देव, अने अन्यतीर्थिए गृहण बाल प्रमाः

ने ७ तमस्तम प्रता॥ सात व्यसन १ जुवारु, १ मास, १ मदिस, ४ पेवयानो सग, ५

तमुद्यात, १ फपाय०, ३ मराधातिक०, ४ घेत्रिय०, ५ तेजस०, ६ झाहारक०, ने

स्नहुना नयथी, अने, ग्रुलाडिकनी

केवक्षी समुच्यात ॥ झायुष्य घटवाना सात प्रकार ग़स्तादिकना यातथी, ३ झत्यत थाहार करवाथी,

1

तमनिरुढ, ने ७ एवजूत ॥ सात समुद्धात ॥ १

ज्ञान सिद्धि १ ज्योतामा सिद्धि, २ महिमा सिद्धि, ३ जिपमा सिद्धि, ४ गरिमा

बोल 🛭 मो

५ परावातयी, ६ सर्वादिकना स्पर्शेषी, ने ७ म्वासोझास रुघवापी ॥

यात मद र जाति मद, य कुन मद, य जला मद, ध रूप मद, प्रत मद, ६ श्रुत मद

आव कर्म १ ज्ञानावरत्ति

उ लान मद, ने ए ज्ञेश्वर्थ मद् ॥

मोहनी, प थाय

ष नाम, ७ गोत्र, ने ८ जताप कर्म

सिंह, ५ ग्राप्ति सिंदि, ६ ग्राकाम्य सिंदि, ७ ईशिरा सिंदि, ने ०

H S II

र नेगम, र संशह, र ब्य

महोटी जीवहिसा, द बोरी, ने ७ परसी सेवन ॥ सात नय

बहार, ध कंजुस्त्र, ५ गन्द, ६ ।

धारे वेज्ञ बनाय, शियाल सुत पिए। सिंह न होवे, शियालपणु निव जाय ॥ मूण केण ॥॥ ते माटे मूरत्वयी द्यालगा, रहे ते सुत्वीया याय, जत्वर नूमि बीज न होवे, उलहुं बीज चर्चित यंग करींज, गर्धेय गाय न थाय ॥ मू० केण ह ॥ सिंह चरम कोइ शियाल सुतने, ते जाय ॥ मूण केण ए ॥ समिकतायारी संग करीजे, जब जय जीति मिटाय; मयाविजय आप्रे तुरत फराय ॥ मू० के० ए ॥ काम कंठमां मुक्ताफलनी, माला ते न धराय; चंदन

सद्गुरु सेवायी, बोधिबीज सुख पाय ॥ मू० के० ए ॥ इति श्री सद्भाय संपूर्णम् ॥





